

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1995

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1995

Contents

28 February 1995 Vol. 8 No. 1

31 March 1995 Vol. 8 No. 2

31 May 1995 Vol. 8 No. 3

30 June 1995 Vol. 8 No. 4

31 August 1995 Vol. 8 No. 5

30 September 1995 Vol. 8 No. 6

30 November 1995 Vol. 8 No. 7

31 December 1995 Vol. 8 No. 8

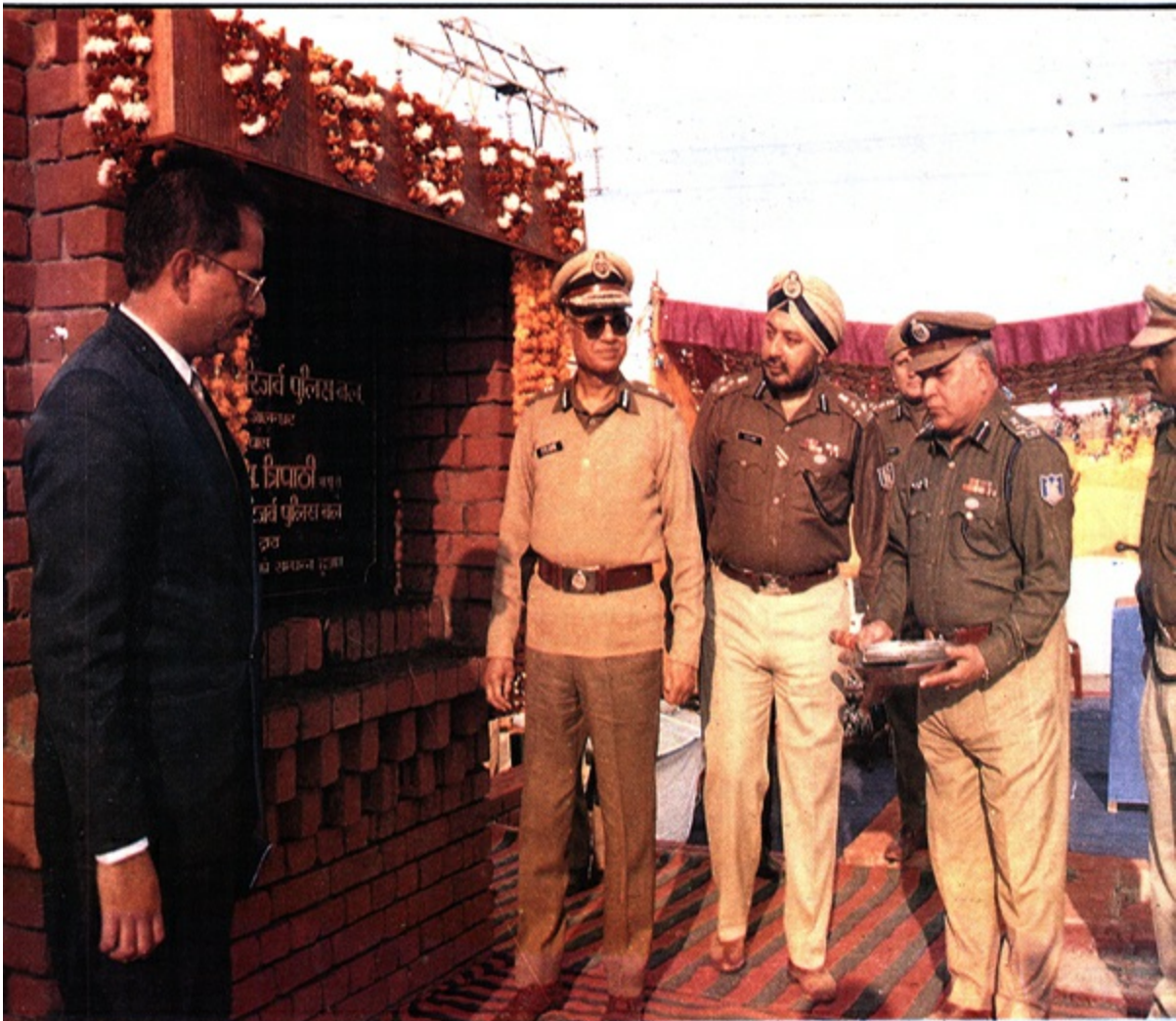
सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-1

28 फरवरी, 1995

9 फाल्गुन, शक 1916



युप केंद्र जालंधर का शिलान्यास करते हुए महानिदेशक श्री एस.बी.एम. त्रिपाठी

सम्पादकीय

28 दिसम्बर 1994 को होने वाला हमारा 55 वां वार्षिकोत्सव इस वर्ष देश के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के निधन के कारण मनाए जा रहे राष्ट्रीय शोक के चलते रद्द कर दिया गया / के.रि.पु. बल परिवार में देश की शांति एवं सुरक्षा में जुटे हम सभी ज्ञानी जी के इस असामयिक आलोप पर उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से नतमस्तक हो कर श्रद्धांजलि देते हैं /

हमें गर्व है कि हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं, जिसकी आवाज विश्व मंच पर एक सम्प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र के रूप में जाती है / मगर हमें यह बात कदापि नहीं चाहिए कि इस सम्प्रभुता की कीमत सतत सजगता है / इसके लिए समझौते की कोई गुंजाइश नहीं है / हमारी एकता अखंडता एवं सम्प्रभुता की अडिग चौखटों पर इधर हाल के वर्षों में आतंकवाद देशद्रोह एवं साम्प्रदायिकता की दीमकें डंक मारने लगी हैं / हमें अपने राष्ट्र की चौखट पर देश प्रेम कर्तव्यपरायणता, सजगता, ईमानदारी और सेवाभक्ति का ऐसा लेप चढ़ाना है कि इस चौखट से टकराते ही इन दीमकों के डंक छूट जाएं / हमें गर्व है कि देश को आंतरिक संकटों से बचाने का काफी कुछ जिम्मा हम पर है /

महाभारत का एक सूत्र है-पूरा जीवन धुंआ-धुंआ जलने की अपेक्षा एक ही बार धधक कर जल जाना कहीं बेहतर है / यह सूत्र सम्राट संजय की कथा से संबधित है / सम्राट संजय जब युद्धभूमि से पराजित हो कर लौटा तो उसकी मां ने विदुला ने यह चुभता हुआ वाक्य उसे कहा / इन शब्दवाणों से उद्वेलित संजय फिर युद्धभूमि में लौट गया और अब की बार भारी विजय के साथ वापस लौटा / विजयी सम्राट का माता द्वारा भव्य स्वागत किया गया /

यह संदेश देश की सुरक्षा में लगे जवानों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है / हमारी कामना है कि यह संदेश के.रि.पु. बल के जवानों के जीवन में संवेदनशील तथा वीरतापूर्ण भावनाओं का संचार करे / हम अपने कार्य को एक महान लक्ष्य की तरह ले कर उस पर आगे कदम बढ़ाएं / बल आगे ही आगे बढ़े, उसका कोई भी कदम कभी भी पीछे न लौटे / उसकी गौरवशाली परंपराएं और फलें फूलें / देश एक ऐसे कल की ओर बढ़े जहां केवल विकास और समृद्धि ही हो, कोई खून खराबा कल्लेआम दंगा फसाद न हो / ऐसे कल के निर्माण में देश बल से चाहे कोई कीमत मांगे, हम शांतिदूत इस कीमत को चुकाने में एक पल को भी न चूकें / इसी कामना और शुभेच्छा के साथ 1995 का पहला हिंदी सी.आर.पी.एफ. समाचार आपके हाथ में दे रहे हैं /

गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल की टुकड़ियां



राजपथ पर सलामी मंच के आगे से गुजरती के.रि.पु. बल की टुकड़ी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियों की भारी व्यस्तताओं के बावजूद इस साल की गणतंत्र दिवस परेड में बल की तीन टुकड़ियों ने भाग लिया। इनमें के. रि. पु. बल, बैंड तथा आर. ए. एफ. की एक-एक टुकड़ी शामिल थी।

144 सदस्यों वाली के.रि.पु. बल की पुरूष टुकड़ी सबसे आगे थी। इसका नेतृत्व सहायक कमान्डेन्ट मौहम्मद इमरान मलिक कर रहे थे। इसमें सब-इंस्पेक्टर तथा अन्य रैंकों के जवान शामिल थे। इस टुकड़ी में सब जवानों का औसत कद 6 फुट था।

इस टुकड़ी के पीछे के.रि.पु. बल का 105 सदस्यों वाला बैंड था जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर पी. एस. थापा ने किया। श्री थापा गणतंत्र दिवस परेडों में भाग लेने की अपनी रजत जयन्ती मना चुके हैं।

बैंड के बाद 144 सदस्यों वाली आर.ए.एफ. की टुकड़ी थी। इसका नेतृत्व आर.ए.एफ. की 103 बटालियन के उप कमान्डेन्ट श्री आर.के. यादव कर रहे थे।

बल की यह टुकड़ियां अपने कथानक गीत “सेवा-भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहाता है” की धुन पर मार्च करती हुयी सलामी मंच के आगे से गुजरीं।

अंगोला कमीजों तथा खाकी पैंटों में के.रि.पु. बल की टुकड़ी के जवानों के हाथों में सेल्फ लोडिंग राइफलें और टुकड़ियों के कमांडरों के हाथों में चमचमाती हुई तलवारें थीं। उनकी गहरी नीली पगड़ियों पर आसमानी रंग का तुर्रा था, जिस पर सुनहरे रंग की झालर थी। हर जवान की कमीज की बांयी बांह पर के.रि.पु. बल का हल्के रंग का प्रतीक चिन्ह था और नीले कमरबंध पर सफेद चमड़े की पेट्टी बंधी थी। वे गले में बल के प्रतीक चिन्ह वाला स्कार्फ बांधे थे।

आर.ए.एफ. की टुकड़ी के जवान नीले डांगरी सूट पहने थे और उनकी कमीज

को बांयो बांह पर आर.ए.एफ. का प्रतीक चिह्न बना था। उनको कमर पर काली बेल्ट, गले में सफेद स्कार्फ और सिर पर नीले रंग की बैरेट कैप थी।

के.रि.पु. बल के 20 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 20 कार्मिकों को पंजाब में आतंकवाद विरोधी अभियानों के दौरान दिखाए गए अदम्य साहस, उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता तथा समर्पण के लिए शौर्यवीरता के 20 पदक प्रदान किए गए हैं।

इनमें चार कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक, 14 को शौर्यवीरता के पुलिस पदक तथा दो कार्मिकों को शौर्यवीरता का पुलिस पदक बार प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :-

राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक

नायक रघुबीर सिंह (मरणोपरांत) - 96 बटालियन, कांस्टेबल बी. एस. सोलंके (मरणोपरांत) - 96 बटालियन, डिप्टी कमान्डेन्ट एम. एल. मीणा- 100 बटा. तथा कांस्टेबल कालूराम खड (मरणोपरांत) - 100 बटालियन।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

कांस्टेबल पुष्कर दत्त जोशी (18 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट उषा शंकर (80 बटा.), लांस नायक मोहम्मद युसुफ (73 बटा.), लांस नायक ए. बरला (43 बटा.), कांस्टेबल भूप सिंह (75 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी आर.एस.एच. सहोता (7 बटा.), कांस्टेबल त्रिभुवन सिंह (7 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी बी.एस.चौहान (33 बटा.), नायक जय मुनि दत्त (10 बटा.), नायक प्रभावती भाई (79 बटा.), कांस्टेबल आलोपा राव (79 बटा.), कांस्टेबल विनोद कुमार (79 बटा.), कांस्टेबल शंभु हैम्भ राम (79 बटा.) तथा कांस्टेबल शेषमणि मिश्रा (79 बटा.)।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक बार

इंस्पेक्टर सोम प्रकाश (33 बटा.) तथा लांस नायक रघुनाथ प्रसाद (33 बटा.)।

के.रि.पु. बल के 30 कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदक

गणतंत्र दिवस 1995 के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 30 कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। इनमें चार कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 26 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक निम्न हैं :-

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक आर.पी.तिवारी (ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली), अपर उप महानिरीक्षक नंद लाल (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), अपर उप महानिरीक्षक मोहर सिंह (ग्रुप केन्द्र गुडगांव) तथा कमान्डेन्ट आर.दीक्षित (उप महानिरीक्षक कार्यालय अजमेर)।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

उप महानिरीक्षक बी.एम.सारस्वत (नई दिल्ली), अपर उप महानिरीक्षक एम.एल.शर्मा (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), कमान्डेन्ट ए.एन.श्रीनिवासन (94 बटा.), सहायक निदेशक (परिचालन) जे.एस.बिष्ट (महानिदेशालय), सहायक निदेशक (स्थापना) जार्ज.सी.फ्रांसिस (महानिदेशालय), सहायक निदेशक (संचार) रिजवान रसूल (महानिदेशालय), डिप्टी कमान्डेन्ट ओ.पी.यादव (74 बटा.), डिप्टी कमान्डेन्ट रघुबीर सिंह (31 बटा.), डिप्टी कमान्डेन्ट रेशम सिंह (99 आर.ए.एफ.), डा. आर.के.मोहन्ती (बेस अस्पताल 3), महानिदेशक के निजी सचिव एस.सी. निरवाल (महानिदेशालय), सहायक कमान्डेन्ट मोहर सिंह (ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली), सूबेदार मेजर एम.एम.नायर (आर.टी.सी.2), इंस्पेक्टर एन.आर.मेहरा (50 बटा.), इंस्पेक्टर पन्ना लाल (46 बटा.) इंस्पेक्टर वेदपाल सिंह (30 बटा.), इंस्पेक्टर सोहन लाल (119 बटा.) सब इंस्पेक्टर संतराम (75 बटा.), हैड कांस्टेबल एस.गोपीनाथन पिल्लई (99 आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल जी कृष्णा राव (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), हैड कांस्टेबल रंजीत सिंह (33 बटा.), हैड कांस्टेबल ताराचंद्र त्यागी (10 बटा.), कांस्टेबल विश्वनाथ शुक्ला (महानिदेशालय), कांस्टेबल प्रहलाद सिंह (महानिदेशालय), कुक उदय सिंह (61 बटा.), तथा कांस्टेबल/दफ़्तरी दुर्गा प्रसाद (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर)।

महानिदेशक का मोन दौरा



मोन के राजा महानिदेशक महोदय को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

के. रि. पु. बल के महानिदेशक श्री एस. वी.एम. त्रिपाठी अपने उत्तर पूर्वी क्षेत्रों के दौरे के दौरान 20 जनवरी, 95 को मोन, नागालैंड स्थित बल की 117 बटालियन स्थल पर पहुंचे। नागालैंड की खूबसूरत वादियों में बसे मोन में स्थित बल के युनिट स्थल पर उस दिन उत्सव का सा माहौल था।

मोन में महानिदेशक महोदय के सम्मान में आयोजित नागरिक अभिनंदन में स्वयं राजा और वहां के स्थानीय लोगों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी। इसमें बल के कार्मिकों के प्रति उनका विश्वास और प्रेम परिलक्षित था।

बीस जनवरी को सुबह बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी हेलीकाप्टर से मोन पहुंचे। महानिरीक्षक (परिचालन) आर.सी.अग्रवाल महानिरीक्षक (परिचालन : मणिपुर एवं नागालैंड) एन.के. तिवारी तथा उप महानिरीक्षक, कोहिमा एम.एस. फारूकी भी उनके साथ थे। 117 बटालियन के कमान्डेन्ट पी.जी.जी. नायर ने महानिदेशक महोदय का वहां पहुंचने पर स्वागत किया।

मोन में कोनयाक ट्राइबल युनियन, कोनयान स्टूडेंट्स युनियन तथा स्थानीय प्रशासन ने महानिदेशक के सम्मान में एक नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया जहां महानिदेशक का स्वागत मोन के राजा और ट्राइबल व स्टूडेंट युनियन के सदस्यों ने किया। इस मौके पर डिप्टी कमिश्नर तथा पुलिस अधीक्षक सहित अनेक स्थानीय नागरिक व अर्ध सैनिक बलों के अधिकारी उपस्थित थे।

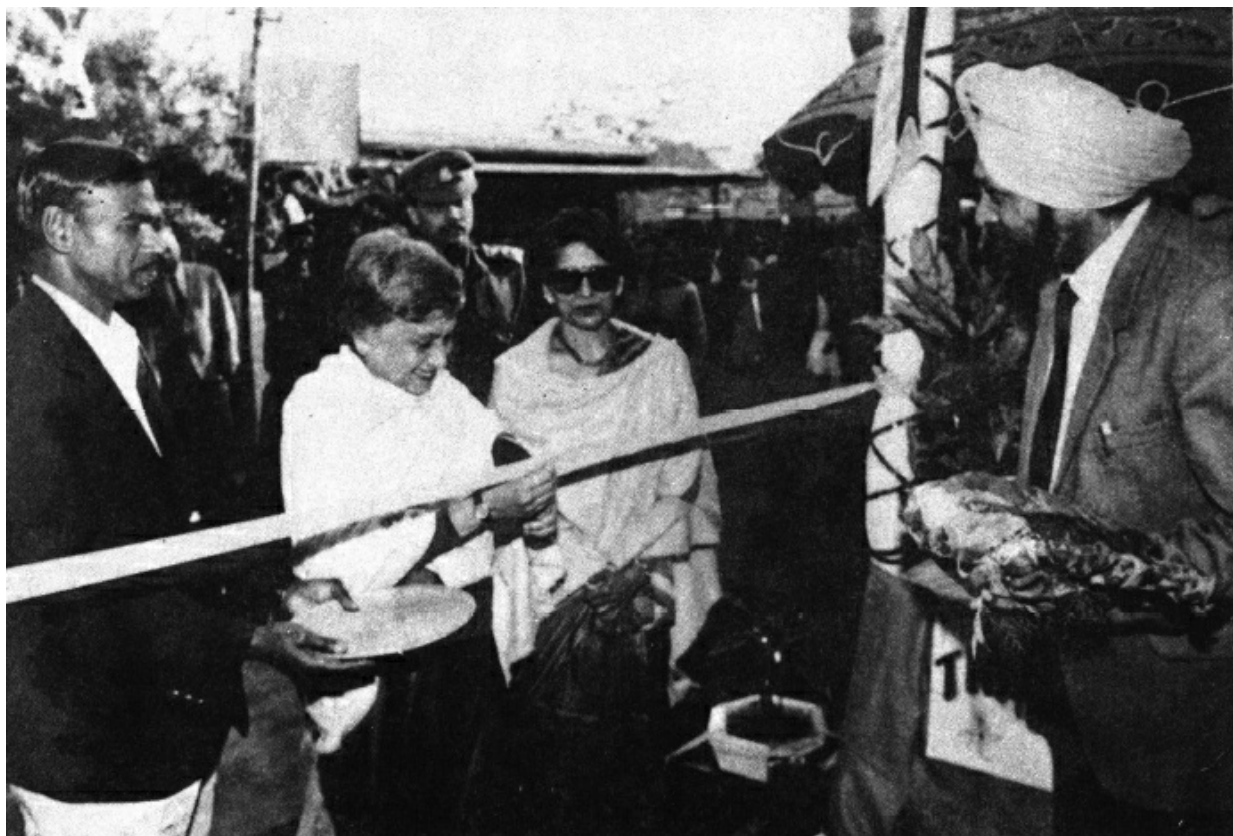
इस अवसर पर बोलते हुए महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने कहा कि इस क्षेत्र में बल के

जवान काफी लम्बे समय से काम कर रहे हैं तथा इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर लिए हैं। यह समारोह इस बात का प्रतीक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले वर्षों में यह दोस्ती और मजबूत होगी। उन्होंने स्थानीय नागरिकों को बल के जवानों और अधिकारियों की तरफ से नव वर्ष की शुभकामनाएं भेंट की।

शुभकामनाओं के तौर पर श्री त्रिपाठी ने वहां कार्यरत बच्चों के एक स्कूल को कल्याण गतिविधियों के लिए तथा स्थानीय ग्रामीणों को विकास कार्यों के लिए पांच-पांच हजार रुपये भेंट करने की घोषणा की।

इस मौके पर स्थानीय नागरिकों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा में लोकनृत्य भी पेश किये।

के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी



श्रीमती मुरियल लिडल कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

एक से छ : जनवरी '95 तक आर.के.पुरम सेक्टर- 1 में के.रि.पु.बल कल्याण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का आयोजन के.रि.पु.बल केन्द्रीय परिवार कल्याण बोर्ड ने किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन अपर महानिदेशक श्री

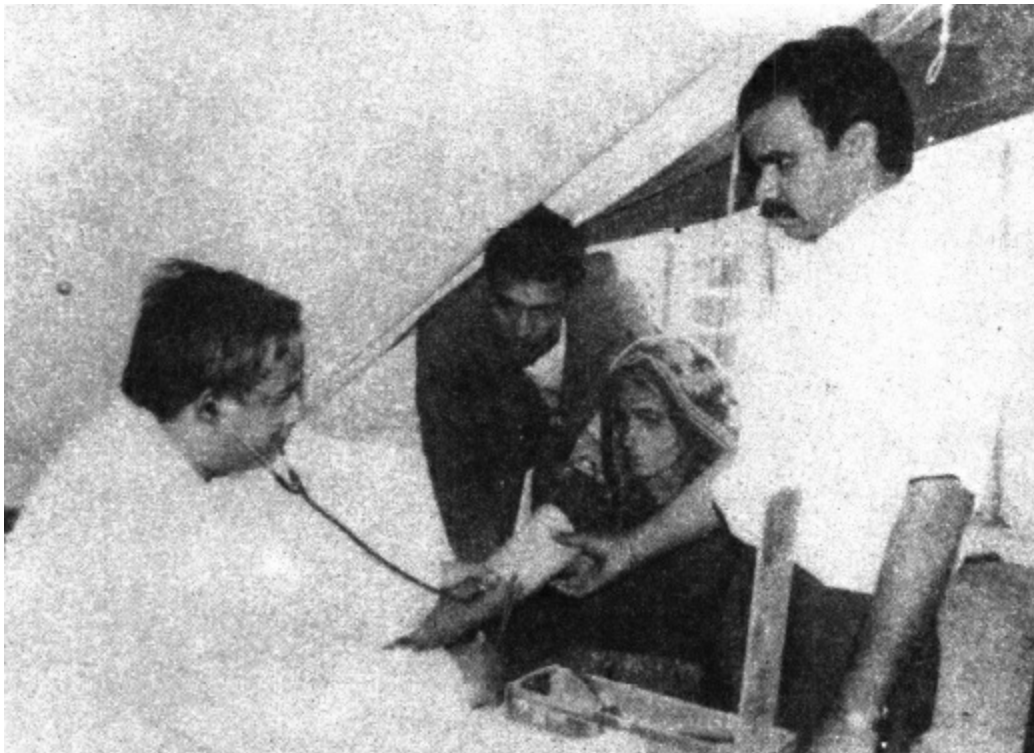
ए.वी.लिड्ल को पत्नी श्रीमांते मुरियल लिड्ल ने किया ।

प्रदर्शनी में बल के दस सेक्टरों से आए परिवार कल्याण केन्द्रों ने अपने अपने स्टाल लगाए थे । इन स्टालों में हस्तकरघा, चीनी मिट्टी के बर्तन, वस्त्र तथा अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं को प्रदर्शन एवं बिक्री के लिए रखा गया था ।

6 जनवरी को प्रदर्शनी के समापन के अवसर पर अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिड्ल ने प्रदर्शनी में सर्वोत्तम रहे स्टालों को पुरस्कृत किया । साज सज्जा तथा बिक्री की दृष्टि से उत्तर सेक्टर, दक्षिण सेक्टर तथा पश्चिम सेक्टर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे । इस मौके पर बोलते हुए श्री लिड्ल ने प्रदर्शनी में भाग लेने वाले परिवार कल्याण केन्द्रों को बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि पहली बार आयोजित इस प्रदर्शनी की सफलता को देखते हुए केन्द्रीय परिवार कल्याण बोर्ड आगे भी इस तरह की प्रदर्शनियों का आयोजन करता रहेगा ताकि परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं के लिए एक बड़ा बाजार उपलब्ध हो सके । इससे न केवल परिवार कल्याण केन्द्रों की आय बढ़ेगी, अपितु इससे इन केन्द्रों में रोजगार के भी और अवसर उपलब्ध हो सकेंगे ।

इस प्रदर्शनी से हुई आय का उपयोग विभिन्न परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा विकलांग जवानों, बच्चों तथा विधवाओं के कल्याण के लिए किया जाएगा ।

कुंभ मेले में चिकित्सा शिविर



मेल में एक मरीज को जांच करते हुए बल के डाक्टर

प्रति वर्ष जनवरी फरवरी के महीने में मकर संक्रांति तथा बसंत पंचमी के अवसर पर इलाहाबाद के त्रिवेणी घाट पर प्रयागराज में पवित्र स्नान के लिए पूरे देश से आए लाखों लोगों की भीड़ जुटती है। इस वर्ष अर्द्ध कुंभ पड़ने से इस मौके पर स्नान करने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या अप्रत्याशित रूप से अधिक थी। 20वीं शदी का अंतिम अर्द्ध कुंभ होने के कारण भी यहां पर एक पखवाड़े में लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ जमा रही। इस मौके पर वहां स्थित रैपिड एक्शन फोर्स की स्थानीय युनिट ने तीर्थयात्रियों के सहायतार्थ कई कार्यक्रम चलाये।

हालांकि 101 आर.ए.एफ. बटालियन की चारों कम्पनियां अन्यत्र तैनात थी, फिर भी बटालियन कमान्डेन्ट ने मुख्यालय में उपलब्ध मुख्यालय कंपनी तथा मेडिकल स्टाफ की मदद से कुंभ मेला स्थल पर एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। चूंकि कैंप में देश भर से आने वाले तीर्थयात्रियों में बहुत से ऐसे भी थे, जिन्हें हिंदी नहीं आती थी, उनकी सहायता के लिए इस कैंप में देश के लगभग हर प्रांत के एक कार्मिक को नियुक्त किया गया। इस कैम्प द्वारा बीमार तीर्थयात्रियों को दी गयी सेवा और उन्हीं की भाषा में दिए जाने वाले निर्देशन ने इस कैम्प को मेला स्थल पर लगे अन्य सभी सरकारी एवं गैर सरकारी राहत शिविरों में एक विशिष्ट दर्जा प्रदान कर दिया।

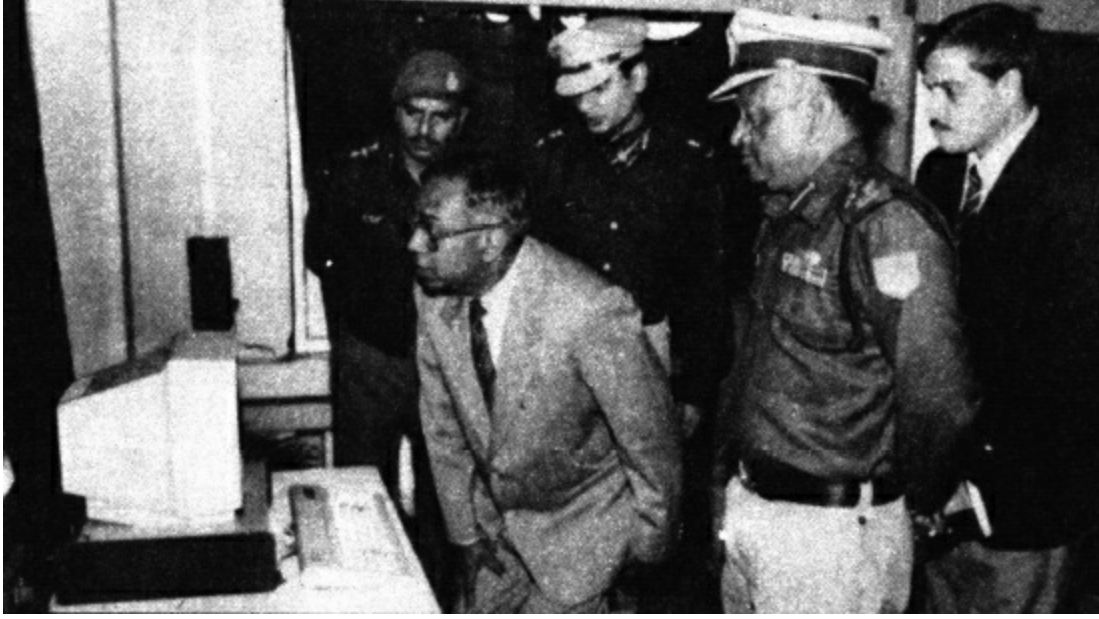
67 आतंकवादी पकड़े

माह; जनवरी, 95 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में के रि.पु.बल के कार्मिकों ने 67 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी। मुठभेड़ों में पांच आतंकवादी मारे गये।

इन अभियानों में बल के कार्मिकों ने 39 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में तीन ए.के. 47 रायफलें, एक रिवाल्वर, एक हल्की मशीनगन, चार पिस्तौलें, एक 303 हल्की मशीनगन मैगजीन सहित तथा छः अन्य बंदूकें शामिल हैं। साथ ही 2000 से अधिक गोली बारूद भी बरामद किया गया। मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के आठ कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 15 गंभीर रूप में घायल हुए।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली-पटना के बीच स्वचालित संदेश प्रेषण व्यवस्था



स्वचालित संदेश प्रेषण प्रणाली का निरीक्षण ५७३ हुए महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री सुरेश राय के.रि.पु.बल की विभिन्न इकाइयों के बीच संचार व्यवस्था के आधुनिकीकरण व उसे सुदृढ़ बनाने की दिशा में गत जनवरी माह में एक और स्थान स्वचालित संदेश प्रेषण व्यवस्था के द्वारा सीधे जोड़ दिया गया है।

पुलिस महानिरीक्षक श्री सुरेश राय ने महानिदेशालय में इस नई व्यवस्था का 25 जनवरी, 1995 को शुभारम्भ किया। अब तक महानिदेशालय से पटना स्थित महानिरीक्षक व उप महानिरीक्षक कार्यालयों को संदेश कलकत्ता होकर भेजे जाते थे। नई व्यवस्था से संदेश तत्काल पटना आ जा सकेंगे।

ग्रुप केन्द्र जालंधर का शिलान्यास

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 21 दिसम्बर, 94 को ग्रुप केन्द्र जालंधर का औपचारिक रूप से शिलान्यास किया। इस अवसर पर उप महानिरीक्षक जालंधर रेंज श्री एस. एस. विर्क सहित पंजाब स्थित बल की युनिटों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। श्री विर्क ने महानिदेशक महोदय को ग्रुप केन्द्र की स्थापना से संबंधित विभिन्न पहलुओं का परिचय दिया। इस अवसर पर उपस्थित केन्द्रीय लोक निर्माण के अभियंता श्री एस.के.शर्मा ने ग्रुप केन्द्र में चल रहे भवन निर्माण कार्यों एवं भविष्य की अन्य निर्माण योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने आश्वासन दिया कि ग्रुप केन्द्र में चल रहा निर्माण कार्य निर्धारित समय अवधि में पूरा कर लिया जायेगा।

बाद में उपस्थित अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि साधनों की कमी को ग्रुप केन्द्र के निर्माण के कार्य में रूकावट नहीं बनने दिया जायेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह ग्रुप केन्द्र अन्य निर्माणाधीन

ग्रुप केन्द्रों को अपेक्षा जल्दी बन कर तैयार हो जायेगा। उन्होंने कहा कि पंजाब में बनने वाले बल के इस पहले ग्रुप केन्द्र से जहां एक ओर पंजाब में कार्यरत बल के कार्मिकों को अपने परिवारों को अपने पास रखने का मौका मिलेगा वहीं इससे बल के कार्मिकों एवं पंजाब के लोगों के बीच आपसी मेलजोल एवं भाई चारे की भावना को बढ़ाने में भी सहयोग मिलेगा।

ज्ञातव्य है कि सरायखास, जालंधर स्थित यह ग्रुप केन्द्र जालंधर-अमृतसर जी.टी.मार्ग पर जालंधर से 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ग्रुप केन्द्र का कुल क्षेत्रफल 147.6 एकड़ है तथा इसके साथ 96 बटा, 98 बटा., 127 बटा. और 128 बटालियन सम्बद्ध है।

133 महिला बटालियन

हलोमाजरा, चण्डीगढ़ में खड़ी की जा रही बल की 135 वीं महिला बटालियन को ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में स्थानान्तरित कर दिया गया है। अपनी स्थापना की प्रक्रिया से गुजर रही यह बटालियन अब उप महानिरीक्षक गांधी नगर तथा महानिरीक्षक (परिचालन) बम्बई के सीधे प्रशासनिक नियंत्रण में रहेगी।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जनवरी, 95 में मृत्यु के कुल 24 मामलों में 9,11,500 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें से 23 मामलों में केन्द्रीय कल्याण निधि की 10,000 रूपये की तथा एक मामले में 12,500 रूपये की राशि शामिल है। इसी प्रकार जोखिम निधि पार्ट 'बी' स्पेशल कल्याण निधि योजना से इसके 11 सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुल 3,85,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

माह जनवरी 95 में बल के मत कार्मिक

माह जनवरी, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल/डाइवर वी.के. शर्मा (12 बटा.), हैड कांस्टेबल झूठाराम (47 बटा.), कांस्टेबल गजेंद्र रजक (21 बटा.), सब इंस्पेक्टर अब्दुल खालिम (50 बटा.), हैड कांस्टेबल (क्रिप्टो) स्वेसलाम दाम्ते (। सिगनल), कुक एस. पी. आचार्य (21 बटा.), नायक आर. डी. पिल्लई (98 बटा.), वाशर मैन राम भरोसे (104 बटा.), कांस्टेबल हरी ओम (129 बटा.), कांस्टेबल कृष्ण लाल (125 बटा.), कांस्टेबल वी वासु (36 बटा.), नायक मिलाप सिंह (ग्रुप केन्द्र लखनऊ), नायक मोहम्मद असलम (72 बटा.), कांस्टेबल/बिगुलर महाबीर सिंह (35 बटा.), कांस्टेबल सूरजभान (ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर),

कांस्टेबल मनजोत सिंह (70 बटा.), कुक ओम प्रकाश (ग्रुप केन्द्र पैंजौर),

कांस्टेबल जीनोद बारपात्रा (92 बटा.), कांस्टेबल धरमराज (5 बटा.), हैड कांस्टेबल पूरन चंद (14 बटा.), हैड कांस्टेबल (टी.पी.) शिव चरण ध्यानी (। सिगनल), सफाई कर्मचारी बच्चू मलिक (63 बटा.), सहायक उप निरीक्षक (एम.) एल. गुंटे (ग्रुप केन्द्र इस्फाल), हैड कांस्टे बल ओम प्रकाश यादव (119 बटा.), नायक जे.के. झा (73 बटा.), कांस्टेबल प्रफुल्ल कुमार (73 बटा.), कांस्टेबल अशोक कुमार (73 बटा.), कांस्टेबल लाला भाई (73 बटा.), कांस्टेबल वी. विजयाराव (73 बटा.), कांस्टेबल/ ड्राइवर रविंद्र ठाकुर (73 बटा.), कस्टेबल अशोक मंझी (73 बटा.), तथा पी. विक्रम भाई (73 बटा.)

प्रतिभावन छात्रों को निःशुल्क शिक्षा व हास्टल सुविधा

के.रि.पु. बल के अन्य रैंककर्मियों के प्रतिभावान बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए उनकी निःशुल्क शिक्षा व हास्टल सुविधा की नई योजना बनाई गई है।

योजना के अंतर्गत के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली में हर साल सातवीं कक्षा में प्रवेश के लिये छठी पास ऐसे 10 छात्र-छात्राओं का चुनाव किया जायेगा जो इसकी प्रवेश परीक्षा में श्रेष्ठतम रहेंगे। चुने गये छात्रों को पांच वर्षों (सातवीं से बारहवीं कक्षा) तक इस स्कूल में निःशुल्क शिक्षा व हास्टल सुविधा मिलेगी।

योजना के अंतर्गत बारहवीं के छात्रों को मेडिकल व इंजिनियरी परीक्षाओं में प्रवेश के लिये भी विशेष कोचिंग दी जायेगी। उल्लेखनीय है कि इस सुविधा का लाभ उठाने वाली छात्र-छात्राओं को परीक्षा में हर साल कम से कम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे अन्यथा उन्हें इस सुविधा से वंचित कर दिया जायेगा। यह सुरक्षा केवल अन्य रैंक कर्मियों के बच्चों को मिलेगी।

परमार्थ

परमार्थ के लिये कुछ करके देखो।

स्वार्थ में कुछ नहीं पाओगे।।

मुट्ठी बन्द करके आये थे।

खाली हाथ चले जाओगे।।

जिस दिन इन भावों को समझ जाओगे।

कभी नहीं पछताओगे।।

सेवा में जो मेवा है, उसका रस चख कर देखो।

फिर केवल उसको ही चखते जाओगे।।

पटेल ने जिस बल को सी.आर.पी.एफ. नाम दिया है ।
उसमें केवल परमार्थ है ।।
जिन लोगों ने उसको चखकर देखा है ।
उनका निजी नहीं कोई स्वार्थ है ।।
काम, क्रोध, मोह, लोभ से जिस दिन हट जाओगे ।
उसी दिन अपने आपको अहो भाग्य पाओगे ।।
परमार्थ का रास्ता कार्यों से भरा होता है ।
सहने वालों को फूलों सा लगता है ।।
जिस दिन इस मकसद को पा जाओगे ।
अपना नाम अमर पाओगे ।।
परमार्थ के लिये कुछ करके देखो ।
स्वार्थ में कुछ नहीं पाओगे ।
क्या लाये थे क्या ले जाओगे ।
व्यर्थ ही जीवन खो जाओगे ।।

—निरीक्षक मीना राम यादव
सी/(132 बटा.)

श्रद्धांजलि

(समर्पित भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री ज्ञानी जैल सिंह महोदय को)

सिंह जैल आप ज्ञानी थे,
भारत सपूत स्वाभिमानी थे ।
पंचनद पुत्र तुम चर्चित थे,
राष्ट्र की भक्ति को अर्पित थे ।।
सधवां के साधक संत ज्ञान,
सरल संत सम्यक समान ।
सरस सलिल समता के मान,
भारत के अनुपम शक्ति शान ।।
गौरवित ज्ञान के तुम स्वरूप,
राष्ट्र के पति, भारत के भूप ।

आडेग अचल आभेनव अनूप,
भारतीय आदर्श के ग्राम्य रूप ।।
मानव सेवा अर्पित था कर्म,
गुरू ज्ञान समर्पित सर्व धर्म ।
नानक स्वरूप शिक्षित स्वधर्म,
समता समान निष्काम कर्म ।।

दो राष्ट्र शान्ति का आशीर्वचन,
सर्वांग उन्नत हो भारत मन ।
सत्यापित हो तब ज्ञान गुनन,
श्रद्धार्पित हैं ये शब्द सुमन ।।
गर्वित भारत के ज्ञान मान,
हम नमन तुम्हें करते सुनाम ।
ईश्वर दे तुमकी स्वर्ग धाम,
त्रिभुवन करता तुमको प्रणाम ।।

—त्रिभुवन त्रिवेदी
कमान्डेन्ट (स्टाफ अधिकारी)
पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय, कोहिमा, (नागालैंड)



गुप केंद्र हैदराबाद में हाल में ही स्थापित किए गए शहीद स्मारक स्थल पर सलामी देते हुए अपर महानिदेशक (दक्षिण क्षेत्र)
श्री डी. आर. कार्तिकेयन

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी।

मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली - 110 072 ।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2
Ph. : 3262279

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-2

31 मार्च, 1995

10 चैत्र, शक 1917



बल के भूतपूर्व महानिदेशक श्री.बी.बी. मिश्रा बल के वर्तमान महानिदेशक श्री एस.की.एम. त्रिपाठी को
इंटर सेक्टर भारोत्तोलन प्रतियोगिता की रनिंग ट्रॉफी भेंट करते हुए

- छाया-एम.के.खन्ना

सम्पादकीय

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की समर्पित सेवाओं और कर्तव्यनिष्ठा ने सदैव सम्पूर्ण देश का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। हर संकट की घड़ी में देश ने एक विश्वास और आशा के साथ इस बल की ओर निहारा है। देश का ये विश्वास के.रि.पु. बल की एक अमूल्य थाती है। इस थाती की रक्षा के लिए हमारे जवानों ने अपने प्राणों तक की बाजी लगायी है।

हमारे जवानों की शूरवीरता के किस्से देश की सीमाओं के बाहर विदेशों तक में गर्व से गाए सुनाए जाते हैं। अपने देश से बाहर कानून व्यवस्था के कार्यों के लिए के.रि.पु. बल को पहला दायित्व 1987 में सौंपा गया, जबकि उसकी 35वीं तथा 58 वीं बटालियन तथा 88 महिला बटालियन की एक कम्पनी को भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में श्रीलंका में तैनात किया गया। श्रीलंका में उस समय बल की टुकड़ियों द्वारा किए गए कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा की गई। श्रीलंका में बल के साहसिक कारनामों के स्वरूप कांस्टेबल थंकापन मोहनन को मरणोपरांत वीर चक्र प्रदान किया गया। उनकी पत्नी को यह सम्मान राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में भारत के राष्ट्रपति महोदय ने प्रदान किया। इसके अतिरिक्त बल की महिला बटालियन की कांस्टेबल विमला देवी को सेना पदक से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त बल को एक युद्ध सेवा पदक भी प्रदान किया गया। श्रीलंका में कुल मिला कर हमारे 15 वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुए।

श्रीलंका के बाद कम्बोडिया और फिर मोजाम्बिक में हमारे जवान संयुक्त राष्ट्र की शांति रक्षक सेनाओं में शामिल हुए। हमारे जवान जहां गए, वहीं उन्होंने न केवल स्थानीय लोगों के हृदय जीते, अपितु उनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं कार्यकुशलता की संयुक्त राष्ट्र सेना के अधिकारियों सहित भारतीय सेना के अधिकारियों ने भी भरपूर प्रशंसा की।

विगत में बल के जवानों द्वारा अर्जित किए गए इस विश्वास का ही परिणाम है कि हैती में कानून व्यवस्था के कार्यों को बनाए रखने के लिए के.रि.पु. बल के एक दस्ते को भेजने का निर्णय लिया गया।

हैती दुर्गम पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा एक द्वीप देश है। लगभग 60 लाख की आबादी वाले इस देश का अधिकांश भाग मानव आबादी से रहित है। हैती का राजनीतिक और सामाजिक जीवन सदियों से उथल पुथल तथा रक्तपात से भरा रहा है। यहां कई हिंसक क्रांतियां तथा विद्रोह हुए हैं। कई सालों से यहां संवैधानिक सरकार नहीं चुनी गयी। 1957 में तानाशाह फ्रांकोइस डुवालियर ने सत्ता पर कब्जा किया। पापा डॉक के नाम से मशहूर इस तानाशाह ने निजी सेना के गठन पर जोर दिया, जिसने हैती में व्यापक स्तर पर खून खराबा तथा मानव अधिकारों का हनन किया। परिणामतः हैती आर्थिक रूप से कमजोर तथा राजनीतिक रूप से अस्थिर बना रहा। 1971 में पापा

डोक को मृत्यु के बाद सत्ता उसके पुत्र के हाथ में आ गयी, जिसे एक विद्रोह के बाद 1986 में सत्ता से हटा दिया गया। तब से यह देश लगातार कई विद्रोहों तथा रक्तपात से भरे आंदोलनों से गुजरा है, इस दौरान मानव अधिकारों का जम कर गला घोंटा गया। इस बीच हैती से व्यापक स्तर पर पलायन भी शुरू हो गया।

जुलाई 93 में हैती के राष्ट्रपति और सेनाओं के कमांडर इन चीफ के बीच एक समझौता हुआ, जिसके तहत संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में हैती के सैन्य बलों का आधुनिकीकरण तथा नयी पुलिस व्यवस्था की स्थापना का निर्णय लिया गया। साथ ही संयुक्त राष्ट्र सेना की निगरानी में निष्पक्ष चुनाव की भी योजना बनाई गयी।

हैती भेजी गयी संयुक्त राष्ट्र की सेना में, जिसमें कई देशों के 6000 सैनिक शामिल हैं, भारत सरकार ने के.रि.पु. बल के एक दस्ते को भेजने का निर्णय लिया।

हैती से मिल रही खबरों के अनुसार हमारे जवान वहां संयुक्त राष्ट्र की सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम कर रहे हैं। उन्होंने वहां कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं।

विगत में बल के जवानों के कार्यों को देखते हुए हम आशा करते हैं कि हमारे जवान हैती से भी गर्व से सिर ऊँचा किए लौटेंगे। वहां उनके कार्यों के सफल अंजाम तथा हैती में शांति स्थापना के लिए हमारी शुभकामनाएं।

के.रि.पु. बल दस्ता हैती रवाना

द्वितीय कमान अधिकारी आर.एच.एस. सहोता के नेतृत्व में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों व जवानों सहित 120 सदस्यों का दस्ता 28 मार्च, 1995 को नई दिल्ली इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से हैती के लिये रवाना हुआ। आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी ने 103 बटालियन मुख्यालय में उन्हें भावभीनी विदाई दी।

श्री सिद्दीकी ने इस अवसर पर उन्हें एक माह से चल रहे प्रशिक्षण को पूरा करने पर बधाई दी और हैती में अपना काम सफलतापूर्वक पूरा करने की कामना की।



के.रि.पु. बल के दस्ते को हैती के लिए विदा करते हुए आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी के.रि.पु. बल के इस दस्ते ने 31 मार्च से हैती में कानून व व्यवस्था में अपना सहयोग देना शुरू कर दिया है और वह वहां रहने तक संयुक्त राष्ट्र सेना के कमांडर के अंतर्गत काम करेगा। यह दस्ता हैती में संयुक्त राष्ट्र मिशन के अंतर्गत काम करने के लिये एक साल के लिये गया है। बल का दस्ता अपने साथ हथियार व गोलाबारूद, चिकित्सा व संचार उपकरण व स्टाफ और बुलेटप्रूफ गाड़ियां आदि आवश्यक साजसामान ले गया है।



हैती में कानून व्यवस्था के कार्यों में तैनात बल के कार्मिक

आश्रिता को अनुदान



श्रीमती सावित्री देवी को अनुदान राशि का चेक भेंट करते हुए श्री जी. झा पुलिस महानिरीक्षक स्पेशल सेक्टर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 80 बटालियन के स्व. हवलदार सुरतिया की पत्नी श्रीमती सावित्री देवी को 21 मार्च, 1995 को 89 बटालियन मुख्यालय में दो लाख रुपये का चेक भेंट किया गया। जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा दी गई इस अनुग्रह अनुदान राशि का चेक उन्हें पुलिस महानिरीक्षक (स्पेशल सेक्टर) श्री जी.झा ने प्रदान किया।

श्रीनगर (जम्मू कश्मीर) में 05 अक्टूबर, 1994 को हवलदार सुरतिया के नेतृत्व में अमर सिंह कालेज अस्पताल से बल के घायलों को ला रही बी कम्पनी की टुकड़ी पर आतंकवादियों ने घात लगा कर हमला कर दिया। हवलदार सुरतिया ने उनका बहादुरी से मुकाबला किया। सुरतिया को आतंकवादियों ने चारों ओर से घेर कर उन पर गोलियां चलाई, जो उनके सीने और सिर पर लगीं। इस तरह कर्तव्य पालन करते हुये उन्होंने अपना प्राणोत्सर्ग कर दिया।

महानिरीक्षक श्री जी.झा ने इस अवसर पर समारोह में बल के कार्मिकों के कल्याण की योजनाओं की जानकारी दी। प्रारम्भ में 89 बटालियन के उप कमान्डेन्ट छोटूराम यादव ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और हवलदार सुरतिया द्वारा दिखाई गई बहादुरी के बारे में बताया।

श्री भट्टा सम्मानित

ग्रुप केन्द्र पिंजौर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ओम प्रकाश भट्टा को राजभाषा नीति का अनुपालन करने तथा अपना सम्पूर्ण कामकाज हिन्दी में करने के लिए नई दिल्ली बसंत विहार के हरिबाबू बंसल धर्मार्थ ट्रस्ट ने सम्मानित किया है।

10 मार्च, 95 को केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् द्वारा आयोजित एक समारोह में श्री भट्टा को राजभाषा ट्राफी भी प्रदान की गयी जो उनकी ओर से उनके प्रतिनिधि ने स्वीकार की।

बल के कार्मिक को हिन्दी सम्मान

महानिदेशालय के वेतन एवं लेखा कार्यालय में कार्यरत उप निरीक्षक राम व्यास राय को केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली की 1994 में आयोजित 29 वीं अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व वर्ष 1993 में भी श्री व्यास ने इस प्रतियोगिता में तीसरा पुरस्कार तथा पदक प्राप्त किया था। सम्पूर्ण देश में फैले केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों व विभागों के 143 प्रतियोगियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था।

10 मार्च, 1995 को नई दिल्ली के प्यारे लाल भवन में आयोजित एक समारोह में श्री व्यास को नकद पुरस्कार, पदक, चल वैजयंती तथा प्रशस्ति पत्र केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के अध्यक्ष श्री कौशल कुमार माथुर ने प्रदान किया।

88 महिला बटालियन का नौवां स्थापना दिवस

06 फरवरी, 1995 को झड़ौदा कलां ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली स्थित बल की 88 वीं महिला बटालियन का नौवां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिनमें मेला सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा बड़ा खाना आकर्षण के मुख्य केन्द्र रहे। बल के महानिदेशक की पत्नी श्रीमती इन्दु त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। प्रातः मेले का उद्घाटन उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम.एस. यादव ने किया जबकि सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा बड़े खाने के अवसर पर अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिङ्गल सहित बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल कलाकारों को अपर महानिदेशक महोदय ने 1100 रुपये, उप महानिरीक्षक नई दिल्ली ने 500 रुपये तथा नोएडा की मुख्य प्रशासक श्रीमती नीरा यादव ने 5000 रुपये नकद प्रदान करने की घोषणा की।

ज्ञातव्य है कि बल की पहली 88 महिला बटालियन की स्थापना 06 फरवरी 1986

को को गई थी। इसके लिए माहेलाओं का चयन पूरे देश में फैले विभिन्न केन्द्रों द्वारा किया गया था। अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 30 मार्च, 1987 को दीक्षांत परेड में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को सलामी देने के बाद यह बटालियन 01 अप्रैल, 1987 से कर्तव्य क्षेत्र में उतरी। उसके बाद इसने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने इस अल्प आयु के सेवाकाल में ही इस बटालियन ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं तथा देश के विभिन्न हिस्सों तथा देश के बाहर (श्रीलंका) में भी अपनी कार्यकुशलता तथा कर्तव्यपरायणता से लोगों के विश्वास को जीता है। वर्तमान में इसकी कम्पनियां श्रीनगर, अयोध्या तथा दिल्ली में तैनात हैं।

अपनी अल्प सेवा अवधि में ही इस बटालियन ने एक सेना पदक, 6 सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक, 3 सेना अध्यक्ष के प्रशंसा प्रमाण पत्र तथा 14 महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्राप्त की हैं।

श्रीनगर में अपनी तैनाती के दौरान सीमा सुरक्षा बल तथा सेना को सहयोग देते हुए इस बटालियन की महिलाओं ने आतंकवादियों से भारी संख्या में हथियार तथा गोली बारूद बरामद किया है, जिसमें चार ए.के. 47 रायफलें, 49 विभिन्न प्रकार की पिस्तौलें, एक रिवाल्वर तथा अन्य विध्वंसक सामग्री शामिल है।

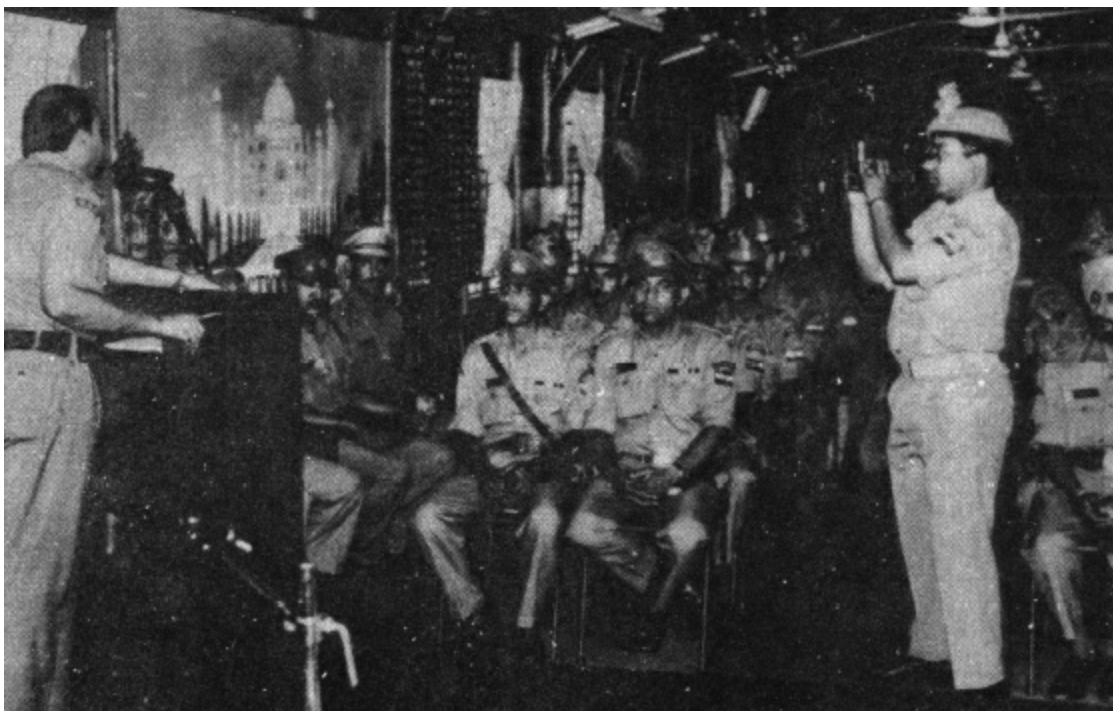
परिचालन के अतिरिक्त खेल के क्षेत्र में भी इस बटालियन की महिलाओं ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां भी हासिल की हैं। 1993 में इस बटालियन की महिलाओं ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में 10 स्वर्ण, 9 रजत तथा 9 कांस्य पदक प्राप्त किये। 1994 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हैड कांस्टेबल शीजामोल ने 1.56 मीटर की कूद लगाकर एक नया रिकार्ड स्थापित किया।



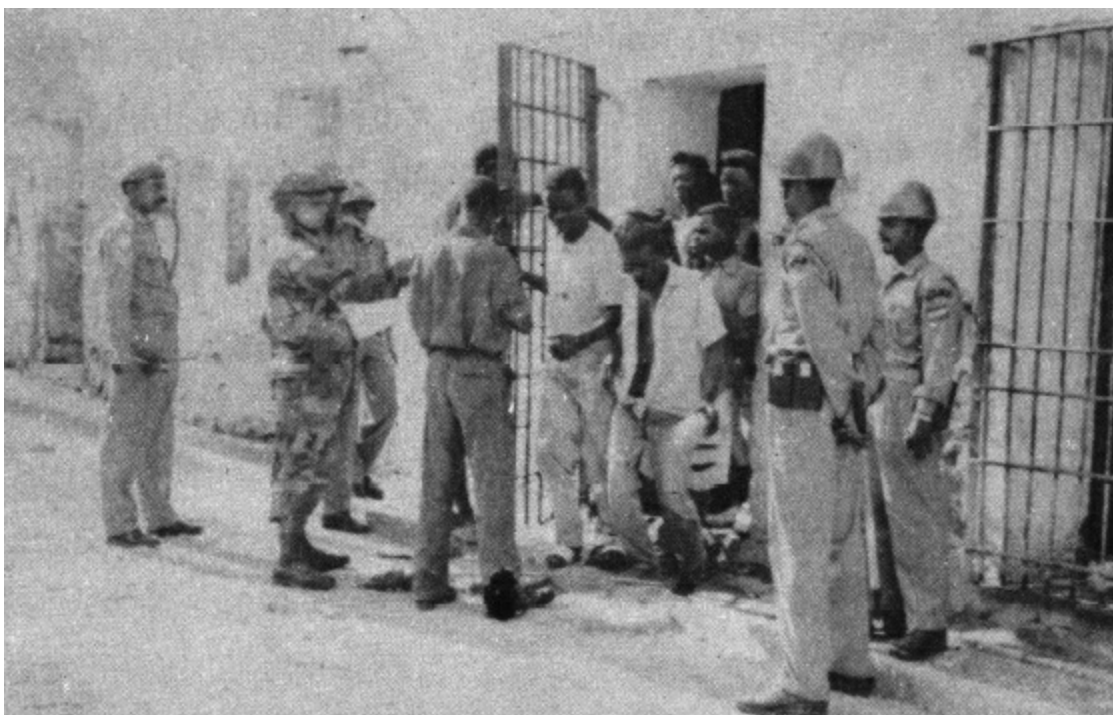
स्थापना दिवस के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुयी महिला बटालियन की सदस्य

फोटो फीचर

हैती में के.रि.पु. बल



हैती के लिए रवाना होने के पूर्व बल के कार्मिकों को आवश्यक निर्देश देते हुए आर. ए. एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी।



हैती में एक जेल की सुरक्षा में तैनात बल के कार्मिक

आवड़ी में वी.आई.पी. सूट



आवड़ी स्थित बल के अधिकारी मेस में 18,26,000 रुपये की लागत के चार.वी.आई. पी. सूट का निर्माण किया गया, जिनका उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री.एस.वी. एम. त्रिपाठी ने किया।

राहत कार्यों तक प्रतियोगिताओं में अग्रणी



बैंगलौर, येलहंका के नजदीक दुर्घटनाग्रस्त हुयी एक्सप्रेस ट्रेन के मुसीबतजदा यात्रियों की सहायता में जुटे बल के कार्मिके।



अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट प्रतियोगिताओं की चैंपियनशिप (फर्स्ट एड) जीतने वाली टीम के सदस्य ऊपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिङ्ग एवं अन्य अधिकारियों के साथ।

खेलकूद के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां

23 से 25 जनवरी, 1995 तक हुई 34 वीं ओपन राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में बल के इंसपेक्टर प्रभजीत सिंह ने पोल वाल्ट प्रतियोगिता में स्वर्ण, सब-इंसपेक्टर परमजीत सिंह ने 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण, सब-इंसपेक्टर अमृतपाल सिंह ने 3000 मीटर स्टीपल चेस में कांस्य तथा नायक एस.के. इनोबा सिंह ने 4×100 मीटर रिले में कांस्य पदक प्राप्त किया।

16 से 18 फरवरी, 1995 तक बंगलौर में हुई 33वीं अखिल भारतीय सीनियर एथलेटिक चैंपियनशिप-1995 में बल के सब इंसपेक्टर ए.डी. गणपति ने डैक्थलैन का स्वर्ण पदक जीत लिया। जबकि सब-इंसपेक्टर अमृतपाल सिंह को 3000 मीटर स्टीपल चेस, सब इंसपेक्टर रवि शंकर को 4×100 रिले तथा नायक एस.के.इनोबा सिंह को 4×100 मीटर रिले के रजत पदक प्राप्त हुये।

नई दिल्ली में 26 फरवरी, 1995 को हुई अखिल भारतीय रथ ओपन हाफ मैराथन दौड़ में बल के नायक राजेश कुमार को दूसरा, सब इंसपेक्टर रामकरण को चौथा तथा हैड कांस्टेबल प्रहलाद सिंह को छठा स्थान प्राप्त हुआ।

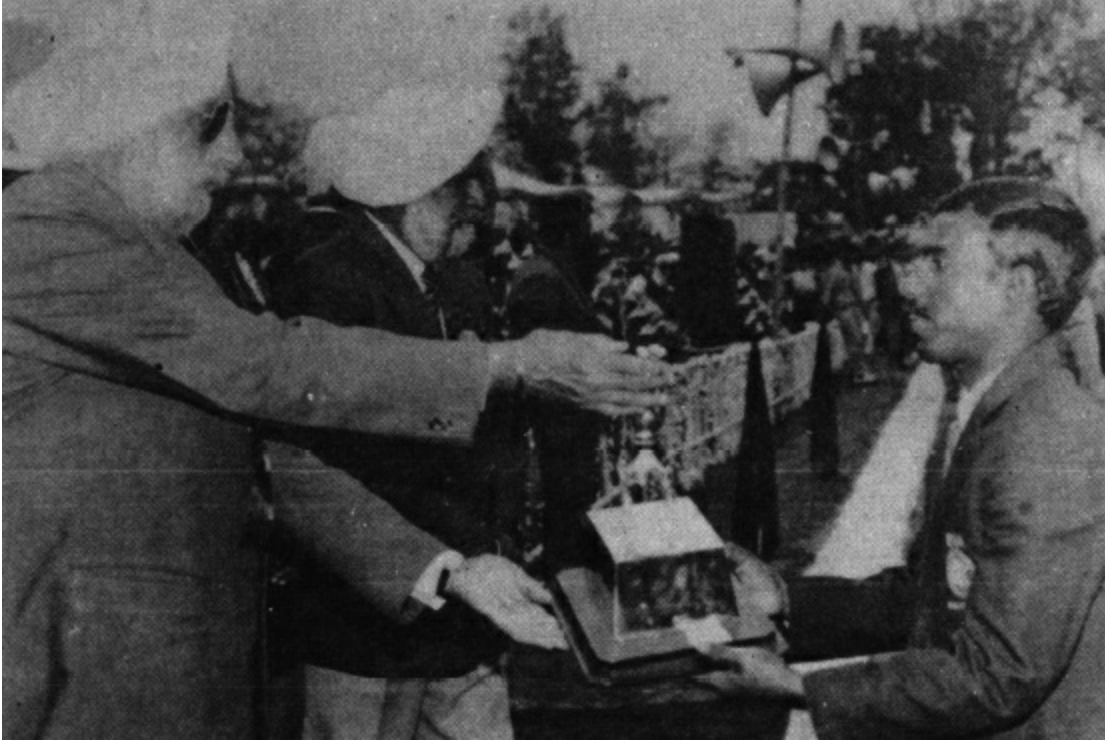
09 से 13 फरवरी, 1995 तक जालंधर पंजाब में अखिल भारतीय पुलिस कुश्ती, जूडो, जिमनास्टिक तथा भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुश्ती में बल को 5वां स्थान; जिमनास्टिक में एक स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक के साथ तीसरा स्थान, जूडो में एक स्वर्ण दो रजत तथा एक कांस्य पदक के साथ तीसरा स्थान तथा भारोत्तोलन में चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

बल की 88 महिला बटालियन की इंसपेक्टर एन.कुंजा रानी देवी तथा 103 आर.ए.एफ. बटालियन की सब इंसपेक्टर जीवन ज्योति ने पुणे में हुई राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा दोनों में क्रमशः 46 किलोग्राम तथा 64 किलोग्राम श्रेणी में तीन-तीन स्वर्ण पदक जीते।

19 से 24 मार्च, 1995 तक जम्मू में हुई 20वीं अखिल भारतीय इन्दिरा स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता में भाग लेकर बल की टीम ने यह प्रतियोगिता जीत ली।

41 बटालियन के सब-इंसपेक्टर अरविन्द्र मलिक ने जयपुर में हुई राष्ट्रीय बाक्सिंग चैंपियनशिप में भाग लेकर एक कांस्य पदक जीता।

महिला सब-इंसपेक्टर रिग्जेन अंगमो ने अखिल भारतीय रथ ओपन फुल मैराथन प्रतियोगिता में भाग लेकर महिला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया।



पंजाब के मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह से जिमनास्टिक ट्रॉफी ग्रहण करते हुए श्री बलरामशील

संक्षिप्त खबरें

बल के कार्यों की प्रशंसा

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक श्री वी.एस.माथुर ने के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को लिखे एक पत्र में 02 फरवरी '95 को महाशिवरात्रि के अवसर पर बल के कार्मिकों द्वारा वाराणसी में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के कार्यों में दिए गए सहयोग की प्रशंसा की है।

उन्होंने लिखा है कि महाशिवरात्रि के अवसर पर वाराणसी में शांति तथा कानून व्यवस्था बनाए रखना उत्तर प्रदेश पुलिस के लिए एक चुनौती भरा कार्य था, लेकिन उसने के.रि.पु. बल के सहयोग से इस दुष्कर कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। पूरे उत्सव के दौरान कानून व व्यवस्था बनी रही तथा कोई भी अप्रिय घटना नहीं घटी। के.रि.पु. बल के जवानों ने बहुत ही कुशलता के साथ स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखा। उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के चुनौती भरे समय में के.रि.पु. बल के कुशल सहयोग की आशा व्यक्त की।

अपने मताधिकार के प्रयोग के लिए पंजीकरण कराइए

अपने मताधिकार का प्रयोग करना भारत के प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक अधिकार है। इसमें केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिक भी शामिल हैं। लेकिन इन कार्मिकों के लिए अपने इस अधिकार का प्रयोग तब तक संभव नहीं है, जब तक कि उनके नाम मतदाता सूचियों में पंजीकृत न हों। अतः के.रि.पु. बल के प्रत्येक संक्षिप्त खबरें कार्मिक का यह कर्तव्य है कि वह अपना नाम मतदाता सूची में पंजीकृत कराए।

मतदाता सूचियों में अपने नाम पंजीकृत कराने के इच्छुक बल के प्रत्येक कार्मिक का नाम मतदान अधिकारियों के पास नौकरीपेशा कार्मिकों की पंजीकरण सूची में पंजीकृत करवाने के लिए भेजा जाना चाहिये। मतदाता सूची के फार्म-2 तथा 2-ए बल के हर कार्मिक द्वारा भरे जाने चाहिए जिससे उनके नाम संबंधित कार्मिक जिस निर्वाचन क्षेत्र का निवासी है वहां के जिला निर्वाचन अधिकारी या मुख्य निर्वाचन अधिकारी (केन्द्र शासित प्रदेशों के) को भेजे जा सकें।

महानिदेशालय में सहायक निदेशक (प्रशासन) श्री एस.एस. रावत को इस कार्य के लिए केन्द्रीय अधिकारी नियुक्त किया गया है। वह बल के कार्मिकों के नाम उनके संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में पंजीकृत करवाने के कार्य के लिए समन्वयक की भूमिका अदा करेंगे।

इसी प्रकार प्रत्येक सेक्टर में एक एक अधिकारी बल के कार्मिकों के नाम मतदाता सूचियों में पंजीकृत करवाने के लिए समन्वयक की भूमिका अदा करेगा।

माह फरवरी, 95 में बल के मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह फरवरी, '95 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हवलदार धन्ना लाल (131 बटा.), नायक/ड्राईवर बजरंग लाल (89 बटा.), हवलदार महाबीर सिंह (111 बटा.), सिपाही धन्ना लाल (49 बटा.), नायक मंगला राम (24 बटा.), सिपाही रोशन लाल (97 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट अभय सिंह (आर.टी.सी. 2), सिपाही सुरेन छत्री (129 बटा.), हवलदार करम सिंह (87 बटा.), सिपाही सेल्वा राज (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), सिपाही पप्पू राम (48 बटा.), सिपाही इन्द्र कुमार (48 बटा.), इंस्पेक्टर (एम.ओ.पी.पाण्डे), (सिगनल ग्रुप केन्द्र), सिपाही एम.आर.बेलारकर (58 बटा.), सिपाही सत्या प्रकाश (124 बटा.), लांस नायक कमरूद्दीन खान (61 बटा.), सिपाही/ड्राईवर उत्तर सिंह (61 बटा.), नायक महेन्द्र (61 बटा.), लांस नायक राजेन्द्रा प्रसाद (128 बटा.), हवलदार नंद किशोर (119 बटा.), सिपाही जगदीश प्रसाद, (119 बटा.), सब-इंस्पेक्टर भगवान प्रसाद (40 बटा.), हवलदार धर्मा सिंह (34 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त हुयी सूचना के अनुसार जनवरी, 95 माह में ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर के सिपाही करमा ओरेन भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया में हुए विश्व पुलिस एवं फायर गेम्स

26 फरवरी से 04 मार्च, 95 तक मेलबोर्न आस्ट्रेलिया में हुए विश्व पुलिस एवं फायर गेम्स में 20 सदस्यों वाले भारतीय पुलिस दल ने सफलतापूर्वक भाग लिया। अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड के सचिव श्री के.पी.सिंह के अतिरिक्त टीम में शामिल अन्य 19 सदस्यों में के.रि.पु. बल के दो सदस्यों सहित अन्य राज्य व केन्द्रीय पुलिस बलों के सदस्य शामिल थे।

हालांकि इस प्रतियोगिता में हुए 50 विभिन्न मुकाबलों में से भारतीय पुलिस टीम ने केवल कुश्ती, तैराकी तथा दौड़कूद के तीन मुकाबलों में ही हिस्सा लिया, मगर टीम ने इन तीन खेलों में ही 39 पदक जीत कर अपनी धाक जमा दी। भारतीय पुलिस टीम ने कुल 17 स्वर्ण, 16 रजत तथा 6 कांस्य पदक जीते। जिनमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के परमजीत सिंह के 200 मीटर तथा 400 मीटर दौड़ के स्वर्ण पदक शामिल हैं।

56 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह फरवरी, 95 में देश भर में 56 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, इस अवधि में हुयी 19 मुठभेड़ों में दो आतंकवादी मारे गए।

इसी माह बल के जवानों ने देश भर में आतंकवादियों के विरूद्ध चलाए गए विभिन्न अभियानों में 14 घातक हथियार भी बरामद किए, जिनमें एक ए.के. 56 रायफल, एक ए. के. 47 रायफल, दो स्टेनगन, एक 303 रायफल, तीन पिस्तौल तथा चार रिवाल्वर भी शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के सात जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 34 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

ग्रुप केन्द्र बनतलाब में ईद

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र बनतलाब में 03 मार्च, 95 को ईद-उल-फितर के अवसर पर ग्रुप केन्द्र स्थित मस्जिद के प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ ईद मनाई गई। इस अवसर पर सभी सम्प्रदाय के लोगों ने अपने मुस्लिम सहयोगियों के गले लग कर उन्हें ईद की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर ग्रुप केन्द्र के अपर उप महानिरीक्षक महेन्द्र प्रसाद तथा मौलाना मौहम्मद हुसैन ने तकरीर भी की। कैम्प के मुख्य गेट के बाहर इस मौके पर लगाई गई दुकानों से वहां मेले जैसा माहौल बन गया। जिसमें ईद मिलन के अलावा जम्मू-अखनूर मार्ग पर आने जाने वाले लोगों को शर्बत आदि पिलाया गया।

के.रि.पु. बल द्वारा जम्मू के अन्य इलाकों में भी इस तरह के कई आयोजन किये गये, विशेष कर छत्री हिम्मत, चट्टा कैम्प तथा इस्माइलपुर के इलाकों में। इस अवसर पर के.रि.पु. बल के उप महानिरीक्षक श्री सतीश कुमार महेन्द्र तथा ग्रुप केन्द्र के

अपर उप महानिरीक्षक महेन्द्र प्रसाद ने सिरकत की और जगह जगह लोगों को इंद मुबारक दी। के.रि.पु. बल ने इस प्रकार के आयोजन से लोगों में एकता एवं भाई चारे का एक बेमिसाल नमूना पेश किया।

जोखिम निधि लाभ

माह फरवरी, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के कुल 17 मामलों में कुल 6,65,500 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इनमें केन्द्रीय कल्याण निधि की कुछ मामलों में 10,000 तथा कुछ मामलों में 12,500 रुपये की राशि भी शामिल है।

जोखिम निधि पार्ट-बी स्पेशल कल्याण निधि से भी उसके 5 सदस्यों की मृत्यु के मामले में प्रति सदस्य 35,000 रुपये की दर से कुल 1,75,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

एटा (उत्तर प्रदेश) में तैनात बल की 87 बटालियन के उप कमान्डेन्ट श्री राम सहाय सिंह को कर्तव्य के प्रति समर्पण साहस तथा उच्च कोटि की नेतृत्व कुशलता के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान 31 मई, 1994 को एटा जिले के गाहटु गांव में चलाए गए एक अभियान में उनके द्वारा निभाई गई प्रभावशाली भूमिका के लिए दिया गया है।

46 बटालियन के निरीक्षक, श्री पन्ना लाल को उनकी सेवाओं के लिए महानिदेशक महोदय की प्रशंसा डिस्क तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। एक सादे समारोह में गुवाहाटी रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने श्री पन्ना लाल को यह डिस्क तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

अनमोल वचन

दूसरे के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं बहुत भले बन जाते हैं।

—महात्मा गांधी

जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है, वह मनुष्यता से गिर जाता है।

— कोटिल्य

झगड़े से बचना उचित है। अगर उसमें पड़ ही जायें तो बैरी को अपना तेज, बल और पौरुष दिखा ही दें

— शेक्सपीयर

संकलन कर्ता-इंस्पेक्टर जयवीर सिंह

कविताएं

मैं जाऊंगा निश्चय रण में

मित्र मुझे मत रोको अब, मैं जाऊंगा निश्चय रण में,
बज्र-प्रहार से चूर करूंगा, रिपु के गर्व आनन फानन में ।।

प्रबल शक्ति यदि रिपु की होगी, मैं शहीद बन जाऊंगा,
धरा को अपनी फिर भी रिपु के, चंगुल से छुड़ा दिखाऊंगा ।।

नहीं चाहिए मुझे कभी, सुख-चैन मिले आराम मिले,
कर दूंगा मैं न्यौछावर तन, मां के आंचल को शान्ति मिले ।।

अत्याचारी, हत्यारों पर दमन चक्र चलवा दूंगा,
आंख दिखाये जन्म भूमि को, उनकी आंख निकाल दूंगा ।।

करूं समर्पण अपना जीवन, अपनी मां के आंचल के हित,
बना हुआ मैं जग में, अपनी मां के हित, मम जीवन समर्पित ।।

भव भारत के लाल सखा, आओ सब मिलकर करें पयान,
आज हमें मिलकर रखनी है, मातृभूमि के भाल की आन ।।

एक बात तुम मन में रखना, मिट जाना पर झुकना नहीं,
अचल समर में रहना प्यारे, रिपु करता हो वार जब भी ।।

ललचाये यदि दुश्मन तुमको, थैली दिखाकर मणियों की,
डगमग मत हो जाना प्यारे, कर्तव्य पथ से बंधे सभी ।।

मातृभूमि के अमूल्य उपहार से सजेगा जग में भाल तुम्हारा,

वेजयो तिरंगा फहरायेगा नील गगन कतेव्य तुम्हारा ।।

—सिपाही मनोज कुमार
49 बटालियन

अनमोल जीवन

क्या हुआ जीवन मिला तो
जिसका न कोई अर्थ है
जो उचित-अनुचित न समझे
जीता वों जीवन व्यर्थ है ।
दूसरों का हक जो छीने,
बांटता जो द्वेष है
प्यार की भाषा न जाने
कटुता, घृणा, विद्वेष है ।
जुल्म ढाये हर किसी पर
जो मिला असमर्थ है ।
क्या हुआ जीवन मिला तो
जिसका न कोई अर्थ है ।
जो समझता खुद को खुदा
करता किसी का भय नहीं
अन्याय कर क्या गम करे
जो पाप से डरता नहीं ।
शक्ति के बल लूट लेता
हो अर्थ का अनर्थ है ।
क्या हुआ जीवन मिला तो
जिसका न कोई अर्थ है ।
अन्त में सोचा तो क्या?
तू आज ही विचार कर
अनमोल जीवन, सृष्टि सृजन
इंसानियत से प्यार कर
बांट दे खुशियां सभी को

क्योंके तू समथ है ।
क्या हुआ जीवन मिला तो
जिसका न कोई अर्थ है ।

—विक्रम सिंह, उ.नि.
126 बटालियन



बल के कार्मिक दिल्ली में होली के अवसर पर गुलाल के रंग में झूमते हुए

मुख्य सम्पादक : जी. सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी।

मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, इंडीदा कला, नई दिल्ली - 110 072।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२

दूरभाष : 3262279

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-3

31 मई, 1995

10 ज्येष्ठ, शक 1917



के.रि.पु. बल के पर्वतारोहण अभियान दल के मुखिया श्री एस.एस. संधू केंद्रीय गृह राज्य मंत्री
श्री राजेश पायलट को अभियान की समाप्ति के बाद ध्वज सौंपते हुए-

सम्पादकीय

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारोत्तोलन के क्षेत्र में देश का नाम रोशन करने वाली सुश्री एन. कुंजारानी देवी और जीवन ज्योति आज के.रि.पु.बल के गौरवशाली परिवार का एक हिस्सा हैं। एन. कुंजारानी देवी और जीवन ज्योति का बल परिवार में शामिल होना बल के क्रीड़ा क्षेत्र में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। दरअसल बल की शुरू से ही नीति रही है कि वह पूरे देश से प्रतिभावान खिलाड़ियों को चुन कर उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करे। इसी नीति के तहत कुंजारानी और जीवन ज्योति को राष्ट्रीय खेल प्राधिकरण के दक्षिण केंद्र बेंगलूर में चलाए जा रहे प्रशिक्षण शिविरों में सघन प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया है।

हम आशा करते हैं कि कुंजारानी और जीवन ज्योति बल में जी.सी. रंधावा, हरी चंद, आर.एस.बल तथा खजान सिंह द्वारा डाली गयी एवं राजाराम, एस. राधाकृष्णन, राजेंद्र सिंह, प्रभजोत सिंह, शीजा मोल एवं रिग्जेन अंगमो जैसे अन्य कई प्रतिभावान खिलाड़ियों द्वारा पोषित परंपरा को और आगे बढ़ाएंगी।

लेकिन इस परंपरा को पोषित करने के लिए खिलाड़ियों के साथ साथ हमें स्वयं को भी तैयार करना होगा। सारा बोझ अकेले खिलाड़ी के कंधे पर डाल देना न्यायोचित नहीं होगा। यह विभाग का दायित्व है कि खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें सतत प्रशिक्षण एवं अभ्यास का मौका दे और इस के लिए उन्हें हर संभव सहायता उपलब्ध कराए, विशेषकर जिन प्रतियोगिताओं में हम पिछड़ जाते हैं, उन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही हाल के वर्षों में नवोदित प्रतिभाओं के प्रदर्शन को देखते हुए, जहां एक ओर हमें अधिक से अधिक अच्छे खिलाड़ियों की भर्ती बल में करनी चाहिए वहीं अपने परिवार में छिपी प्रतिभाओं को भी बाहर आने का मौका देना चाहिए।

एक बात और हमें अच्छी तरह समझ लेनी होगी कि कोई प्रतियोगिता अकेला खिलाड़ी नहीं जीतता। निस्संदेह उसकी प्रतिभा, उसकी मेहनत, उसका संघर्ष सर्वोपरि होता है। मगर उसको आधार प्रदान करने के लिए, उसकी प्रतिभा को आकार देने के लिए पूरे महकमे को उसी शिद्दत, उसी समर्पण के साथ जुटना पड़ता है। इसीलिए यदि खिलाड़ी जीतता है तो यह उस के अकेले की नहीं सब की जीत होती है।

के. रि. पु. बल पर्वतारोहण
अभियान जोगिन

केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट ने 31 मई, 1995 को के. रि.पु.बल पर्वतारोहण अभियान जोगिन के सदस्यों के सम्मान में आयोजित समारोह में बोलते हुए कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को चार जोनों में विभाजित किया जायेगा जिससे इसके सदस्यों पर अत्याधिक गतिशीलता के कारण पड़ रहे दबाव को कम किया जा सके।

उन्होंने कहा कि बल के कार्मिकों के बच्चों को उच्च एवं तकनीकी शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने के लिए पर्याप्त कोचिंग की सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। श्री पायलट ने जोर दे कर कहा कि बल के सदस्यों के लिए डाक व्यवस्था में पर्याप्त सुधार की गुंजाइश है तथा सरकार इस विषय पर गंभीरता से विचार कर रही है। उन्होंने अभियान जोगिन दल के सदस्यों को अभियान सफलतापूर्वक पूरा करने पर बधाई दी।



अभियान दल के सदस्य जोगिन चोटी की तरफ बढ़ते हुए।

बल के अभियान जोगिन दल के सभी दस सदस्य 18 मई, 1995 को प्रातः 7 बजे और 10.40 बजे क्रमशः 6116 मीटर ऊंची जोगिन-3 और 6465 मीटर ऊंची जोगिन-1 पर्वत चोटियों पर चढ़ने में सफल रहे थे। इस अभियान दल को 02 मई, 95 को दिल्ली में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने ध्वज प्रदान कर विदा किया था। इस अभियान दल के नेता उपनिदेशक श्री एस. एस. संधू ने स्लाइड प्रोजेक्शन के माध्यम से अपने इस अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बाद में उन्होंने श्री पायलट को इन चोटियों पर फहराये गये राष्ट्रीय तथा के.रि.पु.बल ध्वज भी सौंपे। उन्होंने श्री पायलट को अभियान दल के सभी सदस्यों का परिचय भी दिया। समारोह के अंत में महानिरीक्षक (प्रशिक्षण एवं मुख्यालय) श्री सुरेश राय ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अभियान दल में श्री संधू के अलावा उप कमान्डेन्ट सतपाल रावत (उप नेता) तथा श्याम चंद, सहायक कमान्डेन्ट सुनन्द कुमार तथा अशोक सान्याल, इन्स्पेक्टर एम.एम. सिंह, सब इन्स्पेक्टर पी.के.अटल, कांस्टेबल मिंगमा शेरपा, दिकेश थापा तथा राजन तमांग अभियान दल के सदस्य के रूप में शामिल थे। इनके अतिरिक्त अभियान दल के लिए संचार तथा अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए डा. पुलोक घोष, नायक रेडियो आपरेटर सुभाष सिंह तथा राजेश सिंह, कुक सुरेंद्र लाल, वाटर कैरियर जगदीश प्रसाद तथा नर्सिंग सहायक तैयूब खान भी आधार शिविर तक अभियान दल के साथ थे। इन सभी सदस्यों को मुख्य अतिथि महोदय ने एक एक ट्राफी भी भेंट की।



अभियान दल के सदस्य नई दिल्ली से विदा होने से पूर्व महानिदेशक महोदय के साथ



जोगिन-3 चोटी पर अभियान दल के सदस्य



अभियान दल के सदस्यों से परिचय प्राप्त करते हुए श्री राजेश पायलट

इससे पहले बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए कहा कि के.रि.पु. बल का पर्वतों के साथ पुराना व्यवसायिक संबंध रहा है। इस अभियान का उद्देश्य भी केवल बल में रोमांचक खेलों को बढ़ावा देना ही नहीं था अपितु इसका एक उद्देश्य बल के सदस्यों को पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देना भी है ताकि पर्वतीय क्षेत्रों में उनकी तैनाती के दौरान उनके इस अनुभव का लाभ उठाया जा सके। ज्ञातव्य है कि के.रि.पु. बल के सदस्य व्यापक रूप से जम्मू-कश्मीर,

अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, नागालैंड तथा सिक्किम के पर्वतीय इलाकों में तैनात है।

बल में रोमांचक खेलों की शुरुआत 14 दिसम्बर, 1994 को कलकत्ता में सम्पन्न हुए अभियान गंगा सागर के साथ हुयी थी। इस अभियान दल के 30 सदस्यों ने हरिद्वार से कलकत्ता तक का 2161 किमी लम्बा सफर चार नावों द्वारा 61 दिन में पूरा किया था। अभियान जोगिन रोमांचक खेलों की इसी श्रृंखला की दूसरी कड़ी थी।



अभियान दल के नेता श्री संधू को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए श्री राजेश पायलट



श्री राजेश पायलट को के.रि.पु. बल ध्वज लौटाते हुए श्री संधू



श्री राजेश पायलट को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महानिदेशक श्री एस. वी.एम. त्रिपाठी

पदक वितरण समारोह आतंकवाद से मुकाबले के नये तरीके ढूँढे

-गृह मंत्री

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण ने बल के पदक वितरण समारोह में बोलते हुए कहा कि केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बल आज के बदलते हुए हालात के अनुरूप आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए नये तरीके खोजें और उन्हें अपनायें जिससे देश की एकता को कोई खतरा न रहे। उन्होंने कहा कि नये तौर तरीके ऐसे होने चाहिए जिससे केन्द्रीय पुलिस बल अधिक प्रभावी हो सकें। इस समारोह का आयोजन 21 अप्रैल, 95 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में किया गया था। गृह मंत्री इस अलंकरण समारोह में अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित कर रहे थे।

श्री चव्हाण ने बल के अधिकारियों और जवानों को उत्कृष्ट कार्य के लिए पदक प्राप्त करने हेतु बधाई दी और कहा कि वे बदली हुई जरूरतों के अनुरूप और कर्तव्यनिष्ठा दिखायें। बल की सराहना करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि अभी हाल के चुनावों में उन्हें बड़े पैमाने पर एक के बाद दूसरे राज्य में लगातार लगाया गया और वे अपेक्षाओं पर पूरी तरह खरे उतरे हैं।

इसी तरह बल के अधिकारियों और जवानों को शांति सेना के भाग के रूप में विदेशों में भेजा गया। वहां भी उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां पूरी तरह निभाईं।

बल के महानिदेशक द्वारा उठाये गए कुछ मुद्दों का हवाला देते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि केन्द्रीय पुलिस बलों को सेना की तरह अपने कर्मियों की कल्याण गतिविधियों के लिए हर साल धन दिया जाएगा।

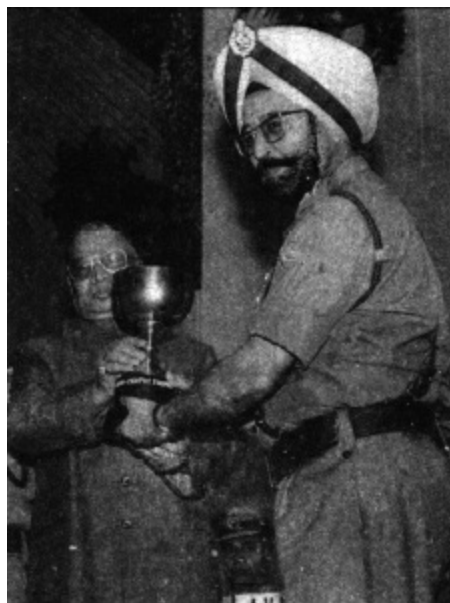


72 बटालियन के कांस्टेबल सुरेश रावत को शौर्य वीरता का पुलिस पदक प्रदान करते हुए गृह मंत्री श्री चव्हाण ने इससे पहले बल के अधिकारियों, जवानों और बटालियनों को श्रेष्ठ

कार्यों के लिए पदक तथा टाफेयां प्रदान कीं। 41 कामैकों को वीरता के लिए पुलिस पदक से, 53 को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक और सात को विशिष्ट सेवाओं के राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत किया गया। वीरता के लिए पुलिस पदक बार और प्रधानमंत्री का जीवन रक्षा पदक एक-एक को प्रदान किया गया।

बल की श्रेष्ठतम बटालियन टाफी रेपिड एक्शन फोर्स की 99 बटालियन को और श्रेष्ठतम ग्रुप केन्द्र टाफी हैदराबाद ग्रुप केन्द्र को प्रदान की गई। जम्मू-कश्मीर में श्रेष्ठतम बटालियन टाफी 47 बटालियन को और उत्तर पूर्वी क्षेत्रों की श्रेष्ठतम बटालियन टाफी 13 बटालियन को प्रदान की गई।

प्रारंभ में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने मंत्री महोदय का स्वागत करते हुए अनुरोध किया कि बल के कर्मियों की निर्धारित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराई जाए और उनके परिवार कल्याण कार्यों के लिए हर साल धनराशि दी जाए। श्री त्रिपाठी ने बल देते हुए कहा कि बल की युनिटों को निर्धारित ड्यूटियों पर ही लगाया जाये जिससे वे अपेक्षाओं पर पूरी तरह खरा उतर सकें।



अपर उप महानिरीक्षक श्री बी.एस. रेखी गृह मंत्री से सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र (हैदराबाद) टाफी ग्रहण करते हुए



गृह मंत्री से सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक ग्रहण करती हुयी उपनिदेशक (स्थापना) डा. दीपा मेहता

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष की शपथ



महानिदेशालय के कार्मिकों को आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष की शपथ दिलाते हुए महानिदेशक महोदय देश भर में फैले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने 19 मई, 95 को अपनी अपनी युनिटों में आतंकवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष की शपथ ली। महानिदेशालय में कार्मिकों को यह शपथ बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने दिलायी।

ज्ञातव्य है कि 21 मई, 95 को पड़ने वाली भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की पुण्य तिथि को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर पूरा देश आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष की शपथ लेता है।

चूंकि के.रि.पु.बल देश की आंतरिक सुरक्षा में लगा सबसे बड़ा बल है। अतः उसके लिए इस दिवस का महत्व विशेष रूप से बढ़ जाता है।

इस अवसर पर बल के कार्मिकों ने शपथ ली कि हम भारतवासी अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परम्परा में दृढ़ विश्वास रखते हैं तथा निष्ठापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का डट कर विरोध करेंगे। हम मानव-जाति के सभी वर्गों के बीच शांति, सामाजिक सद्भाव तथा सूझबूझ कायम करने और मानव जीवन मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते हैं।

के.रि.पु.बल ने 97 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अप्रैल, 95 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी 11 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 97 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इन मुठभेड़ों में पांच आतंकवादी मारे गए।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 49 घातक हाथियार तथा 6026 सजीव गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में चार ए.के.56 रायफलें, 13 पिस्तौलें, 17 देशी बंदूकें, तीन रिवाल्वर, छः कार्बाइन, एक एस.बी.बी.एल.गन, एक डी.बी.बी.एल.गन, एक स्टेन गन तथा दो रायफलें शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल का एक वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुआ तथा पांच गंभीर रूप से घायल हुए।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह अप्रैल, 95 में मृत्यु के कुल 34 मामलों में कुल 13,35,500 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला केन्द्रीय कल्याण निधि की 10,000 रुपये तथा 12,500 रुपये की राशि भी शामिल है।

बेस अस्पताल में नया मनोरोग वार्ड

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बेस अस्पताल, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में नया मनोरोग चिकित्सा वार्ड खोला गया है। यह अस्पताल देश में बल के तीन शीर्ष अस्पतालों में से एक है। बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 20 मई, 95 को इस नये वार्ड का उद्घाटन किया।

7.69 लाख रुपये की लागत से बने अस्पताल के इस वार्ड भवन में दस बेड हैं और यह मनोरोग चिकित्सा के आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है। इस अस्पताल में मनोरोग चिकित्सा संबंधी पहले छोटी ईकाई थी जो जनरल वार्ड के एक भाग के रूप में काम करती थी।

महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने इस अवसर पर नये वार्ड की सुविधा उपलब्ध होने पर संतोष प्रकट करते हुए कहा कि बल के अधिकारियों व जवानों का मानसिक रूप से स्वस्थ होना बहुत जरूरी है, क्योंकि वे जनसाधारण के बीच काम करते हैं। उनका मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए योजना बनाए जाने की जरूरत है क्योंकि उन्हें मानसिक दबाव में काम करना पड़ता है।



महानिदेशक मनोरोग वार्ड के एक मरीज को मिष्ठान्न प्रदान करते हुए

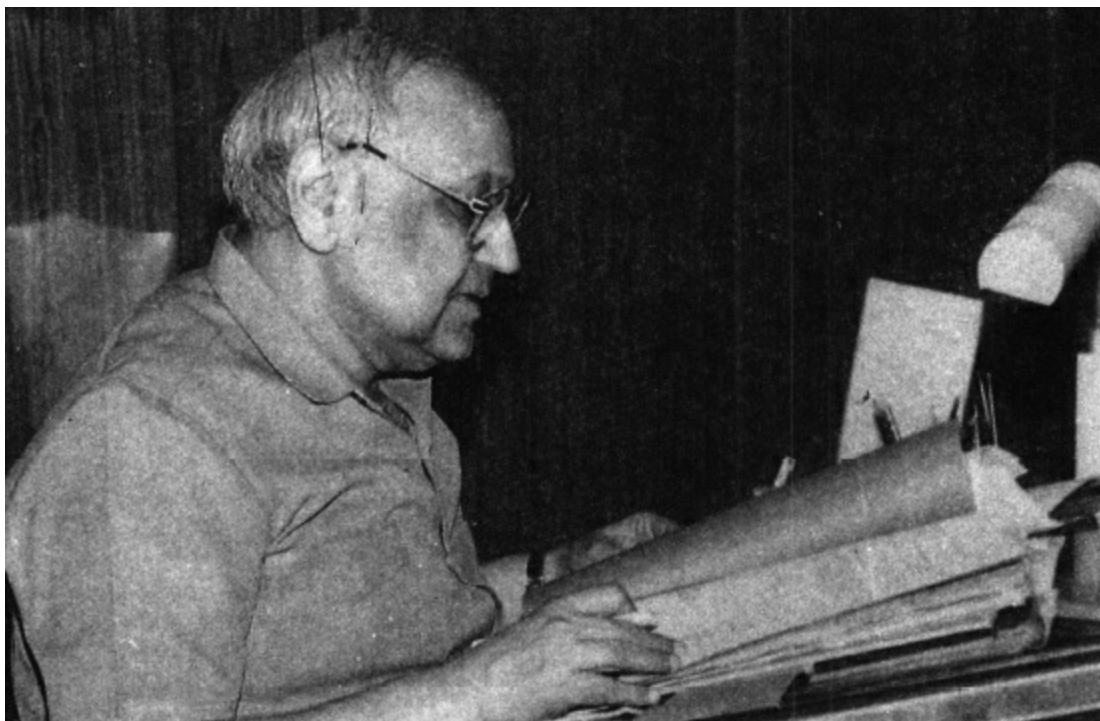


महानिदेशक बेस अस्पताल के नए मनोरोग वार्ड का उद्घाटन करते हुए
इस अवसर पर श्री त्रिपाठी द्वारा उत्कृष्ट काम के लिए बल के अधिकारियों व
जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क और प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए। श्री

ए.ए.सेट्टीको, पुलिस महानिरीक्षक (आर.ए.एफ), श्री बी.एस. नारंग कमान्डेन्ट, डा. एस.एन. पटनायक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी सहित 17 अधिकारियों को महानिदेशक का प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया। डा.एस.एन. पटनायक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा.मौहम्मद सादिक, चिकित्सा अधिकारी, श्री आर. रामानुज, द्वितीय कमान अधिकारी, श्रीमती आनन्द वली नायर, उप निरीक्षक सहित 14 अधिकारियों व जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से अलंकृत किया गया।

एस.एन.माथुर

एक परिचय



अपने कार्यालय में कार्यरत श्री एस.एन. माथुर

30 अप्रैल, 1995 को महानिरीक्षक (संभरण) पद से सेवानिवृत्त हुए श्री एस.एन.माथुर, के.रि.पु.बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के पहले बैच के अधिकारी थे। 19 अप्रैल, 1937 को जन्मे श्री एस.एन.माथुर 09 दिसम्बर, 1961 को के.रि.पु. बल परिवार में शामिल हुए।

माउंट आबू राजस्थान में भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों के साथ बेसिक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद अपने सेवा काल में उन्होंने देश के लगभग हर संवेदनशील हिस्से में अपने कर्तव्य को अंजाम दिया। पंजाब, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, बिहार, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में आतंकवाद या अन्य संकट की घड़ियों में

उनके द्वारा प्रदान किए गए कुशल नेतृत्व एवं कर्तव्य कौशल को आज भी उनके सहयोगी गर्व के साथ याद करते हैं।

विभिन्न बटालियनों की स्वतंत्र कमान के अतिरिक्त श्री माथुर बल के मुख्यालय में परिचालन, प्रशासन तथा स्थापना जैसी महत्वपूर्ण शाखाओं में सहायक निदेशक के रूप में भी नियुक्त रहे।

उप निदेशक परिचालन के पद पर रहने के पश्चात्, महानिरीक्षक के रूप में परिचालन(पंजाब) तथा संभरण विभागों के वह मुखिया रहे। महानिरीक्षक परिचालन के उनके कार्यकाल के दौरान पंजाब के आतंक भरे माहौल में चुनावों को निष्पक्ष ढंग से सम्पन्न कराने के लिए बल के कार्मिकों की भूमिका कोई छिपा ढका तथ्य नहीं है।

नवनिर्मित पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक के रूप में उन्हें एक नये सेक्टर के गठन एवं विकास की पूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गयीं। अपने इस कार्यकाल के दौरान इस सेक्टर की पूरे देश में फैली 12 बटालियनों, दो रेंज कार्यालयों, तथा तीन ग्रुप केन्द्रों को उन्होंने कुशल प्रशासनिक नेतृत्व प्रदान किया।

महानिदेशालय में महानिरीक्षक संभरण के पदभार के अतिरिक्त उनके अंतिम कार्यभार में महानिरीक्षक पश्चिम सेक्टर का अतिरिक्त पदभार भी शामिल रहा। इस दौरान वह गोवा तथा महाराष्ट्र में हुए चुनावों में अर्द्ध सैनिक बलों के मुख्य समन्वयक भी रहे।

अपने सेवा काल के दौरान श्री माथुर ने आंतरिक सुरक्षा से संबंधित कई कोर्सों, सेमिनारों तथा कार्यशालाओं में भाग लिया।

श्री एस.एन.माथुर को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवाओं के राष्ट्रपति के पुलिस पदक, सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक, पुलिस (स्पेशल ड्यूटी) पदक, 25वां स्वतंत्रता दिवस पदक तथा महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया।

नयी उप वित्त सलाहकार

सुश्री एल. एन. तोछांग ने 01 मई, 95 को के.रि.पु. बल मुख्यालय में उप वित्त सलाहकार का पदभार संभाल लिया। मूलतः मिजोरम की निवासी सुश्री तोछांग की शिक्षा दीक्षा शिलांग (मेघालय) में हुई है।



सुश्री तोछांग 1984 में इंडियन सिविल एकाउंट्स सर्विस में शामिल हुईं। अपने नौ साल के सेवाकाल के दौरान वह गृह मंत्रालय, मानव विकास संसाधन मंत्रालय तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय के लेखा विभागों में कार्य कर चुकी हैं। बल परिवार में शामिल होने से पूर्व वह कृषि मंत्रालय में कंट्रोलर आफ एकाउंट्स पद पर कार्यरत थीं।

भ्रमण, अध्ययन तथा लेखन उनकी मुख्य रुचियां हैं।

माह अप्रैल, 1995 में बल के मृत कार्मिक

माह अप्रैल, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

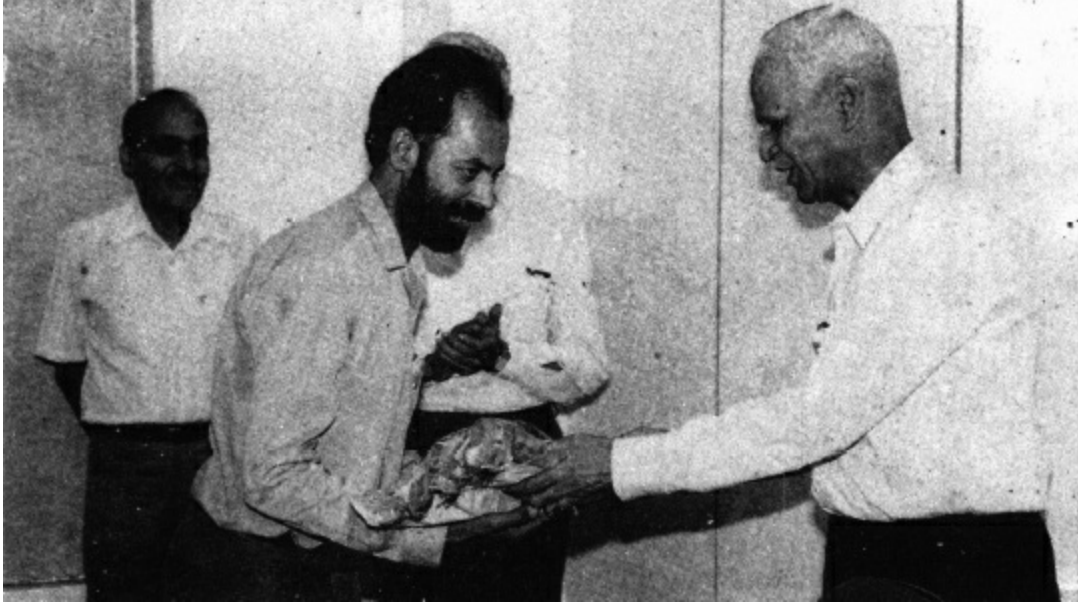
कांस्टेबल गुलाब सिंह (121 बटा.), कांस्टेबल एस. सुरेश (5 बटा.) सब-इंस्पेक्टर बी.आर. मंडल (आर.टी. सी-चार), कांस्टेबल होली राम दास (33 बटा.), कांस्टेबल एस.डी.सोरेन (प्रथम सिगनल बटा.), हैड कांस्टेबल अमर नाथ सिंह (109 बटा.), हैड कांस्टेबल (आर्मरर) राम सिंह (8 बटा.), नायक पारस सिंह (80 बटा.), नायक जे.एन.नोबियल (47 बटा.), नायक कल्याण सिंह (71 बटा.), नायक श्री जयन (63 बटा.), सब-इंस्पेक्टर वरूण सामंते (ग्रुप केन्द्र दीमापुर), बारबर हरध्यान ठाकुर (एस.जी.सी.), कांस्टेबल के.पी.रविशाह (120 बटा.), वाटर कैरियर राम बिलास सिंह (130 बटा.), कांस्टेबल पारितोष पॉल (19 बटा.), सब इंस्पेक्टर शेखर गुरंग (67 बटा.), हैड कांस्टेबल ड्राइवर ई.जे. माइकल (18 बटा.), कांस्टेबल एन. बासावराजू (80 बटा.), कांस्टेबल राज कुमार (133 बटा.), कांस्टेबल दक्तार प्रधान (23 बटा.), कांस्टेबल कारपेंटर एन.वेटकेट्स मार्ल (42 बटा.), कांस्टेबल एन.एस.गोदान (112 बटा.), कांस्टेबल बृजभान सिंह (46 बटा.), कांस्टेबल सतनाम सिंह (ग्रुप केन्द्र बनतलाब), कांस्टेबल राजेश खर्का (ग्रुप केन्द्र दीमापुर), सफाई कर्मचारी स्नातक मालाकर (32 बटा.), कांस्टेबल ड्राइवर सुरेन्द्र ठाकुर (55 बटा.), कांस्टेबल विजय

कुमार मांझी (55 बटा.), फामोसेस्ट जे.सी. महाजन (112 बटा.), इंस्पेक्टर एस.डी. शर्मा (132 बटा.), नायक लालजी सिंह (53 बटा.), हैड कांस्टेबल विजय महंतो (21 बटा.), हैड कांस्टेबल ड्राईवर पी. सी.मौर्य (83 बटा.), कांस्टेबल अवतार सिंह (37 बटा.), श्री आर.जी.मयाल, प्रशासनिक अधिकारी (ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर), कांस्टेबल महाबीर सिंह (75 बटा.)।

अनमोल वचन

घोड़े की लगाम जितनी कड़ी होगी उतना ही वह धीरे चलेगा।
कानून पाप को खोज सकता है किन्तु मिटा नहीं सकता।
अभिमान मनुष्य को अपने दोष देखने का अवसर ही नहीं देता
स्वार्थ मनुष्य के ज्ञान को हर कर उसे अंधा बना देता है।
क्रोध को वैसे ही दूर रखना चाहिए, जैसे सांप और बिच्छू दूर फेंका जाता है।
वार्तालाप बुद्धि को मूल्यवान बना देता है, किन्तु एकांत प्रतिभा की पाठशाला है।
जंजीरें, जंजीरें ही हैं, चाहे वे लोहे की हो या सोने की। ये समान रूप से तुम्हें गुलाम बनाती हैं।
नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़वाहट नहीं छोड़ता, इसी तरह नीच व्यक्ति सज्जनों के साथ रह कर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता है।
जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो फिर भय किसका और किसलिए?
दुनिया है कि मतलब से मतलब है, रस चूस लेती है, छिलका और गुठली फेंक देती है।

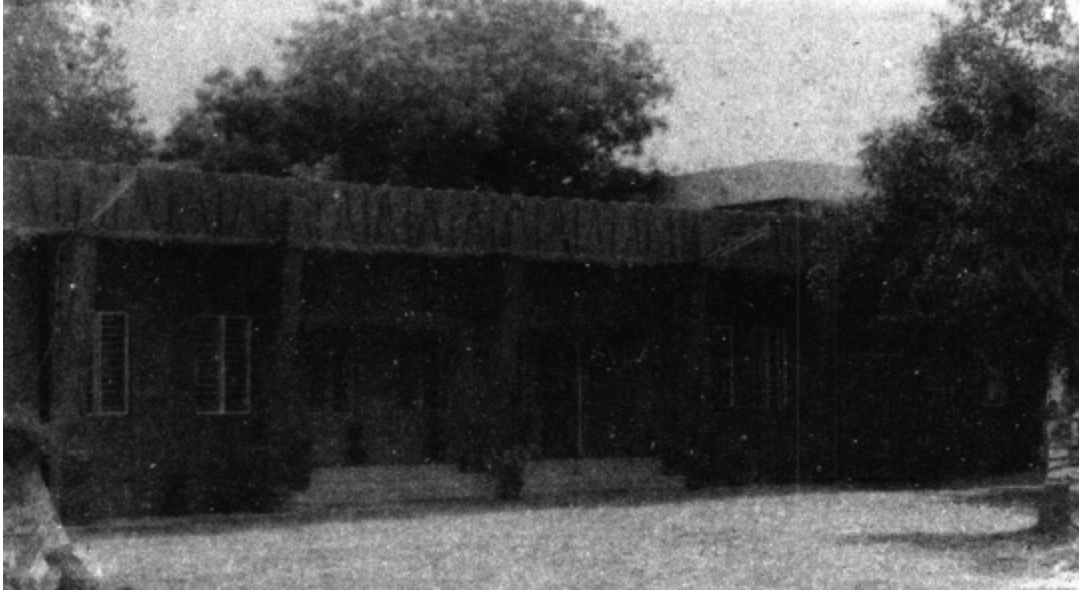
फोटो फीचर



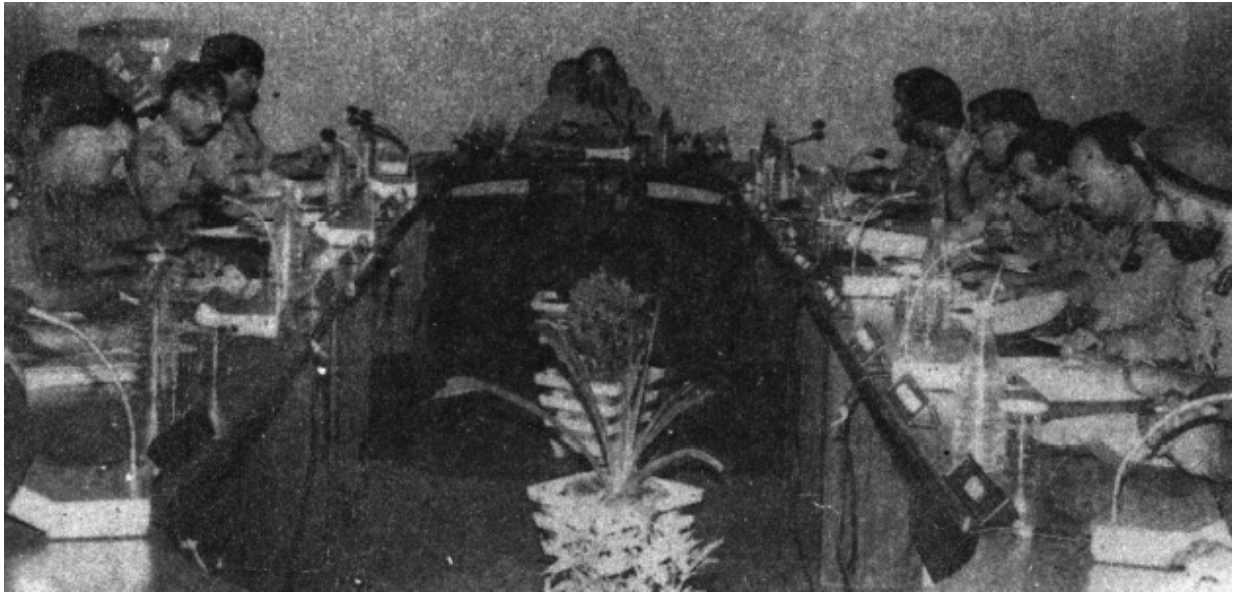
उपनिदेशक (लेखा) श्री एस.एस. संधू की के.रि.पु. बल में प्रतिनियुक्ति की अवधि समाप्त होने पर उन्हें विदाई देते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी।



सहायक निदेशक (लेखा) श्री सेवक हेमराजानी को सेवानिवृत्ति पर विदाई देते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी।



नई दिल्ली बेस अस्पताल में खोले गए मनोरोग चिकित्सा विभाग की नई इमारत।



रेपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी हाल ही में हुए आर.ए.एफ कमांडेंटो के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए।



बंगलौर में हुए अखिल भारतीय पुलिस खेलों में विजेता बल की कबड्डी टीम बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी के साथ।



हाल ही में सम्पन्न हुए विधान सभा चुनावों के दौरान एक मतदान केंद्र पर तैनात बल का कार्मिक।

हवलदार रंजीत सिंह

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

1965 में हवलदार रंजीत सिंह ने रन आफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक

पाकिस्तानी ब्रिगेड के साथ जिस हिम्मत और बहादुरी के साथ लोहा लिया उस की मिसाल आज भी गर्व के साथ दी जाती है। 1978 में 35 वीं बटालियन में रंजीत सिंह के साथ काम कर चुके अब 93 बटा. के डिप्टी कमांडेंट दीप कुमार सिरोही प्रस्तुत कर रहे है उस दिन का पूर्ण ब्यौरा।

एम.एम.जी. कोर्स में प्रथम आने के बाद दूसरी वाहिनी के नं. 1173 हवलदार रंजीत सिंह कच्छ के रन में पाकिस्तानी सरहद पर सरदार पोस्ट पर एम.एम.जी. नं. 2 के रूप में तैनात हुए, जहां पानी की बहुत कमी थी तथा धूल भरी आंधी चलती थी। एम.एम.जी. के लिए एक बाल्टी पानी प्रतिदिन मिलता था। औरों की तरह वह उस बाल्टी पानी से नहाता नहीं था बल्कि एम.एम.जी का पानी रोज बदलता था।

आठ अप्रैल, 1965 को प्रातः कम्पनी कमांडर छुट्टी चले गए तथा पोस्ट वालों ने रात को जम कर बड़ा खाना किया। देर तक नाच गाना चला। हवलदार रंजीत सिंह न तो मंदिरा लेता था न मांस व सिगरेट का सेवन करता था। वह सुबह तकरीबन 3 बजे उठा तथा पानी की बोतल ले कर पोस्ट के बाहर जंगल के लिए आंख मलता हुआ चल दिया।

रात की चांदनी में उसने 2000 गज की दूरी पर ऊँटों पर सवार पाकिस्तानी फौज के सिपाहियों को देखा जो कि “सरदार पोस्ट” को घेरे हुए थे। पानी की बोतल उसके हाथ से छूट गई और वह भाग कर अपनी पोस्ट पर वापस आया। एम.एम.जी. पोस्ट पर आकर उसने अपने एम.एम.जी. 2 सिपाही हनुमान सिंह को उठाया और कहा कि “एम्पुनेशन” के सारे बक्से एम.एम.जी. के पास रख दो। एम.एम.जी में “एम्पुनेशन” का पट्टा चढ़ा कर तथा उसे “काक” कर के हवलदार रंजीत सिंह ने अपना अंगूठा “थम पीस” के पास रखा और निशाना साधा।

इतने में प्रातः 0330 बजे पाकिस्तानी फौज की ओर से चेतावनी मिली कि “हमारी ब्रिगेड ने तुम्हारी सरदार पोस्ट को चारों तरफ से घेर लिया है तथा हमारे पास भारी तोपें भी हैं। हथियार डाल दो वरना मक्खी मच्छरों की तरह मसल दिए जाओगे।”

हवलदार रंजीत सिंह ने एम.एम.जी. की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया “टाइपाड पर तुम्हारी यह अम्मा 360 डिग्री पर घूमती है बाकी 5 डिग्री ऊपर वाले के हाथ में है। जब तक एक भी गोली या सांस बाकी है तब तक नमक का हक अदा करूंगा”, यह जवाब देते ही हवलदार रंजीत सिंह ने एम.एम.जी. के “थम पीस” को दबा दिया। गोलियों की बौछारों से पाकिस्तानी सिपाही चिल्लाते हुए कटे पेड़ों की तरह गिरने लगे। पोस्ट पर अब भगदड़ मच गई, सबकी खुमारी उतर गई तथा रात्रि वस्त्रों में लोग इधर-उधर भागने लगे।

इस ब्रिगेड के हमले में पाकिस्तानी फौज की बलूच रेजीमेंट की तीन क्रेक बटालियन के फायर के अलावा भारी आर्टिलरी का तोपखाना भी बमबारी कर रहा था। लेकिन बल की तरफ से रंजीत सिंह अकेला ही सिंह की तरह गरज रहा था। उसकी एम.एम.जी. 360 डिग्री पर चारों ओर आग उगल रही थी। एम.एम.जी नं. 2 सिपाही हनुमान सिंह हनुमान चालीसा पढ़ता हुआ लगातार “एम्पुनेशन” के बक्से

लाता जा रहा था ।

यह सिलसिला भोर प्रातः शुरू हो कर देर रात तक चला पर हवलदार रंजीत सिंह लगातार फायर करता रहा तथा उसने अकेले ही सारे दिन एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को रोके रखा । यही नहीं उसने पाकिस्तानी फौज के एक लांस नायक तथा तीन सिपाहियों को भी जिन्दा पकड़ कर अपनी पोस्ट के साथियों का हौसला बढ़ाया । एक वायरलैस आपरेटर ने गोली खाने के बाद भी मरते मरते मदद के लिए सिगनल भेज डाला । दूसरे आपरेटर के पेट में एक पाकिस्तानी सिपाही से हाथापाई में संगीन जा घुसी । उसकी समाधि आज भी सरदार पोस्ट पर बनी है जहां लोग आज भी श्रद्धा से फूल चढ़ाते हैं ।

10 अप्रैल, 1965 को सुबह सरदार पोस्ट पर मदद के लिए हिन्दुस्तानी फौज पहुंची । तब तक हवलदार रंजीत सिंह ने ही मोर्चा सम्भाला । क्या ऐसे शौर्य की गाथा की मिसाल अन्य किसी पुलिस फोर्स में मिल सकती है । हवलदार रंजीत सिंह को वीरता के लिए राष्ट्रपति पदक मिला तथा हरियाणा सरकार द्वारा उन्हें उपहार स्वरूप भूमि प्रदान की गई । बाद में वह उपाधीक्षक पद तक पदोन्नत हुए तथा मुझे उनके साथ 1978 में 35 वाहिनी में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

सरदार पोस्ट की घटना को याद करते हुए वह अक्सर कहा करते थे कि सौंपे गए कार्य को पूर्ण समर्पण और लगन से करना ही सच्ची देशभक्ति है । मांस, मदिरा तथा सिगरेट का सेवन न करने वाले किसी से कमजोर नहीं होते । इन दो बातों के अतिरिक्त एक और जिस बात पर उन्होंने अपने पूरे सेवाकाल में जोर दिया, वह थी सुबह जल्दी उठना । और उनकी यही एक आदत थी, जिसने समय रहते सरदार पोस्ट पर दुश्मन के कब्जे की योजना को नेस्तनाबूद कर दिया था ।

सच्चे बोल-कड़वे धूंट

तरून सरकार : तुम्हारे पास आखिर कितने रूपये थे जो लड़की की शादी के बाद भी तीस हजार बच गये ।

सुनील कुमार : भईया ना पूछो तो ही अच्छा है । यह रूपये बचे नहीं, बल्कि भविष्य निधि से निकाली गई राशि है, जो शादी के दो मास बाद आज मिली है ।

विमल टोपनो : मां मर गई, फिर भी छुट्टी नहीं मिल रही । समझ में नहीं आता क्या करूं ।

बनारसी : घर से तार मंगाया था क्या?

टोपनो : नहीं, फोन से बताया है ।

बनारसी : अरे पागल मां मरे चाहे बाप, तार मंगाना तो जरूरी है, वरना अतिरिक्त मुफ्त पास और छुट्टी कैसे मिलेगी ।

अंगईया : छुट्टी जाने पर बच्चों को एक सप्ताह बाद पता चलता है कि यह मेरा पापा है।

कास्टे : सी.एल.की तो बात ही छोड़ दो; ई. एल. भी मुश्किल से साल-दो साल में एक बार मिल पाती है। फिर भला इसमें बच्चों का क्या कसूर।

गुलाब : यार एक बात समझ में नहीं आई जब कमान्डेन्ट अपने सहायक कमान्डेन्टों को छुट्टी स्वीकृत करके स्पेयर कर देता है, तो फिर ये आप्स कलीयरेन्स वाली क्या बीमारी है।

विजय : ताकि वे रिजर्वेशन न करा सकें।

रोशन : भई वाह! यह ओ.सी. भी अजीब है। मुझे तो मां के मरने पर भी छुट्टी नहीं दी और राम की मां भी नहीं मरी, फिर भी उसे फौरन छुट्टी मिल गई।

सुनील : हां! यहीं तो है दस रूपये खर्च करने की करामात। रामू ने झूठा तार जो मगाया था।

काकड़े : अरे मोहन यह चाय और समोसा आज किस खुशी में खिला रहा है।

मोहन : बार बार कम्पनी मूवमेंटों के कारण चार महीने बाद आज घर से पत्र मिला है, इसलिये।

डाकिया : सर, ये फोर्स वाले तो रोज रोज बदल जाते हैं। उनका कोई अता पता ही नहीं है। क्या करूं, यह ढेर सारे पत्र तो बुरी तरह मेरा सिर दर्द बन गये।

पोस्ट मास्टर : ज्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं। इन्हें एक थैले में डालता चल। जिस दिन थैला भर जाये तो चुपचाप दूर ले जा कर रद्दी कह कर जला देना।

तरून सरकार : क्या बात है तुम दो साल से छुट्टी जाने का नाम ही नहीं ले रहे, घर वालों से नाराज हो गये क्या।

चन्डी प्रसाद : सोचता हूं छुट्टी की अर्जी क्या बहाना बना कर दूं, क्योंकि जो छुट्टी मांगता है अधिकारी उसे अपना सिरदर्द समझाने लग जाते हैं।

—विजयपाल सिंह, सहायक कमान्डेन्ट
111 बटालियन

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्युजपेपर्स सेंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान
2. प्रकाशन की अवधि
3. प्रिंटर का नाम

- नई दिल्ली
- वर्ष में आठ बार
- जी.सी. द्विवेदी

4. नागरिकता	- भारतीय
5. पता	- ब्लॉक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	- उपर्युक्त
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	- उपर्युक्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	- महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लॉक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली -110 003
मैं जी.सी.द्विवेदी एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।	
31 मार्च, 1995	
ह. जी.सी. द्विवेदी प्रकाशक के हस्ताक्षर	



के.रि.पु. बल पर्वतारोहण अभियान जोगिन के सदस्यों को दिल्ली से रवाना करने से पूर्व उनसे परिचय प्राप्त करते हुए
बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

मुख्य सम्पादक : जी. सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता। चरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी।

मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झंडीदा कलां, नई दिल्ली - 110 072।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२

दूरभाष : 3262279

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-4

30 जून, 1995

9 आषाढ़, शक 1917



श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी, महानिदेशक के.रि.पु. बल, गृहमंत्री श्री एस.वी. चव्हाण से प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए मिली शील्ड ग्रहण करते हुए

-फोटो-एस के सन्ना

सम्पादकीय

देश के सभी अर्द्धसैनिक बलों के प्रशासनिक कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को इस वर्ष तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। प्रथम स्थान पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तथा दूसरे स्थान पर भारत तिब्बत सीमा पुलिस रहा। गृह मंत्रालय की ओर से दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में इन तीनों बलों के महानिदेशकों को यह शील्ड केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण ने प्रदान की।

बल के लिए यह सम्मान प्राप्त करना हर्ष का विषय तो है ही, किंतु इससे एक तथ्य ओर उद्घाटित होता है कि बल के जो जवान अपनी मातृ भूमि की अस्मिता की रक्षा के लिए प्राण हथेली पर लिए घूम रहे हैं, वह अपनी राजभाषा के सम्मान के प्रति भी पूर्णतः सजग हैं।

के.रि.पु.बल एक ऐसा बल है, जिसमें देश के हर कोने से आए हर भाषा, जाति तथा वर्ग के लोग हैं। यह हो सकता है कि दक्षिण से इस परिवार में शामिल हुआ कोई जवान शुरू में जब पंजाब में तैनात हो, तो वहां की भाषा उसके लिए अनजान हो, मगर महज दो चार महीनों के बाद ही वह पंजाब के किसी दूर दराज के इलाके में कैम्प फायर के समय भांगड़े की बोलियों पर ठुमके लगाता दिखेगा। इसी प्रकार यदि बल की किसी कम्पनी के लंगर में पूर्वी उत्तर प्रदेश का निवासी अपने तमिल साथियों के साथ चटर पटर तमिल बोलता दिखे, तो किसी बाहर के व्यक्ति के लिए तो यह एक अनहोनी बात हो सकती है, लेकिन के.रि.पु. बल के जवानों और अधिकारियों के लिए यह रोज दिखाई पड़ने वाले सामान्य दृश्य हैं।

इस प्रकार के.रि.पु. बल के सदस्य भाषायी तौर पर देश के भिन्न भिन्न इलाकों के बीच की दूरियों को जिस प्रकार कम करने में लगे हैं, उसे देश की एकता और अखंडता की सुरक्षा के उनके प्राथमिक कार्य से किसी भी प्रकार कम करके नहीं देखा जाना चाहिए। हमारे जवान विभिन्न प्रांतों की संस्कृति, भाषा एवं रहन सहन की दूरियों को कम करने के लिए सेतु का कार्य करते हैं। इसीलिए जब कभी खबर आती है कि सुदूर दक्षिण स्थित हमारे पल्लिपुरम ग्रुप केंद्र में हिंदी का बहुतायत से प्रयोग होता है, तो हमें आश्चर्य नहीं गर्व होता है, क्योंकि एक अघोषित जिम्मेदारी हम पर यह भी है।

किंतु इस सम्मान से मिले गर्व के साथ साथ हमारे लिए यह समय आत्मविश्लेषण का भी है। हमें सोचना है कि 1993 में जहां हम पहले स्थान पर थे, वहां इस वर्ष तीसरे स्थान कैसे उतर आए। क्योंकि किसी भी सम्मान की सार्थकता इसी में है कि भविष्य में या तो उसे सुधारा जाए या फिर अपनी स्थिति में बरकरार रखा जाए। इस वर्ष के सम्मान ने हमें हर्ष के साथ साथ विचार के लिए यह प्रश्न भी दिया है।

रांची में अस्पताल की नयी इमारत



सिगनल ग्रुप केंद्र की नयी इमारत का उद्घाटन करते हुए उपनिदेशक संचार श्री श्याम प्रसाद

रांची सिगनल ग्रुप केंद्र द्वारा काफी लम्बे समय से एक व्यवस्थित अस्पताल इमारत की जरूरत महसूस की जा रही थी। सिगनल ग्रुप केन्द्र की इस जरूरत को अस्पताल के लिए एक नयी इमारत बना कर पूरा कर दिया गया है। रांची स्थित सिगनल ग्रुप केन्द्र तथा सी.टी.सी. (टी) के कार्मिकों के लिए चिकित्सकीय सुविधाएं अब और भी सहजता से उपलब्ध होंगी। पहले यह अस्पताल एक अस्थायी इमारत में स्थित था।

इस नयी दस बिस्तर वाली अस्पताल इमारत का उद्घाटन उपनिदेशक (संचार) श्री श्याम प्रसाद ने 21 मई, 1995 को किया। इस अवसर पर रांची स्थित बल की युनिट के अधिकारी एवं जवान बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अस्पताल की इस नयी इमारत का निर्माण 55.77 लाख की लागत से किया गया है। इसमें बिस्तरों की संख्या को 20 तक बढ़ाने की सुविधा निहित है। विस्तार की इस संभावना के साथ साथ अस्पताल में अधिक से अधिक आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने की कोशिश की गयी है।

सिन्हा उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक



श्री डी.पी. सिन्हा

भारतीय पुलिस सेवा के 1972 बैच के उत्तर प्रदेश काडर के अधिकारी श्री डी. पी. सिन्हा ने 22 जून, 1995 को बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक का पदभार संभाल लिया। श्री सिन्हा पदोन्नति के बाद इस पद पर आए हैं। इस पदोन्नति से पूर्व श्री सिन्हा उप महानिरीक्षक (परिचालन) पटियाला के पद पर कार्यरत थे।

जून, 1951 में छपरा बिहार में जन्में श्री सिन्हा की शिक्षा दीक्षा पटना में हुयी। उन्होंने प्रथम श्रेणी में भौतिक शास्त्र (आनर्स) की डिग्री प्राप्त की। भारतीय पुलिस सेवा में चयन के बाद प्रारंभ में उन्हें पंजाब काडर दिया गया और उन्होंने पटियाला, संगरूर और जालंधर में सेवाएं दी। 1978 में उनको उत्तर प्रदेश काडर प्रदान किया गया।

1989 में उप महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत होने के बाद वह उप महानिरीक्षक 'इंटेलीजेंस' पद पर नियुक्त हुए। बाद में उन्हें उत्तर प्रदेश पुलिस के महानिदेशक का स्टाफ अधिकारी नियुक्त किया गया। इस दौरान उन्हें तीन पुलिस महानिदेशकों के साथ काम करने का मौका मिला। 1994 में के.रि.पु. बल में आने से पूर्व वह वाराणसी रेंज के उप महानिरीक्षक पद पर कार्यरत थे। श्री डी. पी. सिन्हा को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र-4 में 84 रंगरूटों की दीक्षांत परेड

10 जून, 95 को हुमामा, श्रीनगर स्थित बल के रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 में 84 रंगरूटों की दीक्षांत परेड सम्पन्न हुयी। अपने नौ माह के प्रशिक्षण के बाद इन रंगरूटों ने देश के प्रति कर्तव्य और निष्ठा की शपथ ली। रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र के

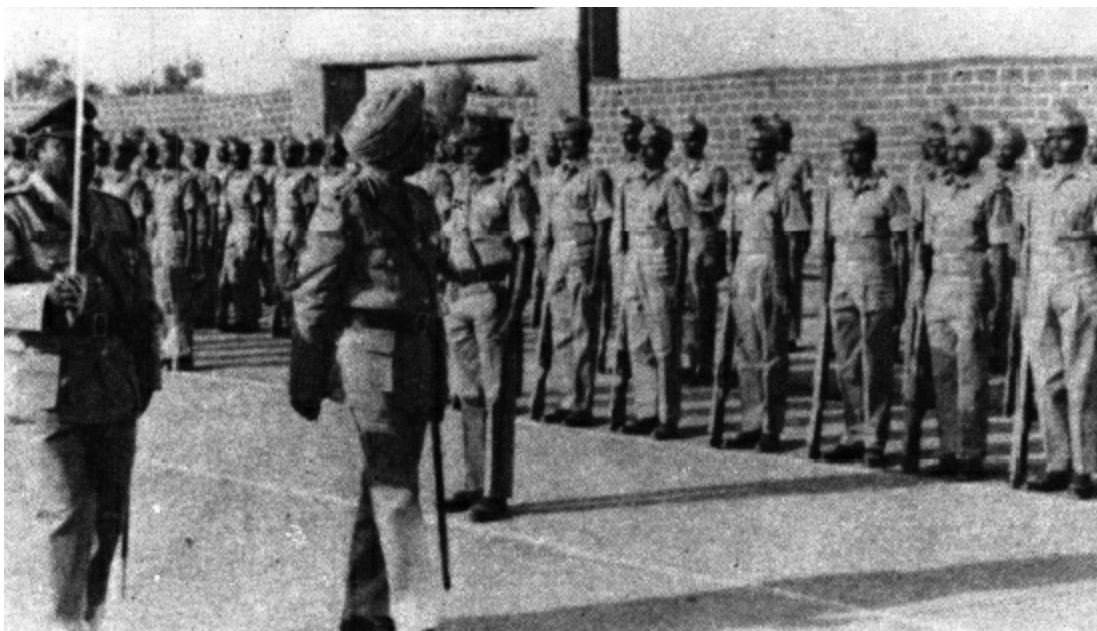
प्रधानाचार्य श्री दलजीत सिंह इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने रंगरूटों के 14वें बैच की इस दीक्षांत परेड की सलामी ली। बाद में इन सभी जवानों को उन्हें आवंटित की गयी बटालियनों में भेज दिया गया।

इस मौके पर बोलते हुए श्री दलजीत सिंह ने जवानों को अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर बधाई दी। उनका आह्वान करते हुए श्री दलजीत सिंह ने कहा कि उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान की जो शपथ ली है, उन्हें जीवन पर्यंत उसका निर्वाह करना है। उन्होंने जवानों को सलाह दी कि वे जीवन में कड़ा परिश्रम करें, सफलता स्वयं उनके चरण चूमेगी।

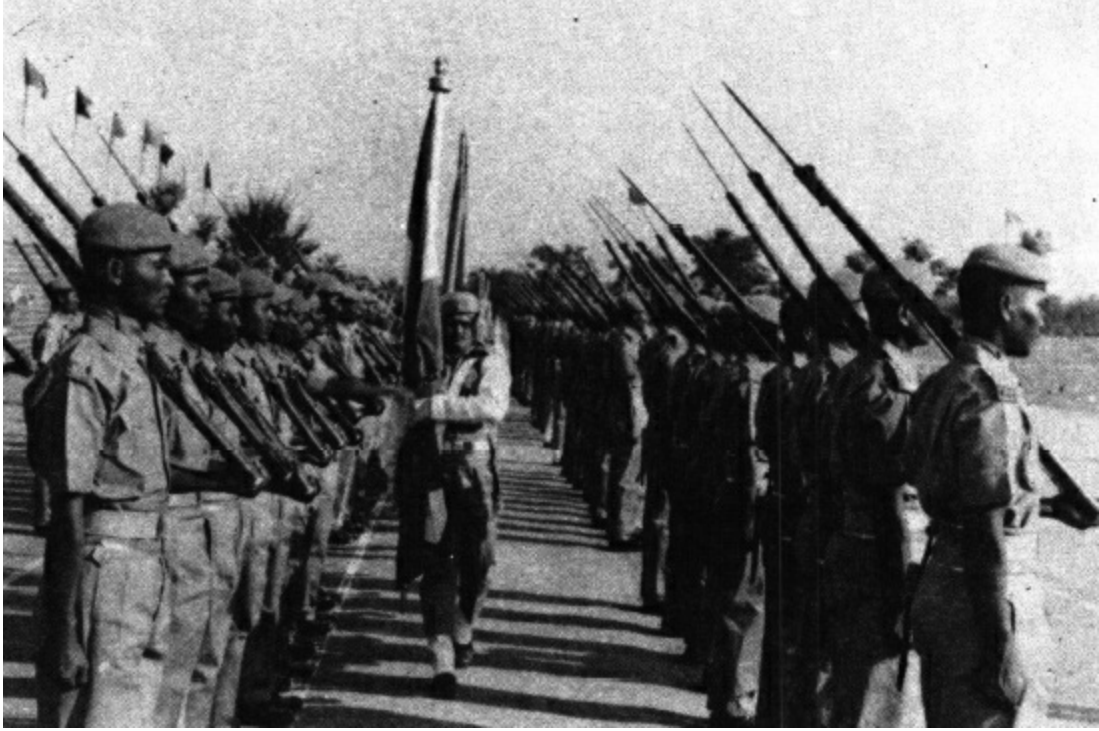
इस अवसर पर प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट रहे चार जवानों को सम्मानित भी किया गया। रंगरूट निर्मल को सर्वश्रेष्ठ आल राउंडर, सजारन ब्रहमा को सर्वश्रेष्ठ निशाने बाजी, भानेश्वर वासुमतारी को सर्वश्रेष्ठ इनडोर ट्रेनी तथा नरेश्वर वासुमतारी को सर्वश्रेष्ठ आउटडोर ट्रेनी के पुरस्कार प्रदान किये गये।

मुख्य अतिथि ने परेड का निरीक्षण करने के बाद परेड की सलामी ली। परेड में शामिल तीन दस्तों का नेतृत्व सहायक प्रधानाचार्य ए.के. क्षेत्री ने किया जबकि एडजुटेंट हवा सिंह ने जवानों को शपथ दिलायी।

जम्मू कश्मीर के बडगाम जिले में हुमामा स्थित रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 की स्थापना 01 अप्रैल, 1990 की गयी थी। तभी से यहां रंगरूटों के प्रशिक्षण कोर्स लगातार चलाए जाते रहे हैं। मगर इस केन्द्र में आयोजित की जाने वाली यह पहली दीक्षांत परेड थी।



परेड का निरीक्षण करते हुए प्राचार्य दलजीत सिंह



कर्तव्य के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की शपथ लेते हुए जवान

फोटो फीचर श्रीनगर में तैनात बल के कार्मिक



महिलाओं की तलाशी लेती बल की महिला कर्मी



यात्रियों की सुरक्षा के लिए देखभाल



दंगाइयों पर काबू पाने की तैयारी



दंगे पर उतारू भीड़ पर नियंत्रण



स्थिति पर दृढ़ दृष्टि

फोटो फीचर

ग्रुप केंद्र आवड़ी में जवानों का प्रदर्शन

ग्रुप केंद्र आवड़ी में 15 जून, 1995 को दक्षिण क्षेत्र के अपर महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अवसर पर बल के जवानों ने उपस्थित पत्रकारों को कई हैरतअंगेज कारनामे भी दिखाए, प्रस्तुत है इसी प्रदर्शन की एक झलक।



जवानों द्वारा आब्स्टेकल कोर्स के दौरान बाधा पार करने का प्रदर्शन



जलती आग की बाधा से कूदना



नाकाबंदी के दौरान अवांछित तत्वों की तलाश

फोटो फीचर चंडीगढ़ में वृक्षारोपण



दस फुट ऊंची दीवार फांदना



पीठ पर हथियार लादे रस्सी पर बाधा पार करना



रस्सी के जरिये बाधा पार करने का एक और कौशल



27 जून, 1995 को चंडीगढ़ में महानिरीक्षक (परिचालन) पंजाब ने एक वृक्ष लगा कर वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरुआत की

83 बटालियन में क्वार्टर गार्ड



इम्फाल में 83 बटालियन द्वारा निर्मित कार्टर गार्ड का उद्घाटन महानिरीक्षक (परिचालन) मणिपुर एवं नागालैंड श्री एन.के. तिवारी ने किया।

संक्षिप्त समाचार

बल के कार्मिक को पी.एच.डी.

के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में कार्यरत फार्मेसिस्ट एस.डी. अग्रवाल को उनके शोध प्रबंध “सफदर हाशमी के लघु नाटक-एक समयामूलक अध्ययन” पर सम्बलपुर विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की गयी है।

श्री एस.डी. अग्रवाल देश भर में अनेक साहित्य सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में भाग ले चुके हैं। श्री अग्रवाल ने कई कहानियां कविताएं तथा निबंध लिखे हैं तथा कुछ साहित्यिक कृतियों का अनुवाद भी किया है।

40 बटालियन की सराहना

पंजाब के बोर्डर रेंज के महानिरीक्षक श्री डी.आर. भट्टी ने के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को लिखे एक पत्र में 40 बटालियन की प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है कि 40 बटालियन जो कि अमृतसर पंजाब से अब नागालैंड स्थानांतरित हो चुकी है- ने पंजाब में अपने कार्यकाल के दौरान अपनी कर्तव्यनिष्ठा और समर्पणभाव से सभी का दिल जीता। इस बटालियन की टुकड़ियां तरनतारन, अमृतसर, बटाला, गुरदासपुर तथा मजीठा जैसे सीमावर्ती जिलों में तैनात रही।

उन्होंने लिखा कि बटालियन के कमान्डेन्ट श्री डी.आर. पाठक तथा उनके अधिकारियों की कई मधुर स्मृतियां हमेशा हमारे साथ रहेंगी। इस बटालियन के अधिकारियों तथा जवानों ने आतंकवाद विरोधी अभियानों के अतिरिक्त सामान्य

कानून व्यवस्था एवं आते महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा जैसे कार्यों को भी मुस्तेदी से निभाया।

19 बटालियन की प्रशंसा

अगस्त, 1994 में जम्मू कश्मीर में सम्पन्न हुयी अमरनाथ यात्रा को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने में के.रि.पु. बल के जवानों का बहुत बड़ा योगदान रहा। इस यात्रा के दौरान अन्य सैन्य बलों के साथ के.रि.पु. बल द्वारा किए गए सुरक्षा तथा अन्य प्रबंधों की देशव्यापी रूप से प्रशंसा हुयी है। इस यात्रा के दौरान 19 बटालियन के जवान भी सुरक्षा प्रबंधों के लिए तैनात थे।

ग्रामीण विकास विभाग के कश्मीर डिवीजन के निदेशक मोहम्मद मंजूर भट्ट ने इस यात्रा के दौरान 19 बटालियन के जवानों द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की है। एक पत्र द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है कि यात्रा को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने में 19 बटालियन के जवानों एवं अधिकारियों की समर्पित सेवाओं का बहुत बड़ा हाथ है।

के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल का शत प्रतिशत परिणाम

नई दिल्ली रोहणी स्थित के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल की कक्षा 10 एवं 12 के परिणाम इस वर्ष भी शत प्रतिशत रहे हैं। इनमें से भी भारी संख्या में छात्रों ने विशिष्टता तथा प्रथम श्रेणी हासिल की है।

इस वर्ष इस स्कूल के कुल 80 विद्यार्थी कक्षा 10 की परीक्षाओं में बैठे। इनमें 17 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक, 24 ने 70 से 80 प्रतिशत के बीच, 30 ने 60 से 70 प्रतिशत के बीच तथा नौ विद्यार्थियों ने 55 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए। इनमें अक्षय शर्मा 91.75 प्रतिशत अंक प्राप्त कर चोटी पर रहे।

कक्षा 12 की परीक्षाओं में इस स्कूल के 63 विद्यार्थी बैठे। इनमें से 10 ने 80 प्रतिशत से अधिक, 35 ने 70 और 80 प्रतिशत के बीच, 17 ने 60 और 70 प्रतिशत के बीच तथा एक ने 55 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। बाला जे. प्रभु तथा अमित वत्स 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर चोटी पर रहे।

माह मई, 95 में बल के मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह मई, 95 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल वी.जी. जमोकदकार (53 बटा.), नायक सुखराम (117 बटा.) कां. वी. वमन (86 बटा.), सब इंस्पेक्टर (मोटर मैकेनिक) बलाई चन्द (ग्रुप केन्द्र इम्फाल), हवलदार/कारपेंटर धनिक लाल शर्मा (39 बटा.), वाटर कैरियर महेन्द्रा नायक (106

बटा.), नायक मिथलेश कुमार (45 बटा.), नायक रसूल सफ़ी (83 बटा.), कां. सुरेंद्र खुजून (83 बटा.), सब इंस्पेक्टर खेम राज (119 बटा.), कां. अवतार सिंह (103 बटा.), सफ़ाई कर्मचारी कृष्ण कुमार (104 बटा.), रंगरूट कंवर सिंह (ग्रुप केन्द्र दिल्ली), कां./ड्राइवर सुरेश सिंह (96 बटा.), कां. वी.एस. राजू (97 बटा.), वाटर कैरियर आरोग्य स्वामी (28 बटा.), कां. नवीन कुमार उपाध्याय (7 बटा.), सब इंस्पेक्टर (एम.टी.) डी.आर. पाणीग्रही (116 बटा.), नायक/ड्राइवर बी. करमकर (116 बटा.), नायक आर. ओझा (116 बटा.), नायक मौहम्मद गजली (116 बटा.), कां. पन्नालाल (114 बटा.), कां. धीरेन चन्द्रा कालिता (114 बटा.), हवलदार लालन सिंह (53 बटा.), एस.एम.एम.पी. यादव (52 बटा.), हवलदार एस.एस. नेगी (ग्रु.के. शिवपुरी), लांस नायक लोहरू राम (71 बटा.), वाशरमैन वृन्दावन लाल (132 बटा.), हवलदार आर.कृष्णनन (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), हवलदार/ड्राइवर आर. थंकप्पन पिल्लई (91 बटा.), हवलदार गोरख नाथ (54 बटा.)।

बल के कार्मिकों को पेट्रो उत्पाद एजेंसियां

सैन्यकर्मियों के साथ साथ अब केंद्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों के लिए भी पेट्रोलियम उत्पादों की एजेंसियों का आरक्षण रखा जाएगा।

केंद्रीय तेल मंत्रालय की एक नीति के तहत के.रि.पु.बल सहित केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों के कर्तव्य पर लड़ते हुए स्थाई रूप से विकलांग हो गए कार्मिकों या कर्तव्य पर मारे गए कार्मिकों की विधवाओं को आरक्षण के आधार पर पेट्रोलियम उत्पादों की एजेंसियां प्रदान की जाएंगी। मंत्रालय ने सभी तेल कम्पनियों तथा बोर्डों को इन निर्देशों का पालन करने के आदेश दिए हैं। पेट्रोलियम उत्पादों में रसोई गैस की वितरण एजेंसी, तथा डीजल व पेट्रोल पम्प शामिल हैं।

इस संबंध में अधिक जानकारी संबंधित तेल कम्पनी के उस क्षेत्रीय कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है, जहां से इन एजेंसियों के लिए आवेदन मांगे जाएं।

प्रधानमंत्री रजत कप निबंध प्रतियोगिता

सरकार बल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रधानमंत्री रजत कप निबंध प्रतियोगिता की पुरस्कार राशि बढ़ा दी गयी है। अब प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए क्रमशः 5000 रुपये, 3000 रुपये तथा 2000 रुपये के नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे, जबकि पहले पुरस्कारों की यह राशि क्रमशः 1000 रुपये, 750 रुपये तथा 500 रुपये थी।

यह प्रतियोगिता 1976 में शुरू की गयी थी। प्रति वर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में देश भर के पुलिस कर्मी भाग ले सकते हैं।

के.रि.पु. बल ने 50 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह मई, 95 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 50 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी आठ मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए। तथा बल के दो वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुए एवं 19 गंभीर रूप से घायल हुए।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 34 घातक हथियार तथा 738 सजीव गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में छः ए.के. 56 रायफ्लें, आठ पिस्तौले, दो राकेट लांचर, एक. एस.एल. आर., एक एल.एम.जी., एक एम.एम.जी. एक कारबाइन तथा 14 अन्य हथियार शामिल हैं।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह मई, 95 में मृत्यु के कुल 25 मामलों में कुल 10 लाख रुपये देने स्वीकृत किए गए। इसमें केन्द्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के चार मामलों में कुल 60 हजार रुपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके 10 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 3.50 लाख रुपये देने स्वीकृत किए गए।

कश्मीर में

ऊषा की पहली किरण के साथ मस्त, आवारा, घमंडी पर ठंडी हवाएं भी चल पड़ी।
चूमने लगी वादियों को
और ये वादियां, ये घटाएं प्रफुल्लित हो उठीं,
आकर्षित करने लगी मन को,
बस डूब गया मन,
इन हसीन वादियों की आगोश में
सचमुच कितना निर्मोही है मन
इंसान खुद नहीं जानता
ना जाने कब किधर और किस में खो जाए ये मन।

अजय कुमार थापा
उपनिरीक्षक (मं)
33 बटा.

लघु कथाएं

अरबी लघु कथा

पागलखाना

उस दिन पागलखाने गया था किसी कार्यवश, तो वहीं उसे देखा था। अन्दर घुसते ही, वह बगीचे में एक बेंच पर बैठा मिला एक साधारण सा नवयुवक। किंतु उसके खूबसूरत पीले मुख पर विस्मय के चिन्ह इस प्रकार दिख रहे थे कि मैं उस से बातें करने का लोभ संवरण न कर सका।

बेंच पर, उसके समीप बैठते हुए, मैंने कहा-“सुनो भाई, तुम यहाँ कैसे आए ?”

उसने मेरी और देखने की सम्भवतः कोई आवश्यकता नहीं समझी। आंखें गड़ाए, जमीन में जाने क्या ढूँढ़ रहा था। अपनी खोज उसी प्रकार जारी रखते हुए बोला-“कितना निरर्थक प्रश्न है, किन्तु जब तुमने पूछा है तो मैं उत्तर भी दूंगा।” क्षणभर वह रुका, फिर कहना शुरू किया-“जानते हो मेरे बाप की यह बड़ी इच्छा थी कि मैं ठीक उनकी तरह बनूँ, ठीक यही इच्छा मेरी अम्मा को भी थी, जब कि मेरी बहन अपने नाविक पति को मेरे लिए सर्व श्रेष्ठ आदर्श मानी थी और मेरे भाई की धारणा थी कि मुझे तो बस उसके समान एक नामी पहलवान ही बनना चाहिए।

“यही स्थिति मेरे अध्यापकों की थी। सब के सब अपने अपने गुण मुझमें इस प्रकार प्रतिबिम्बित देखना चाहते थे, जैसे वे दर्पण में अपने आपको देखते थे। इस के लिए वे पर्याप्त श्रम भी करते थे।”

पहली बार उस ने सिर उठाकर मेरी और देखा-“तुम मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हो” वह मुस्कराया, बड़ी करुण मुस्कान। फिर गंभीरतापूर्वक बोला-“इसी से मैं यहाँ चला आया हूँ। वहाँ से यह जगह अधिक सुखद है-यहाँ मैं कम से कम ‘मैं’ तो बन सकता हूँ- समझे तुम ?”

सहसा उसकी आँखों में क्रोध उभर आया और कुछ रुष्ट स्वर में बोला-“पर तुम कैसे आए यहाँ ? अच्छी संगत इसका कारण बनी या तुम्हारी उच्च शिक्षा ?”

क्षणभर मैं आवाक रह गयां, पर कोशिश कर स्वयं को स्थिर करते हुए बोला-“ना, मैं तो यहाँ अपने काम से आया हूँ।” मेरे ओठों पर दोस्ती की मुस्कान थी।

पर उसके ओठों पर एक व्यंग की मुस्कान थिरक उठी-“समझा, तुम उस बड़े पागलखाने से आए हो, जो इन दीवारों के उस ओर है।”

अफ्रीकी लोक कथा

बोलने वाला मस्तिष्क

एक शिकारी जंगल में गया। वहा उसे एक बूढ़े व्यक्ति का मस्तिष्क दिखाई दिया। शिकारी ने पूछा-“तुम यहाँ कैसे आए ?” उसने उत्तर दिया-“ज्यादा बोलना मुझे यहां ले आया।” शिकारी वहां से भाग निकला, वह राजा के पास जा कर बोला, मैंने जंगल में आज एक आदमी का मस्तिष्क देखा। वह आपसे पूछने को कह रहा था कि उसके माता पिता कैसे हैं ?”

राजा ने कहा-“जब से मेरा जन्म हुआ है, मैंने कभी नहीं सुना कि किसी मरे हुए व्यक्ति का मस्तिष्क भी बोल सकता है।” राजा ने अपने मंत्रियों को बुलाया और पूछा कि क्या उन्होंने कभी पहले ऐसी घटना सुनी है ?” सबने आश्चर्य से सिर हिला कर कहा-“नहीं”, और सबने निश्चय किया कि एक व्यक्ति को शिकारी के साथ भेज कर पता लगाया जाए कि यह कहानी सच्ची है या झूठी।

एक व्यक्ति शिकारी के साथ इस हुक्म के साथ भेजा गया कि यदि यह झूठ है, तो उसे वहीं मार डाला जाए। दोनों मस्तिष्क के समीप पहुंचे। शिकारी ने उससे कहा-“ऐ मस्तिष्क बोलो कि तुम यहाँ कैसे आए।” लेकिन वह चुप रहा। सारा दिन शिकारी उससे बोलने की प्रार्थना करता रहा, लेकिन मस्तिष्क नहीं बोला, शाम को राजा की आज्ञानुसार राजा का आदमी शिकारी को मार कर चला गया, तब मस्तिष्क ने अपना जबड़ा खोल कर शिकारी के भेजे से पूछा “तुम्हें कौन सी वस्तु यहां ले आयी ?” शिकारी के मस्तिष्क ने उत्तर दिया-“ज्यादा बोलना मुझे यहां ले आया।”

अंत में

एक रसायनशास्त्री, एक भौतिकी का वैज्ञानिक और एक गणितज्ञ पागल हो गए। संयोगवश वे एक तालाब के किनारे एक साथ पहुंचे। भौतिकी वैज्ञानिक बोला, “मैं इस तालाब का घनत्व ज्ञात करके आता हूं” और तालाब में कूद गया। गणितज्ञ बोला, “मैं तालाब की गहराई ज्ञात करके आता हूं।” और वह भी तालाब में कूद गया। जब दोनों बहुत देर तक बाहर नहीं आए तो रसायनशास्त्री बोला, “दोनों ही पानी में घुलनशील हैं।”

भारत को तुम पर गर्व है

तुम वीर बहादुर कहलाते, तुम शान हो भारत देश की
इतिहास बदल कर रख सकते, तुम आन हो भारत देश की।
ले बांध कफन सिर पर अपने, तुम केसरिया बाना धारो
दानव अत्याचारी जन का, करके विनाश जननी तारो।

तुममें कौशल इतना है कि, तुम स्वर्ग धरा पर ला सकते
जो राह भूल कर चलते हैं, उनको तुम राह दिखा सकते।
करतब की गान सदा तेरी, गाई जाती है जगह-जगह
जग जननी का है वरद हस्त, आशीष तुझे हर जगह-जगह।
तुम मृत्यु विटप पर चढ़ कर भी, जन मानस का करते कल्याण
बाधाओं से तुम लड़ते हो, बन जाते हो तुम वीर पाषाण।
बीहड़-वन से है प्यार तुझे, गिरि-कानन है बलिहार तुझे
कठिनाई है गले हार तुझे, मिलता है सबसे प्यार तुझे।
बलि वेदी पर चढ़ जाते तुम, हंस कर, मुख में मुस्कान लिए
इतिहास बताता है वीरों, तुम लब पर आह नहीं लाते।
तुम केरिपु बल के ललना हो, भारत को तुम पर गर्व है
भारत के कोने-कोने में, फैला तब कर्म गंधर्व है।
मेरे “प्रभात” अब वसुधा से, आतंक तिमिर को दूर करो
हे केरिपु बल के वीर सदा, मानवता के मनमीत बनो।

रचयिता: हंसराज ओझा “प्रभात”
उ.नि. (म) 49 बटा.

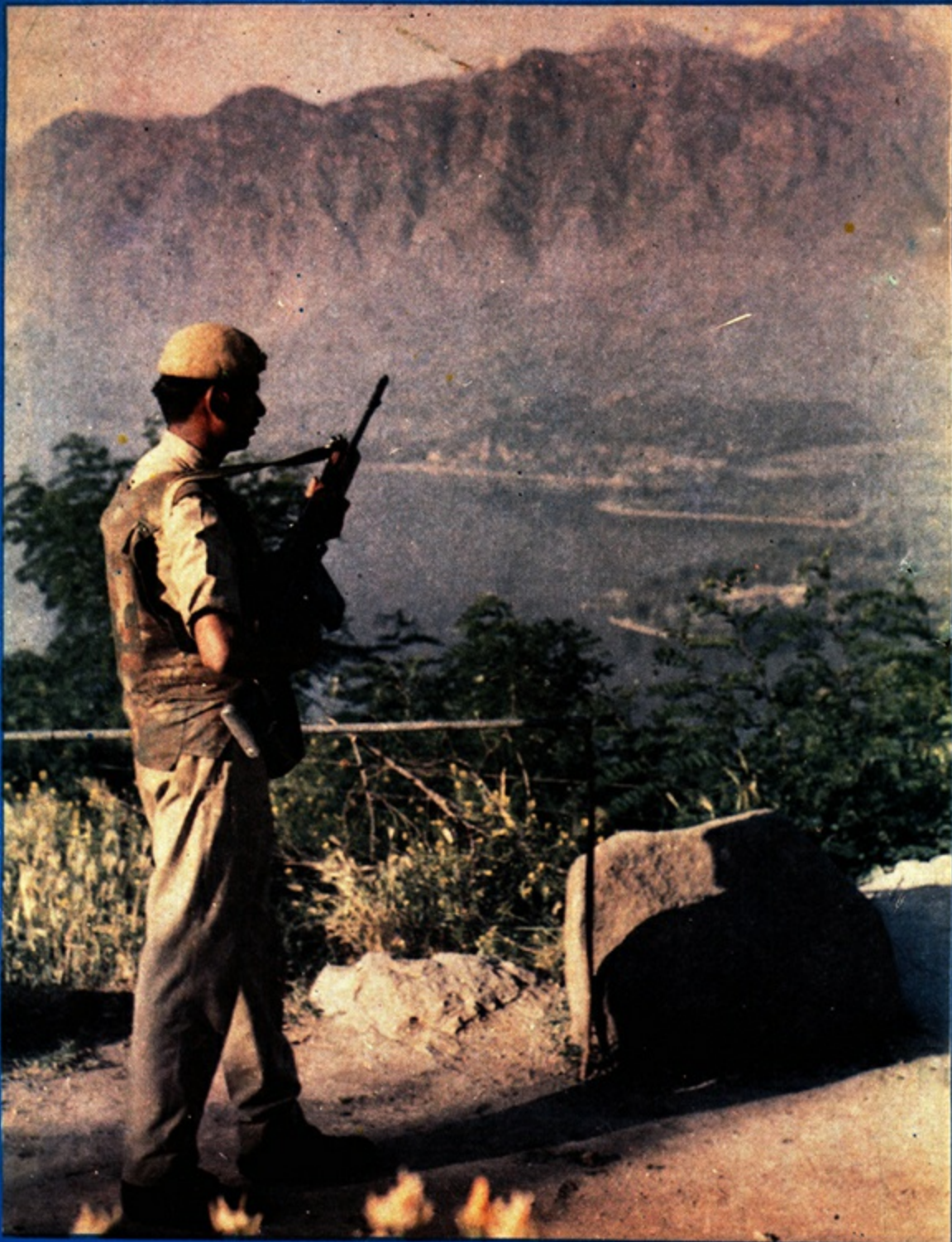
मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी। **सम्पादक :** अनिल गुप्ता। **वरिष्ठ छायाकार :** सतीश खन्ना।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लॉक-1 सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड़ नई दिल्ली - 110 003 की ओर से **जी. सी. द्विवेदी**।

मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली - 110 072 ।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 Ph. : 3262279

रोज़ नं. 47167/87



श्रीनगर में सुरक्षा ड्यूटी में तैनात के.रि.पु. बल का एक जवान

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-5

31 अगस्त, 1995

1 भाद्रपद, शक 1917



ग्रुप केन्द्र तेलेगांव में आवासीय भवनों का शिलान्यास करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

सम्पादकीय

अपने हाल के कश्मीर दौरे के दौरान वहां तैनात अपने जवानों की कार्य स्थितियों, और उनमें उनकी कार्य कुशलता को नजदीक से देखने का मौका मिला। कश्मीर में आतंकवाद का विषैला नाग आज जिस तरह रह रह कर अपना फन उठा रहा है, उसे कुचलने की काफी बड़ी जिम्मेदारी अन्य सुरक्षा बलों के साथ हम पर भी है।

हाल के इन वर्षों में हमारा राष्ट्र अभिमान बहुत क्षतिग्रस्त हुआ है, हमारी राष्ट्रीयता के सीने पर कई घिनौने नासूर उभर आए हैं। कुछ पथभ्रष्ट और दिग्भ्रमित लोग हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को छाती पर ए.के. 47 और क्लासीनोव की नलियां रख कर ललेकार रहे हैं। हर जगह राष्ट्र सम्मान को आहत किया जा रहा है, महाविद्यालयों, सड़कों से ले कर खेतों, खलिहानों तक धमाकों की आवाज और बेगुनाहों का रक्त बिखरा पड़ा है। जम्मू कश्मीर तथा उत्तर पूर्व के कुछ हिस्सों में स्थिति ये है कि सुबह काम पर जाने वाले नागरिक निश्चय के साथ यह नहीं कह पाते कि वे शाम को लौटेंगे कि नहीं।

इस स्थिति पर नियंत्रण करने की एक महती जिम्मेदारी हम पर है। हमारा काम केवल अशांत क्षेत्रों में शांति स्थापित करना ही नहीं है, बल्कि इससे भी बड़ा काम जो हमें सौंपा गया है, वह है जनता के हृदय से असुरक्षा की भावना को दूर करना, उनके अंदर देश के सुरक्षा एवं शासन तंत्र के प्रति विश्वास पैदा करना। हम पंजाब में ऐसा कर पाए हैं, हमने असम में शांति स्थापित की है, हमें विश्वास है हम कश्मीर को भी उसकी वही पुरानी शांति लौटा पाएंगे। जम्मू कश्मीर में तैनात हमारे जवानों का नैतिक साहस पूरी तरह बुलंद है। पहले पंजाब और अब जम्मू कश्मीर में हमें कई नए अनुभव प्राप्त हुए हैं। हम जानते हैं कि हमारे जवानों को विपरीत स्थितियों में एक विकट कार्य को अंजाम देना पड़ रहा है, मगर वर्तमान हालात की कठिनाइयों पर वे अपने पुराने अनुभव के बल पर विजय प्राप्त करेंगे ऐसा हमें विश्वास है। राष्ट्रीय महत्व के इस दायित्व को निभाने में संलग्न सभी जवानों को इस दायित्व के सफलतापूर्वक निर्वाह के लिए हमारी शुभकामनाएं।

सारा देश निश्चित रातों की निश्चित निद्रा के लिए उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से निहार रहा है।

प्रधानमंत्री की कुजारानी को बधाई



कुंजारानी के पदक देखते हुए प्रधानमंत्री

03 से 08 जुलाई, 1995 को पुसान (दक्षिण कोरिया) में सम्पन्न हुए एशियायी महिला भारोत्तोलन मुकाबले में दो स्वर्ण पदक जीतने पर प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने के.रि.पु. बल की इंस्पेक्टर कुंजारानी को बधाई दी है। उन्होंने कुंजारानी को भविष्य में और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं भी दीं।

के.रि.पु. बल के तीन प्रमुख खिलाड़ी इंस्पेक्टर कुंजारानी (भारोत्तोलन), उप कमान्डेन्ट खजान सिंह (तैराकी) तथा द्वितीय कमान अधिकारी हरी चंद्र (एथलेटिक्स) 18 जुलाई, 95 को प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव से मिलने गए। बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने इन खिलाड़ियों का परिचय प्रधानमंत्री से कराया। इस मौके पर बल के महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री सुरेश राय भी साथ थे। ज्ञातव्य है कि ये तीनों ही खिलाड़ी अर्जुन अवार्ड विजेता हैं।

इससे पहले बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने बल के इन तीन पीढ़ियों के प्रतिनिधि खिलाड़ियों की व्यक्तिगत उपलब्धियों की जानकारी प्रधानमंत्री को दी।

मणिपुर निवासी इंस्पेक्टर एन. कुंजारानी ने 1989 में मेनचेस्टर में हुए विश्व महिला भारोत्तोलन मुकाबले की 46 कि.ग्रा. श्रेणी में तीन रजत पदक जीते थे। उन्होंने 1991 और 1992 में फिर विश्व महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में रजत पदक जीते। एशियाई भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में वह 1991 से लगातार रजत पदक जीतती रही हैं, जबकि इस बार उन्होंने इस प्रतियोगिता में दो स्वर्ण पदक जीते। खेल के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों को देखते हुए 1990 में उन्हें अर्जुन अवार्ड प्रदान किया गया।

मुनीरका, नयी दिल्ली के खजान सिंह टोकस ने 1986 में सियोल में हुए एशियायी

खेलों में तैराकी के 200 मीटर बटरफ्लाइ मुकाबले में रजत पदक जीता। खेल के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए 1984 में उन्हें अर्जुन अवार्ड प्रदान किया गया। खजान सिंह ने 1988 में सियोल में हुए ओलंपिक खेलों तथा 1990 में बीजिंग में हुए एशियायी खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया।

हरी चंद 1976 में मांट्रियल में हुए ओलंपिक खेलों में 10,000 मीटर रेस को 29 मिनट से भी कम समय में समाप्त करने वाले पहले एशियायी थे। 1975 में उन्होंने सियोल में हुयी एशियायी टेक एंड फील्ड प्रतियोगिता की 10,000 मीटर दौड़ का स्वर्ण पदक एक नये रिकार्ड के साथ जीता। उसी वर्ष उन्हें अर्जुन अवार्ड प्रदान किया गया। 1978 में बैंगकोक में हुए एशियायी खेलों में श्री हरी चंद ने 5,000 एवं 10,000 मीटर दौड़ों के स्वर्ण पदक जीते। उन्होंने 1980 में मोस्को ओलंपिक खेलों में 10,000 मीटर तथा मैराथन मुकाबलों में भी देश का प्रतिनिधित्व किया।

तेलेगांव में आवासीय भवनों का शिलान्यास



ग्रुप केन्द्र तेलेगांव में आवासीय भवनों के लिए आधारशिला रखते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 02 जून, 95 को ग्रुप केन्द्र तेलेगांव में आवासीय भवनों के लिए निर्मित होने वाली इमारतों का शिलान्यास किया। केन्द्रीय आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक श्री आर.एस.

मुशाहारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि श्री मुशाहारी के पास बल के पश्चिम सेक्टर के महानिरीक्षक का अतिरिक्त कार्यभार भी है। निर्माण के दूसरे चरण में इस ग्रुप केन्द्र में केन्द्रीय विद्यालय, अस्पताल, परिवार कल्याण केन्द्र, मांटेसरी स्कूल, ऑडिटोरियम, स्कवैश कोर्ट तथा जिमनेजियम आदि इमारतों का निर्माण शुरू होगा।

यह ग्रुप केन्द्र पूणे बम्बई राज मार्ग पर पूणे से 35 किलोमीटर दूर स्थित है। महाराष्ट्र में के.रि.पु. बल का यह दूसरा ग्रुप केन्द्र है। बल का पहला ग्रुप केन्द्र नागपुर में है। यह ग्रुप केन्द्र 79,97,111 और 122 बटालियनों का कार्य व्यापार देखता है।

इस ग्रुप केन्द्र का पूर्ण निर्माण कार्य तीन चरणों में आगामी पांच वर्षों में पूर्ण होने की उम्मीद है। इस ग्रुप केन्द्र के लिए अधिकृत 699 आवासीय खंडों में से सरकार ने फिलहाल 262 आवासीय खंडों के निर्माण के लिए धन स्वीकृत किया है। इन भवनों के निर्माण तथा आसपास के स्थल के विकास पर लगभग 10.75 करोड़ रुपये लागत आने का अनुमान है।

इस ग्रुप केन्द्र के निर्माण से न केवल महाराष्ट्रवासियों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे अपितु ग्रुप केन्द्र के आसपास के इलाकों में आर्थिक गतिविधियों के बढ़ने से क्षेत्र का विकास भी होगा।

दो पल सोचें

ज्यों ज्यों अभिमान कम होता है, कीर्ति बढ़ती है

-यंग

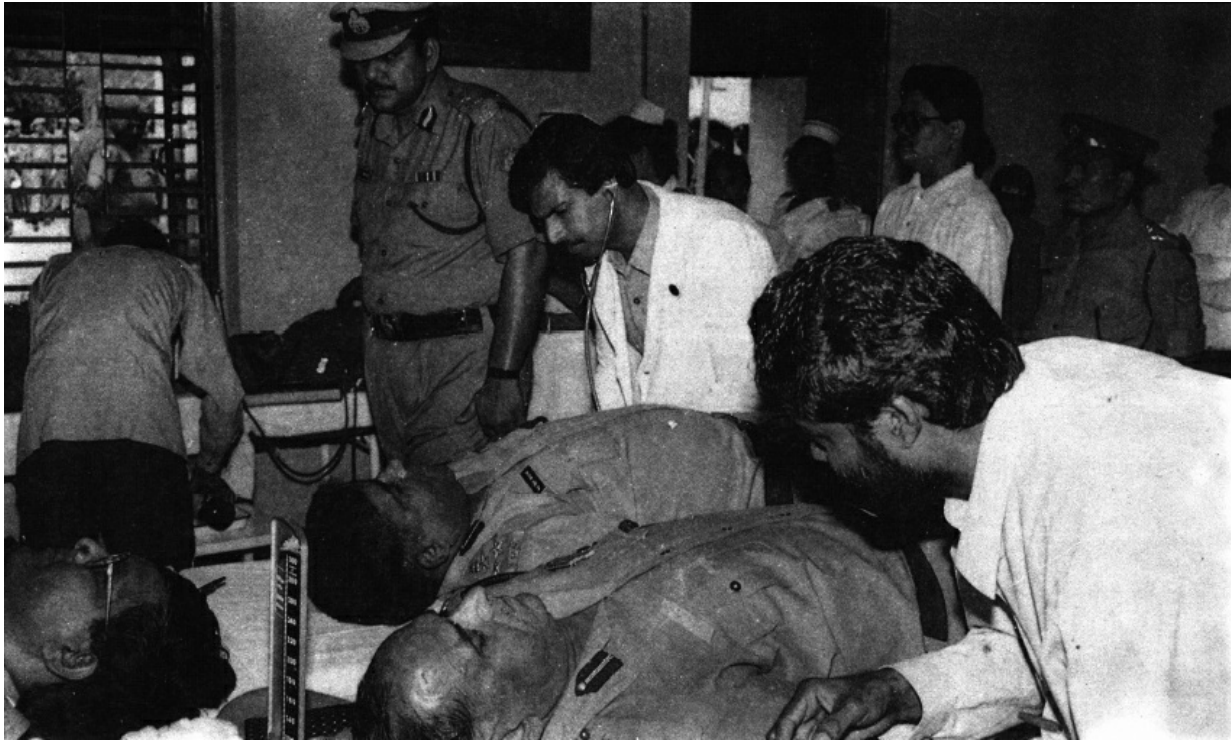
तप से शक्ति, त्याग से शांति, प्रेम से भक्ति और श्रद्धा से ज्ञान मिलता है

- अज्ञात

क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है

- पाइथागोरस

650 के.रि.पु. बल कार्मिकों द्वारा रक्तदान



रक्तदान करते हुए बल के अधिकारी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल डिटैचमेंट अस्पताल आर.के. पुरम में आयोजित एक रक्तदान शिविर में बल के 650 कार्मिकों ने 25 जुलाई, 95 को रक्तदान किया। बेस अस्पताल झड़ौदा कला द्वारा रेड क्रॉस के सहयोग से आयोजित किए गए इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने किया।

इस मौके पर बोलते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि के.रि.पु. बल का इतिहास शौर्य, समर्पण, साहस और देश प्रेम की घटनाओं से ओतप्रोत है। लेकिन बल के कार्मिक अपनी सामान्य ड्यूटियों के अतिरिक्त मानवीय कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहे हैं, चाहे वो रक्तदान हो या फिर प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव व राहत कार्य, बल के कार्मिक हमेशा समर्पित भाव से सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

इस मौके पर रक्तदान करने वाले वरिष्ठ अधिकारियों में अपर महानिदेशक (उत्तर पश्चिम जोन) श्री एम.बी. कौशल, उप निदेशक (प्रशासन) श्री डी.आर. यादव तथा उप महानिरीक्षक नई दिल्ली श्री बी.एम.सारस्वत भी शामिल थे। रक्तदान करने वाले कार्मिकों में उप महानिरीक्षक श्री बी.एम. सारस्वत सहित कई ऐसे अधिकारी व अन्य कार्मिक भी शामिल थे, जो दस बार तक रक्तदान कर चुके हैं। रक्तदान करने वालों में बल की लगभग 30 महिला कर्मी भी शामिल थीं।

उल्लेखनीय है कि के.रि.पु. बल बेस अस्पताल रेड क्रॉस के सहयोग से 1989 से लगातार हर वर्ष रक्तदान शिविर का आयोजन करता आ रहा है। हर बार रक्तदान शिविर से लगभग 400 बोतल रक्त एकत्र किया जाता है। गत वर्ष बल के 450 कार्मिकों ने जिनमें 20 महिला कार्मिक भी शामिल थी, रक्तदान में हिस्सा लिया था।

इस वर्ष भी बल के वारेष्ठ अधिकारियों साहेत भारी संख्या में बल के अधीनस्थ अधिकारी तथा अन्य कार्मिक रक्तदान में हिस्सा लेने के लिए मौजूद थे ।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बल के 27 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 27 कार्मिकों को पुलिस पदकों से सम्मानित किया है । इनमें से तीन कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 24 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गए हैं ।

यह सम्मान प्राप्त करने वाल कार्मिक हैं –

विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक एस.एस. सोनी (ग्रुप केंद्र हैदराबाद)



कमान्डेन्ट गुरचरण सिंह (128 बटालियन)



सहायक कमान्डेन्ट वी.जी. देशमुख (42 बटालियन)

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक एस.सी. कुकरेजा (ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम)



कमान्डेन्ट रवि कुमार आर.ए.एफ. (मुख्यालय)



कमान्डेन्ट सी.वी. मैथ्यू (99 आर.ए.एफ.)



कमान्डेन्ट एम.सी. जोसफ (14 बटालियन)



कमान्डेन्ट एस.एस. गिल (75 बटालियन)



कमान्डेन्ट आर. तरार (2 सिगनल)



कमान्डेन्ट (स्टाफ) अब्दुल मजीद (उप महानिरीक्षक कार्यालय, गुवाहाटी)



डिप्टी कमान्डेन्ट के.एन. राव (ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी)



सहायक कमांडेंट आर.एस. पांडेय (ग्रुप केंद्र-2 अजमेर)



सी.एम.ओ.डा.टी. के राय (बिस अस्पताल-2)



सूबेदार मेजर (एम) जी.एस.रावत (ग्रुप केंद्र रामपुर)



प्रशासन अधिकारी के.एन.पांडेय (महानिरीक्षक कार्यालय, उत्तर पूर्वी सेक्टर)



इंस्पेक्टर पी. बाबास्वामी (100 आर.ए.एफ.)



इंस्पेक्टर विद्यानंद (ग्रुप केन्द्र नीमच)



इंस्पेक्टर जे.एस. भुल्लर (33 बटालियन)



सब इंस्पेक्टर गणेश बहादुर (43 बटालियन)



सब इंस्पेक्टर श्रवण कुमार (107 आर.ए.एफ.)



हैड कांस्टेबल राम जनम सिंह (53 बटालियन)



हैड कांस्टेबल (ड्राईवर) पवानी मोहंती (महानिदेशालय)



हैड कांस्टेबल जी.के. उन्नीथन (16 बटा.)



हैड कांस्टेबल तारा दत्त (उप महानिरीक्षक कार्यालय, अजमेर)



नायक गुरमैल सिंह (34 बटालियन)



कांस्टेबल के.जी. नायर (महानिदेशालय)



फर्रास ब्रिजपाल सिंह (महानिदेशालय)

बल कार्मिकों ने सद्भावना दिवस मनाया



सद्भावना दिवस दौड़ में भाग लेते हुए बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दिल्ली स्थित युनिटों ने 21 अगस्त, 95 को सद्भावना दिवस मनाया। इस मौके पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बल के कार्मिकों ने जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा का भेदभाव किए बिना भावात्मक एकता और सद्भावना की शपथ ली।

बल के मुख्यालय में महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने बल के कार्मिकों को यह शपथ दिलायी। इससे पहले प्रातः बल के मुख्यालय में ही एक भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने देश की भावात्मक एकता और सद्भावना पर अपने विचार रखे।

डिप्टी कमान्डेन्ट विक्रम सहगल तथा हैड कांस्टेबल ए.सत्यथी को इस प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने पुरस्कार प्रदान किए।

बल के उत्तरी सेक्टर के कैम्प आर.के. पुरम से महरौली स्थित 129 बटालियन तक सद्भावना दौड़ का आयोजन किया गया, जिसमें 300 से अधिक जवानों और अधिकारियों ने भाग लिया। इनमें भारी संख्या में बल की महिलाकर्मि भी शामिल थीं।

के.रि.पु. बल ने 147 आतंकवादी पकड़े

माह जुलाई, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने देश भर में 147 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 11 मुठभेड़ों तथा अन्य

आभेयानों में छः आतंकवादों मारे गए।

इन कार्रवाईयों में बल के जवानों ने 147 घातक हथियार भी बरामद किये। बरामद हथियारों में एक ए.के. 56 रायफल, तीन ए.के. 47 रायफल, एक एस.एल.आर., एक कारबाइन, एक स्टेनगन, चार जी. 3 रायफलों, दो जी. 2 रायफलों, नौ पिस्तौलें तथा 99 अन्य रायफलों तथा हथियार शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों तथा आतंकवादियों द्वारा लगाई गयी घातों में बल के चार वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुये तथा 16 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

सात कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपति डा.शंकर दयाल शर्मा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सात कार्मिकों को पंजाब में आतंकवादियों के विरूद्ध संघर्ष के दौरान दिखायी गयी वीरता, साहस एवं कर्तव्यपरायणता के लिए शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है।

ये पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं:- महानिरीक्षक परिचालन पंजाब (अब अपर महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल) श्री आर.के. शर्मा, 7 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी श्री पी.एस. चौधरी, 7 बटालियन के उपाधीक्षक के.एस. नायर, 36 बटालियन के हैड कांस्टेबल ज्ञान सिंह, 14 बटालियन के लांस नायक राम नरेश, 7 बटालियन के कांस्टेबल आर. एल. चौधरी (मरणोपरांत) तथा 126 बटालियन के उप कमान्डेन्ट रंदीप दत्ता ।

अ.भा. पुलिस तैराकी में बल को दूसरा स्थान

08 से 12 अगस्त, 95 तक पुणे में हुई अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। बल के तैराकों ने वाटर पोलो प्रतियोगिता जीत ली जबकि बल के धावकों को क्रास कंट्री प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

बल के तैराकों ने इस प्रतियोगिता में 4 स्वर्ण, 18 रजत तथा 8 कांस्य पदक प्राप्त किये। बल की टीम के लिए चारों स्वर्ण पदक इंस्पेक्टर राजाराम टोकस ने बटोरे।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय जोखिम निधि से माह जुलाई, 95 में बल के 37 कार्मिकों की मृत्यु के मामले में कुल 14,78,500 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इसमें केन्द्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के एक मामले में कुल 15,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

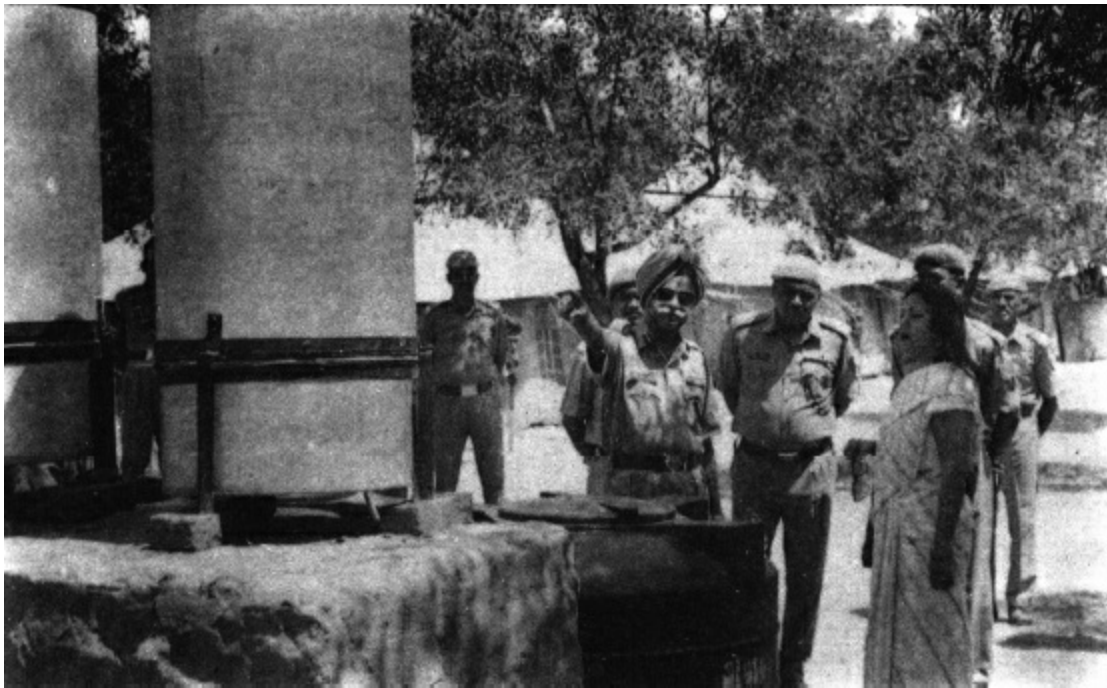
जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से भी उसके तीन सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 1,05,000 रुपये देने स्वीकृत किये गए।

फेडरेशन कप प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण पदक जीते

18 से 20 अगस्त, 95 तक कलकत्ता में हुई प्रथम फेडरेशन कप दौड़कूद प्रतियोगिताओं में बल के धावकों ने तीन स्वर्ण पदक तथा छः कांस्य पदक जीते।

इंस्पेक्टर राजेंद्र सिंह ने 110 मीटर बाधा दौड़, इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने 400 मीटर दौड़ तथा इंस्पेक्टर ए.डी. गणपति ने डेक्थलोन में स्वर्ण पदक प्राप्त किये जबकि प्रभजोत सिंह ने पोल वोल्ट, इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने 200 मी. दौड़ तथा सब-इंस्पेक्टर रवि शंकर शर्मा, मनोज कुमार, विशाल दीप तथा हैड कांस्टेबल एस.के.इनाबा सिंह ने 4x100 मी. रिले दौड़ में कांस्य पदक प्राप्त किये।

वित्त सलाहकार का आर.टी.सी-4 का दौरा



आर.टी.सी-4 में दौरे के दौरान वहां की कार्य स्थितियों की जानकारी लेती हुयी वित्त सलाहकार श्रीमती आर.एस.खान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की वित्त सलाहकार श्रीमती आर.एस. खान ने 10 जून, 95 को कश्मीर में श्रीनगर के पास हुमहुमा स्थित बल के रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 का दौरा किया। अपने दौरे के दौरान उन्होंने निर्माणाधीन जल वितरण योजना, नहाने के लिए पानी के भंडारण की टैंकियों, तथा सड़कों का जायजा लिया।

वह क्वार्टर गार्ड, गार्ड रूम, कोत तथा कार्मिकों की बैरकों और कुक हाउस में भी गई, ताकि वहां रहने वाले कार्मिकों की कार्य स्थितियों, उनकी आवासीय दिक्कतों

को समझ सकें।

माह जुलाई, 1995 में बल के मृत कार्मिक

माह जुलाई, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतुष्ट परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

लांस नायक गुरमीत सिंह (40 बटा.), कांस्टेबल हरचरण सिंह (75 बटा.), नायक दयाल सिंह (86 बटा.), नायक/मोची ब्रिज लाल (ग्रुप केन्द्र नीमच), अनुभाग अधिकारी के.एस. बिष्ट (महानिदेशालय-संचार अनुभाग), कांस्टेबल मेघ राज (43 बटा.), वाटर कैरियर विक्रम बहादुर (43 बटा.), हवलदार ए.एम. चंदन नायर (35 बटा.), नायक शिवबीर सिंह (14 बटा.), लांस नायक यू.एस. कुट्टी (64 बटा.), हवलदार महाबीर सिंह (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), कांस्टेबल ए. माधवन (116 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट बी.एस. राही (30 बटा.), कांस्टेबल रविंद्र सिंह (58 बटा.), कांस्टेबल रति राम (113 बटा.), रिक्रूट सुदेश (135 बटा.), कांस्टेबल/ड्राइवर दिलबाग सिंह (51 बटा.), कुक एस. थोमस (113 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह जून, 95 में 107 बटा. के स.उ.नि. (एम) एस.पी.सिंह और 114 बटा. के सब-इंस्पेक्टर आर.के. सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त नवम्बर, 94 माह में कांस्टेबल जी. राजकुमार भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

सेवानिवृत्त के.रि.पु. बल कार्मिकों के लिए पुनर्वास केन्द्र

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सेवानिवृत्त कार्मिकों के लिए पूरे देश में 29 पुनर्वास केंद्र खोले गए हैं। अपर उप महानिरीक्षकों के अंतर्गत काम करने वाले ये केंद्र हैदराबाद, आवड़ी (मद्रास), पल्लिपुरम (त्रिवेंद्रम), रंगारेड्डी (आंध्र प्रदेश), बैंगलौर (कर्नाटक), नीमच, भोपाल, शिवपुरी (मध्य प्रदेश), नागपुर, गांधी नगर, पूणे, मोकामाघाट (बिहार), मुजफ्फरपुर, जमशेदपुर, रामपुर (उ.प्र.), इलाहाबाद, लखनऊ, जम्मू, पिंजौर, जालंधर, गुड़गांव, दुर्गापुर, भुवनेश्वर, नयी दिल्ली, अजमेर, इम्फाल, दीमापुर (नागालैंड), गुवाहाटी तथा रांची ग्रुप केन्द्रों में स्थापित किए गए हैं। इनका मुख्यालय नयी दिल्ली स्थित के.रि.पु.बल मुख्यालय में होगा। ये केन्द्र सेवानिवृत्त बल के कार्मिकों के पुनर्वास में उन्हें मदद देंगे।

ज्ञातव्य है कि के.रि.पु. बल के सेवानिवृत्त अधिकारी और अन्य कार्मिक उच्च रूप से प्रशिक्षित, अनुभवी, तथा अनुशासित कार्मिक होते हैं, जिनकी विश्वसनीयता और पहचान उनके सेवाकाल के दौरान पूरी तरह स्थापित हो चुकी होती है। सेवानिवृत्ति के बावजूद वे शारीरिक रूप से सक्षम तथा मानसिक रूप से सजग होते हैं। उनका दृष्टिकोण अखिल भारतीय होता है। राजपत्रित और अराजपत्रित अधिकारियों को जन

प्रबंध, सामग्री प्रबंधन, प्रशासन, विभाषिकाओं के दौरान राहत तथा बचाव प्रबंधन जैसे कार्यों का व्यापक अनुभव होता है। इनके अतिरिक्त बल की सेवाओं से सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों में अर्द्ध चिकित्सीय कार्मिक, ड्राइवर, मोटर मैकेनिक, टेलीफोन तथा वायरलेस आपरेटर, मोची, बढ़ई, स्टेनोग्राफर, क्लर्क, राष्ट्रीय खेल प्राधिकरण द्वारा प्रशिक्षित प्रशिक्षक, तथा सुरक्षा कार्यों के लिए उपयुक्त कार्मिक होते हैं, जो 55 साल की उम्र में सेवानिवृत्त होते हैं। उप महानिरीक्षकों तथा महानिरीक्षकों की सेवानिवृत्ति की आयु 58 वर्ष है।

सैनिक नीति उपदेश

सुनो सैनिक भाइयो, ध्यान सदा चित लाय।
सैनिक नीति लिखत हूं, थोड़े में समझाय।
जो सैनिक नीति गहे, सदा रहे हर्षाय।
तन मन से सेवा करे, कभी न धोखा खाय।
सैनिक शिक्षा पाय के, होते जब भरपूर।
मात पिता हरि नाम लेय, खाते कसम जरूर।
बेसिक शिक्षा न भूलो, रखो मेन में गोप।
कभी वक्त जब आयेगा, वही बचावे तोप।
सही आदेश को मानिये, कार्य करो मन लाय।
ऐसा सैनिक जो करे, वही तरक्की पाय।
सूर्योदय पहले उठिये, हरि को लिजिए नाम।
मात पिता गुरू बन्दगी, सबको बोलो राम।
सिपाही को चाहिए, रखे सफाई नित्य।
तन वर्दी मन गोली को, और बन्दूक सहित।
संतरी डियूटी पर रहे, नशा करे नहीं पान।
ऐसा सैनिक जो करे, कभी न हो नुकसान।
रात में ऐसा सोइये, जैसे श्वान की नींद।
थोड़ा खटका के पड़े, झट उठाओ संगीन।
जूता वर्दी बेल्ट को, रखो हमेशा साथ।
गोली बम्ब बारूद लो, और राइफल हाथ।
रात्रि डियूटी पर खड़े, आवे कोई दिखाय।
पहले थम पुकारिये, बाद में उसे बुलाये।

संतरों डियूटों जो करे, ऐसा राखे नित्य ।
दुश्मन कबही न आवहीं, भाग दिखावे पीठ ।
हुक्म कभी ना तोड़िये, नियम कभी ना छोड़ ।
चलते वक्त क्लास में, तिनका कभी ना तोड़ ।
हां जी का है नौकरी, ना जी का है घर ।
हां जी-हां जी जो करे, उसे कभी नहीं डर ।
कृति ऐसा कीजिए, जगत बोले जयकार ।
मरने पर भी नाम ले, कहे प्रसाद पुकार ।

रचयिता: राम नारायण प्रसाद
ई/32 बटा.

सड़क संकेत



आदेशात्मक



आई. आर. सी. 67 - 1977 के अनुसार



चेतावनी



संकेत व चिन्ह सड़क की भाषाएँ हैं इन्हें याद कीजिए व

उनका पालन कीजिए ।



सद्भावना दौड़ में भाग लेने वाले बल के कर्मिकों को सम्बोधित करते हुए बल के
अपर महानिदेशक श्री ए.वी.लिङ्गल.

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता । बरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड़
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी ।
मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ीवा कलां, नई दिल्ली - 110 072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3262279

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-6

30 सितंबर, 1995

8 आश्विन, शक 1917



महानिदेशालय में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मिक

सम्पादकीय

सी. आर.पी. एफ. समाचार का यह अंक राजभाषा अंक के रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इस अवसर पर मुझे महात्मा गांधी द्वारा गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर को लिखे एक पत्र का स्मरण रह रह कर आ रहा है। हिंदी नवजीवन के 13 फरवरी, 1921 के अंक में प्रकाशित इस पत्र का एक अंश कहता है- “गुरुदेव की तरह मुझे भी खुली हवा पर श्रद्धा है। मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुयी दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी जाएं। मैं तो यही चाहता हूं कि मेरे घर के आसपास देश विदेश की संस्कृति की हवा बहती रहे, पर मैं यह नहीं चाहता कि उस हवा में जमीन पर से मेरे पैर उखड़ जाएं और मैं औंधे मुंह गिर पड़ूं। मैं दूसरे के घर में अतिथि, भिखारी या गुलाम की हैसियत से रहने को तैयार हूं, लेकिन झूठे घमंड के वश हो कर, या कहीं जाने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए मैं अपने देश के भाई बहनों पर अंग्रेजी का नाहक बोझ डालने से इनकार करता हूं। मैं चाहता हूं कि हमारे देश के जवान लड़के लड़कियों को साहित्य में रस हो, तो वे भले ही दुनिया की दूसरी भाषा की तरह अंग्रेजी जी भर कर पढ़ें। लेकिन मैं उनसे आशा रखूंगा कि वे अंग्रेजी पढ़ने के लाभ डा.बोस राय और खुद गुरुदेव की तरह हिंदुस्तान और दुनिया को दें। लेकिन मुझसे यह बर्दाशत नहीं होगा कि हिंदुस्तान का एक भी आदमी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए या उससे शर्माए या उसे यह लगे कि वह अपने अच्छे विचार अपनी भाषा में नहीं रख सकता।”

इस पत्र को यहां उद्धृत करने का उद्देश्य मात्र यह कहना है कि हम हिंदी प्रेमी जरूर हैं, लेकिन हमारा यह प्रेम अंग्रेजी का विरोधी नहीं है। हम अंग्रेजी के वैज्ञानिक स्वरूप, उसके अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप की प्रशंसा करते हैं, उसे सम्मान देते हैं। लेकिन उसे यह सम्मान देने के लिए हिंदी को पदच्युत करने के हम खिलाफ हैं। दरअसल हिंदी के मुकाबले अंग्रेजी की वकालत करने वाले यह भूल जाते हैं कि हिंदी विश्व की सशक्ततम भाषाओं में से एक है। उसे अपने विकास के लिए किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि अक्सर जलसों और सभाओं में कहा जाता है। दरअसल हिंदी हमारी प्राथमिकताओं में नहीं है। यदि हम हिंदी को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उसे प्राथमिकता देने पर जोर दें, तो संभवतः हिंदी पर हमारा यह बड़ा उपकार होगा। जिस दिन हम समझ गए कि हिंदी को प्रोत्साहन नहीं, प्राथमिकता चाहिए, उस दिन शायद हिंदी के नाम पर चलने वाले प्रोत्साहन कार्यक्रमों की आवश्यकता ही नहीं होगी।

राजभाषा संदेश

14 सितम्बर हमारे देश के इतिहास में अत्यंत पावन दिवस है क्योंकि सन् 1949 में इसी दिन भारत की संविधान सभा ने हिंदी को केन्द्र सरकार के काम-काज की भाषा के रूप में अपनाने की घोषणा की तथा संविधान की धारा 343 में व्यवस्था कर इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया था। स्वतंत्र भारत के संविधान के लागू होने पर, कहने को तो हिंदी संघ सरकार की राजभाषा बन गई किन्तु स्वतंत्रता मिलने के 48 वर्षों बाद भी आज हम अंग्रेजी का मोह पूरी तरह नहीं छोड़ सके।

अन्य विभागों की तुलना में के.रि.पु. बल के लिए सरकार की राजभाषा नीति को पूर्ण रूप से अपनाना और भी अधिक जरूरी है, क्योंकि बल की संपर्क भाषा अर्थात् अधिकारियों तथा जवानों के बीच संवाद की भाषा हिंदी ही है। आंतरिक सुरक्षा को कायम रखने के लिए यह बल सदैव आम लोगों के संपर्क में रहता है और चूंकि अधिकांश जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी है अतः बल के कामकाज में हिंदी की अपनी एक विशेष भूमिका है। आज कोई भी व्यक्ति कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा अरूणाचल प्रदेश से कच्छ (गुजरात) तक हिंदी के सहारे बेहिचक विचरण कर सकता है। उसे लोगों के साथ विचार-विमर्श करने में कोई कठिनाई नहीं होती।

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में क्रमिक वृद्धि लाने के लिए कर्मचारियों के प्रशिक्षणार्थ प्रशिक्षण केन्द्र खोले हुए हैं, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है। वर्ष भर में सर्वाधिक हिंदी डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को नकद पुरस्कार दिए जाते हैं। इसी प्रकार, कर्मचारियों को भी अपना सरकारी काम-काज हिंदी में निपटाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं। अतः बल के वरिष्ठ अधिकारियों से मैं विशेष रूप से अपेक्षा करूंगा कि वे न केवल अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करेंगे वरन् स्वयं भी अधिकांश कार्य हिंदी में कर एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

इस पावन अवसर पर मैं आपको कुछ सुझाव भी देना चाहूंगा जिन्हें अपना कर आप संघ सरकार की राजभाषा के प्रचार-प्रसार व विकास में अमूल्य योगदान दें :—

- (1) कार्यालय से जारी होने वाले सभी परिपत्र/आदेश/ज्ञापन, साइक्लोस्टाइल व प्रिंटिंग सामग्री आदि द्विभाषी अर्थात् हिंदी व अंग्रेजी में जारी करें। ये कागजात द्विभाषी जारी होते हैं, यह देखने की जिम्मेदारी उन पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है।
- (2) कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्र तथा हिंदी में हस्ताक्षरित पत्र के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं।
- (3) कर्मचारियों को अधिकांश संख्या में हिंदी, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण के गहन/अंशकालिक केन्द्रों में शामिल कर प्रशिक्षण की गति को तेज

किया जाए।

- (4) महानिदेशालय में शुक्रवार तथा अन्य कार्यालयों में सोमवार हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाए। इस दिन सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा सम्पूर्ण सरकारी कार्य हिंदी में किया जाए।

शुभकामनाओं सहित।

ह.
(श्री विलास मणि त्रिपाठी)
महानिदेशक, केरिपु बल

महानिदेशालय में हिंदी पखवाड़ा



हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल करने पर महानिदेशक से पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुभाष चंद्र गौतम



वाक् प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार ग्रहण करती हुयीं उप निरीक्षक अहिल्याबाई के.रि.पु. बल महानिदेशालय, नई दिल्ली में हिन्दी पखवाड़े के समापन पर 14 सितम्बर, 95 को हिन्दी दिवस मनाया गया। बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने इस अवधि के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

सहायक उप निरीक्षक सुभाष चन्द्र गौतम को हिन्दी वर्कशाप, टाइपिंग और नोटिंग डाफ्टिंग तीनों प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिये तीन पुरस्कार मिले। नोटिंग डाफ्टिंग में प्रथम स्थान पाने के लिए सहायक उप निरीक्षक प्रतिभा चड्ढा को प्रथम पुरस्कार मिला। इसके अलावा वाक् प्रतियोगिता में उप निरीक्षक एस.आर. अहिल्याबाई को और हिन्दी व्यवहार में हवलदार ईश्वर सिंह को प्रथम पुरस्कार मिला।

महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि यदि हम अपने विचारों को प्रकट करने में स्वाभाविक प्रवाह को अपनायें और उसे रोकें नहीं तो हिन्दी का प्रयोग स्वतः बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि हमें अपने दिन प्रतिदिन के कार्य में संविधान के प्रावधानों को ध्यान में रखना चाहिये और उन्हें कार्यान्वित करना चाहिये। उन्होंने आशा प्रकट की कि हिन्दी प्रयोग में अगले वर्ष इस साल से अधिक काम होगा।

हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी के प्रोत्साहन पर एक वीडियो फिल्म दिखाई गई और केन्द्रीय गृह मंत्री व गृह सचिव के संदेश पढ़ कर सुनाये गये। अंत में उप निदेशक (प्रशासन) श्री डी.आर. यादव ने आभार प्रकट किया।



नोटिंग ड्राफ्टिंग के लिए पहला स्थान प्रतिभा चड्ढा को मिला

पूति कार्यालय खंड का उद्घाटन



पूति कार्यालय खंड का उद्घाटन करती हुयीं श्रीमती इंदु त्रिपाठी



पूर्ति को एक काफी मशीन भेंट करती हुयीं श्रीमती त्रिपाठी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था कावा बोर्ड द्वारा आर.के. पुरम नई दिल्ली में चलाए जा रहे शापिंग काम्पलेक्स “पूर्ति” के कार्यालय खंड का उद्घाटन वैलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्ष श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने किया।

पूर्ति की स्थापना 09 अगस्त, 93 को केन्द्रीय राज्य मंत्री श्रीमती मार्गरेट अल्वा ने एक दीप प्रज्वलित कर की थी। इसकी स्थापना का मूल उद्देश्य के.रि.पु. बल के विभिन्न परिवार कल्याण केंद्रों तथा अन्य स्थानों से प्राप्त वस्तुओं को बिक्री के लिए एक मंच प्रदान करना तथा इस बिक्री से होने वाली आय से कल्याण कार्यक्रमों को चलाना था।

पूर्ति की सचिव श्रीमति प्रसाद ने इस अवसर पर बोलते हुए बताया कि इन दो से भी कम वर्षों में पूर्ति ने आर.के.पुरम तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में पहचान बना ली है। इस अवधि के दौरान पूर्ति ने लगभग ढाई लाख रुपये का लाभ कमाया है। उन्होंने बताया है कि उनका लक्ष्य प्रति माह पूर्ति की बिक्री को एक से सवा लाख रुपये तक बढ़ाने का है। उन्होंने बताया कि वे इस लक्ष्य को शीघ्र ही प्राप्त कर लेंगे। अगस्त माह में पूर्ति की बिक्री 93 हजार रुपये की रही थी। इसका श्रेय उन्होंने इंदु त्रिपाठी के कुशल निर्देशन तथा पूर्ति के स्टाफ की समर्पित सेवाओं को दिया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने पूर्ति के माध्यम से होने वाले लाभ से चलायी जाने वाली कल्याण योजनाओं की जानकारी भी दी।

समारोह में बड़ी संख्या में के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

जाजें सी. फ्रांसिस को प्रधानमंत्री रजत कप निबंध प्रतियोगिता का पुरस्कार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में कार्यरत सहायक निदेशक (स्थापना-2) जॉर्ज सी. फ्रांसिस द्वारा लिखित निबंध को प्रधानमंत्री रजत कप निबंध प्रतियोगिता-1994 का दूसरा पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके लिए उन्हें तीन हजार रूपए नकद तथा एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

इस निबंध प्रतियोगिता का आयोजन सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद द्वारा 1976 से लगातार प्रति वर्ष किया जाता है। इस प्रतियोगिता में पूरे देश के पुलिस कर्मी भाग ले सकते हैं।

राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा

राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा दो भिन्न अर्थों वाले शब्द हैं यद्यपि काफी समय तक इन शब्दों को एक ही उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है। किसी भी देश में सरकारी कार्यों के निष्पादन के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं। जबकि देश की अधिकांश जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं।

यूनेस्को के अनुसार, “जो सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार की गई हो और शासन तथा जनता के मध्य आपसी सम्पर्क के काम आती हो, उसे राजभाषा कहते हैं”।

हमारे देश में प्रारम्भ में संस्कृत तथा उसके पश्चात् हिन्दी को राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ। मुगल काल में फारसी राजभाषा बन गई, यद्यपि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को ही गौरव प्राप्त रहा। अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी का प्रसार होता गया और वह फारसी के स्थान पर राजभाषा या प्रशासनिक भाषा बन गई लेकिन राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी अपना स्थान बनाए रही।

स्वाधीनता संग्राम के नेताओं ने जन सम्पर्क अभियान में आम आदमी की भाषा का उपयोग किया। राष्ट्रीय जागरण अभियान के दौरान हिन्दी का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा के पांच आवश्यक गुण बताये—

अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली जाती हो।

सीखने में आसान हो।

सरकारी कर्मचारी आसानी से प्रयोग में ला सकें।

समस्त देश में धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक सम्पर्क का माध्यम हो।

इसके प्रसार के लिए क्षणिक हितों की उपेक्षा न हो और समय का बन्धन न हो।

इन गुणों के आधार पर भारत में हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी जो एक विशाल जनसामान्य की भाषा थी। इसलिए इसे राष्ट्रभाषा कहा गया। इसी आधार पर संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया।

राष्ट्रभाषा देश के नागरिकों में राष्ट्रीयता, भावनात्मक एकता और पारस्परिक सामंजस्य का मंत्र फूंकती है, देशवासियों के विवेक को जगा कर उनमें नवीन स्फूर्ति का संचार करती है, शासन के कार्य को जनता की भाषा में चलाती है, जनता में “स्व” का भाव उत्पन्न कर राष्ट्रीय गौरव की अनुभूति कराती है।

स.उ.नि. (एम) सुनीता अरोरा
पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय, स्पेशल रेंज,
नई दिल्ली

हिन्दी ही राजभाषा क्यों?

14 सितम्बर, 1949 के दिन भारतीय संविधान द्वारा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था।

हमारे देश में अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं। प्रायः यह देखा गया है कि थोड़ी थोड़ी दूरी के बाद यहां पर बोलियां बदल जाती हैं। इस सन्दर्भ में कहा गया है कि:-

“कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी”

यह कहावत हमारे देश के सन्दर्भ में शत-प्रतिशत सही सिद्ध होती है। अब बात यह सामने आती है कि जब इस देश में इतनी भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं तो हमारी राजभाषा हिन्दी ही क्यों हो? हिन्दी हमारी राजभाषा है। इसे स्वीकार करने के पक्ष में तर्क यह है कि भारतीय जनमानस के लिए हिन्दी बोलना और समझना जितना आसान है उतना अन्य किसी दूसरी भाषा को नहीं। भारत जैसे विशाल देश के किसी भी भू-भाग में यदि हिन्दी बोली जाए या फिर सुनी या सुनाई जाए तो इसे जानने-समझने वालों का प्रतिशत सदैव ज्यादा आता है अपेक्षाकृत किसी दूसरी भाषा की तुलना में। यहां पर थोड़ा सा अपवाद कुछ भारतीय राज्यों के सन्दर्भ में अवश्य हो सकता है, किन्तु वहां पर भी किसी अन्य भाषा की तुलना में हिन्दी को समझने वालों का प्रतिशत अधिक होगा। स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश के कोने-कोने में लोगों से सम्पर्क करने के लिए हिन्दी ने ही सम्पर्क सूत्र का काम किया है। महान स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दी के माध्यम से ही पूरे देश में एकता का सूत्रपात किया था। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमने राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करके इसके प्रति सही सम्मान प्रदर्शित किया है।

अब सोचने की बात यह है कि जब हिन्दी ही हमारी राजभाषा है तो इसके समुचित

प्रयोग तथा प्रगाते में बाधाएं क्यों बनी हुई हैं। यहां पर कहना गलत नहीं होगा कि बाधाएं बिल्कुल बनावटी हैं और जब तक हमारी मानसिकता राजभाषा हिंदी के पक्ष में नहीं हो जाती है, तब तक इसके विकास के मार्ग में कुछ न कुछ अवरोध बना रहेगा। फिर भी हिंदी का प्रयोग दिनों दिन सरकारी कामकाज में बढ़ता जा रहा है जो राजभाषा के विकास के लिए एक शुभ संकेत है।

हिंदी हमारी राजभाषा है, अब यह पूरे विश्वास के साथ मान लिया गया है। हिंदी जन-जन की भाषा है। यह हमारे लिए एक गर्व की बात है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने काम-काज में दिनों दिन हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें जिससे यह और विकास की ओर अग्रसर हो।

—उ.नि. (एम.) अमरनाथ सिंह कुशवाह
एस.जी.सी. रांची

राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन

हिन्दी को रहीमदास जी की निम्नोक्ति के परिप्रेक्ष्य में राजभाषा घोषित करने के साथ ही जनभाषा की मान्यता दे कर इसका प्रचार प्रसार किया जाता तो परिणाम ज्यादा फलदायी होता।

“एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय,
रहिमन सींचे मूल को फूले फले अघाय” ।

मूल को सींचने एवं जनभाषा से तात्पर्य यह है कि हिन्दी का प्रचार जिस प्रकार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में किया जा रहा है उसी तरह यदि सभी राज्यों, विशेष कर अहिन्दीभाषी राज्यों की शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में अपना कर जन-जन को हिन्द का पाठ पढ़ा कर किया जाता तो कम से कम आज नियुक्त होने वाले कार्मिकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। आज भी इस तथ्य पर विचार नहीं किया जा रहा है। परिणामतः आज भी कई राज्यों में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है और आज नवनियुक्त कार्मिकों को भी सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ रही है। सेवाकालीन प्रशिक्षण के संदर्भ में कहना है कि बाल्यावस्था में जो शिक्षा ग्रहण की जा सकती है वह प्रौढ़ावस्था में कदापि नहीं।

आज भी हिन्दी को प्रथम दर्जा न दे कर विकल्प के रूप में ही स्थान दिया गया है। अभी भी अंग्रेजी में प्रशिक्षित लोगों की नियुक्ति इत्यादि में ज्यादा अवसर उपलब्ध हैं। यह सार्वभौमिक सत्य है कि जब “क” वस्तु की जगह “ख” वस्तु को स्थान देना हो तो “क” वस्तु का बहिष्का या निषेध करना आवश्यक है। प्रोत्साहन के आधार पर 30 वर्षों के प्रयास से जो उपलब्धि मिल पाती है, वह संतोषजनक नहीं कही जा सकती है

। प्रसंगवश यहां पर यह कहना अत्युक्त नहीं होगा कि आंकड़ों पर आधारित उपलब्धि पर यदि भरोसा किया जा रहा है तो इसे भी मृगतृष्णा ही कहा जा सकता है।

सामान्यतया राजभाषा कार्यान्वयन की पथ-प्रदर्शक नीतियां अनुरोध एवं उदारता के सिद्धान्त पर आधारित हैं, अतः हिन्दी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाली शक्तियां सशक्त बन कर राजभाषा कार्यान्वयन के सुगम मार्ग को दुर्गम बना देने में अपने को समर्थ पाती हैं। किसी व्यक्ति या समाज के समक्ष अतिशय उदारता के साथ पेश आने से स्वयं को उपहास का पात्र बनना पड़ता है। यही स्थिति राजभाषा कार्यान्वयन में लगी मशीनरी की है। यदि प्रोत्साहन को ही आधार मान कर हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना है तो हिन्दी में सुशिक्षित जनों को नियुक्ति इत्यादि के सम्बन्ध में वरीयता देकर अपेक्षाकृत अधिक अवसर उपलब्ध कराना उचित होगा। आखिर हमें अपनी भाषा में बातचीत करने एवं काम-काज करने में लज्जा का अनुभव क्यों? हमें तो देवनागरी का प्रयोग करके गौरवान्वित होना चाहिए। आइए हम सब एक साथ मिल कर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दे कर देश की भाषा का गौरव बढ़ाएं।

निरीक्षक/हिंदी अनुवादक
नरेश यादव
ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर

हिंदी में लिखना कितना आसान

सरकारी कार्यालयों में कई व्यक्ति सरकारी कामकाज हिन्दी में करना चाहते हैं, लेकिन बार-बार एक प्रश्न उनके सामने आ जाता है कि क्या वे हिन्दी में काम कर भी सकेंगे। इस स्थिति के अनेक कारण हैं। कुछ लोगों की यह धारणा बन चुकी है कि जो बात सीधे-सीधे शब्दों में आसानी से समझ में आ जाए वह हिन्दी नहीं हो सकती। हिन्दी लिखते समय आप अनुवाद की बात बिल्कुल न सोचें। यदि आप अपनी बात पहले अंग्रेजी में सोचेंगे और फिर उसका हिन्दी में अनुवाद करने की कोशिश करेंगे तो इसमें आपको देर लगेगी और भाषा भी अच्छी नहीं लगेगी। आदत डालिये कि जो कहना चाहते हैं उसे सीधे हिन्दी में लिखा जाए। यदि ऐसा करेंगे तो हिन्दी के शब्द अपने आप ही आपकी कलम से कागज में उतरते जाएंगे, न आपको अनुवाद का झंझट उठाना पड़ेगा और न काम में देर लगेगी। सहज भाव से लिखी हिन्दी सबकी समझ आयेगी और सब उसकी प्रशंसा करेंगे। जो लोग अनुवाद के माध्यम से हिन्दी में काम करते हैं, उन्हें उस सहारे की लगातार जरूरत बनी रहती है।

शब्दों के गुलाम बनने से बचे। यदि किसी शब्द का हिन्दी पर्याय नहीं मालूम है तब भी न घबरायें और न अपनी कलम रूकने दें। अंग्रेजी में प्रचलित शब्द को देवनागरी में लिख कर काम चला ले जैसे- “सीनियर”, “कारपोरेशन”, कमान्डेन्ट, “आफिस सेक्रेटरी”, आठ-दस दिन में आप स्वयं ही “सचिव” जैसे शब्दों से परिचित हो जायेंगे

और उसमें देर भी लग जाए तब भी चिंता की कोई बात नहीं। सभी कार्यालयों में शब्दकोश हैं। पर शब्दकोश की सहायता तभी लीजिए जब बहुत ही आवश्यक हो। हर समय उनकी ओर नहीं दौड़ना चाहिए। कठिनाई तब होती है, जब प्रत्येक शब्द का हिंदी पर्याय शब्दकोश में ढूँढने का प्रयत्न किया जाता है और यदि पर्याय मालूम न हो तो हिंदी लिखने का प्रयास आरम्भ ही नहीं किया जाता।

कुछ विशेष तकनीकी शब्दों के लिए अधिकृत हिंदी पर्यायों की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें हिंदी में ढूँढना कोई बुरी बात नहीं है। परन्तु जब कोई व्यक्ति “बट” शब्द के लिए शब्दकोश से यह ढूँढने का प्रयास करें कि उसके पर्याय के रूप में लेकिन, परन्तु, किन्तु आदि में से कौन सा पर्याय अधिक उपयुक्त होगा तो यह प्रयास न सराहनीय होगा और न हिंदी की प्रगति को बढ़ाने वाला, इसमें से जो भी शब्द बिना रुके लिख दें वहीं ठीक है।

अपने आप में विश्वास पैदा करें कि आप काफी हिंदी जानते हैं। जितनी जानते हैं उसको आधार बना कर अपने कार्यालय का काम हिंदी में करना आरम्भ कर दीजिये। कुछ दिन के अभ्यास से आपकी भाषा मंजने लगेगी, तब वह और अच्छी दिखाई पड़ेगी।

आप यदि हिंदी लिखना शुरू करेंगे तो इससे आपके साथी और अधीनस्थ अधिकारी भी प्रेरणा लेंगे। आप पहल कीजिए, स्वयं आगे आइये थोड़े दिन में ही दिखाई पड़ेगा कि आप अकेले नहीं हैं। इनमें काफी संख्या ऐसे व्यक्तियों की होगी, जिन्हें हिंदी का मामूली ज्ञान है।

—हिंदी अनुवादक शिव कुमार खंडेलवाल
अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर
अंचल, चंडीगढ़ कार्यालय

कविताएं हिन्दी गुणगान

हिन्द और हिन्दी का कैसे हम करें मान
आज हिन्दी दिवस पर अर्पित है शब्द गान।
कश्मीर की कन्या, केरल की है कुमारी
भारत की सरस सौम्य सरल सुकुमारी
देववाणी संस्कृत की दोहित्री प्यारी
साम की सरिता है सचल और न्यारी।

बारह स्वरों के सरगम की आशा
छत्तीस व्यंजनों से व्यंजित यह भाषा।
जम्बूद्वीप वासियों की संपर्क अभिलाषा
विधि सम्मत सार्थक है सुमधुर राष्ट्रभाषा।
ब्रम्ह नाद नादिता है ब्रम्हाक्षर नागरी
नागरी में जो भी लिखें वही ब्रम्ह वाकरी
बाह्य और अन्तर की वैज्ञानिक भाषरी।
स्वर और अक्षरों की सम्यक विभावरी।
पाणिनी के नियमों पर है यह आधारित
गुरू कामता के व्याकरण से यह प्रशासित ।
शुद्ध वैयाकाणिक भारोपीय कुल भाषा
सद साहित्य रचना अभिव्यक्ति की आशा।
विद्यापति, तुलसी, सूर, संत नानक की बिन्दी
हरिश्चन्द्र, सुभाष, राजेन्द्र, दिनकर की हिन्दी
शुक्ल, द्विवेदी, निराला, महादेवी की आशा
आधुनिक हिन्दी लेखक कवियों की भाषा।
हिन्दी और हिन्दी ही है राष्ट्र शक्ति शान
हिन्दी ही राष्ट्र की भाषा है सर्व मान्य
आज राष्ट्रभाषा हिन्दी का करते ऐसे मान
जन जन हित, राष्ट्रहित हिन्दी है हिन्द शान।
हिन्द और हिन्दी का करते हम ऐसे मान
आज हिन्दी दिवस को अर्पित यह शब्द गान

श्री त्रिभुवन त्रिवेदी
कमान्डेन्ट, पुलिस उप महानिरीक्षक
कार्यालय कोहिमा

हिंदी पर जोर

हिंदी में काम करो, हिंदी का जोर है,
कार्यालय में हिंदी पर, मच रहा शोर है।
हिंदी हिंद की, एकता की कड़ी है,

सांवेधान में व्यवस्था, इसीलिए करो है।
हिंदी में बोलना, सबसे अधिक सरल है,
इसलिए हमको, इस पर इतना गर्व है।
बड़े बड़े लोगों ने, इसकी प्रशंसा करी है,
क्योंकि हिंदी भारत की, एकता की कड़ी है।
जैसे बोलो वैसे लिखो, अभिव्यक्ति सही है,
इसी में है राज-भक्ति, देश-भक्ति यही है।
हिंदी में ही कार्यशाला, रंगशाला कीजिए,
प्रतियोगिता में भाग ले कर, ईनाम भी लीजिए।
औरों को प्रोत्साहित कर, आगे उन्हें करना है,
राष्ट्रभाषा, राजभाषा, हिंदी भाषा कहना है।
मोर्निंग के स्थान पर, नमस्ते कहना शेष है,
कार्यालय में सभी का, यही तो उद्देश्य है।
बोए हैं बीज, राजभाषा हिंदी के,
खाएंगे फल, राष्ट्रभाषा हिंदी के।
कोई भी क्षेत्र हो, हिंदी का उजाला है,
अंग्रेजी का केन्द्र से, पिट गया दिवाला है।
समय है बहुमूल्य, सोचने समझने का,
देर से अबेर से, जगने जगाने का।
आमंत्रण है हिंदी के, सच्चे सेवाभक्तों का,
सत्यनिष्ठ रूचिवान, अच्छे राजभक्तों का।
आओ उद्धार करो, हिंदी का मोर है।
अंग्रेजी की जगह पर, हिंदी का दौर है

—हिंदी अनुवादक मोहन सिंह
ग्रुप केन्द्र गुड़गांव

37 बटालियन की उपलब्धियां



महानिदेशक महोदय को 37 बटालियन की तैनाती की जानकारी देते हुए कमांडेंट सी.जे.एस. हीरा

01 जुलाई, 1968 को भारत सरकार द्वारा आई.आर.बटा. (एस.ए.पी. केरला-11) को 37 बटा. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में तब्दील किया गया। तब से ले कर अब तक 37 बटा., भारत वर्ष के अलग अलग राज्यों में विभिन्न प्रकार की ड्यूटियां निभाती आई है। कानून व्यवस्था तथा अन्य आतंकवाद विरोधी अभियानों के अलावा देश पर आई कुदरती विपदा के समय लोगों के साथ मिल कर काम किया तथा जनता की हमदर्दी के साथ साथ के.रि.पु. बल का नाम ऊंचा किया। आज तक बहादुरी कारनामों की वजह से इस वाहिनी के सात सदस्यों को राष्ट्रपति के वीरता मैडल में सम्मानित किया जा चुका है, जिसमें 4 पदक मरणोपरान्त हैं। 37 बटालियन सी.आर.पी.एफ. आज तक आन्ध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, पंजाब, त्रिपुरा, जम्मू व कश्मीर में तैनात रही और 1993 में दुबारा त्रिपुरा राज्य में तैनात की गई है। वर्तमान समय में बटालियन का नेतृत्व श्री सी.जे.एस. हीरा, कमान्डेन्ट 17 नवम्बर, 94 से कर रहे है। इस बटालियन ने श्री सी.जे.एस. हीरा, कमान्डेन्ट के नेतृत्व के दौरान आज तक 30 हथियारों के साथ 11 आतंकवादियों को पकड़ा है। के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने हाल में त्रिपुरा राज्य का दौरा किया। इसी दौरान उन्होंने 37 बटालियन का भी दौरा किया जिसमें इस बटालियन के किये गए कार्यों की समीक्षा तथा प्रशंसा की।

बटालियन कमान्डेन्ट श्री सी.जे.एस. हीरा को इस वर्ष हिन्दी प्रोत्साहन के लिए महानिदेशालय द्वारा पुरस्कृत किया गया है। इससे पहले वर्ष 1994 में भी श्री सी.जे.एस.हीरा को महानिदेशालय द्वारा हिंदी प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका है तथा 1994 में ही उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के महानिरीक्षक द्वारा भी हिंदी प्रोत्साहन के लिए पुरस्कृत किया जा चुका है।

महानिदेशालय में हिंदी कार्यशाला

के.रि.पु. बल महानिदेशालय में 21 से 25 अगस्त, 95 तक एक पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में महानिदेशालय में विभिन्न पदों पर कार्यरत 18 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। बल के पूर्व हिंदी अधिकारी तथा वर्तमान में रक्षा मंत्रालय में अनुवाद अधिकारी के पद पर कार्यरत श्री प्रेम चन्द्र धस्माना ने कार्यशाला में राजभाषा की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियमों तथा नियमों और सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित अन्य पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनके अतिरिक्त, महानिदेशालय के हिन्दी अनुभाग में कार्यरत पदाधिकारियों ने भी कर्मचारियों को विभिन्न प्रोत्साहनों व शब्दावली की जानकारी दी। कर्मचारियों की हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने के लिए हिन्दी में टिप्पणी एवं प्रारूप लिखने का गहन अभ्यास कराया गया। कार्यशाला में इस बात पर भी जोर दिया गया कि हिन्दी में टिप्पणियां एवं पत्र मूल रूप से हिन्दी में ही सोच कर सरल भाषा में लिखे जाएं। इसके लिए शब्दकोश का सहारा न लिया जाए। किसी अंग्रेजी अक्षर का हिन्दी पर्याय मालूम न होने पर उसे ज्यों-का-त्यों देवनागरी में लिख दिया जाए।

कार्यशाला के अन्त में सभी प्रतियोगियों के लिए एक प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन भी किया गया।

के.रि.पु.बल ने 162 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अगस्त, 95 में पूरे देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में कुल 162 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 21 मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए।

इन मुठभेड़ों में बल के कार्मिकों ने 51 घातक हथियार तथा 1757 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में एक ए.के. 56 रायफल, तीन ए.के. 47 रायफलें, चार कारबाइन, दो स्टेनगन, दो एस.एल.आर., पांच अन्य रायफलें तथा एक पिस्तौल सहित 24 अन्य हथियार शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के तीन कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 13 गंभीर रूप से घायल।

जोखिम निधि लाभ

माह अगस्त, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 4 मामलों में कुल 1,10,500 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इनमें केन्द्रीय कल्याण निधि की कुछ मामलों में 10,000 तथा कुछ मामलों में 12,500 रुपये की राशि भी शामिल है।

जोखेम निधे पाट-बो स्पेशल कल्याण निधे से भी उसके 13 सदस्यों को मृत्यु के मामले में प्रति सदस्य 35,000 रुपये की दर से कुल 4,55,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

माह अगस्त, 95 में बल के मृत कार्मिक

माह अगस्त, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतृप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल पी.एस.कोर (ग्रुप केन्द्र नागपुर), हवलदार पट्टी राम (7 बटा.), हवलदार प्रेम सिंह (61 बटा.), नायक विजय बहादुर (28 बटा.), कांस्टेबल टी. जे. संतोष कुमार (18 बटा.), वाटर कैरियर नंद लाल शर्मा (ग्रुप केन्द्र पिंजौर), कांस्टेबल पी. कुमार (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), कांस्टेबल जोन करकौटा (123 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट बी.पी. चौधरी (39 बटा.), इंस्पेक्टर एल.एल. श्रीवास्तव (35 बटा.), कांस्टेबल गणपत राम (63 बटा.), सफाई कर्मचारी एस.एम.डी. ब्रह्मा (87 बटा.), कांस्टेबल बी.एन. राव (4 सिगनल बटा.), नायक विनोद कुमार झा (43 बटा.), कांस्टेबल देवेंद्र प्रताप सिंह (112 बटा.), कांस्टेबल संतोष कुमार (48 बटा.), कांस्टेबल विलास भिक्का चव्हाण (119 बटा.), हवलदार चारव औरन (101 बटा.), कांस्टेबल सुरेंद्र सिंह (14 बटा.), कांस्टेबल के.जी. शिवा शारमुगम (84 बटा.), कांस्टेबल के शाम बहाय (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), कांस्टेबल राजपाल सिंह (9 बटा.), लांस नायक सुखदेव सिंह (114 बटा.)।

व्यंग्य

कृपया इसे न पढ़े

अरे-रे-रे.... आपने पढ़ा नहीं, ऊपर क्या लिखा है। साफ-साफ तो लिखा है कि कृपया इसे न पढ़ें, फिर भी आप इसे पढ़े जा रहे हैं। आप बड़े फालतू किस्म के आदमी जान पड़ते हैं। क्या कोई काम-धंधा नहीं है आपके पास जो आप मना करने पर भी पढ़े जा रहे हैं। लगता है ऐसे लोगों में से आप भी हैं, जहां लिखा रहता है कि कृपया यहां थूकना मना है और थूक दिये पिच से। यानि जो काम करने से मना करेंगे वही करेंगे। तो अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब भी मान जाइए, मैं आपसे शराफत से कह रहा हूं कि कृपया आगे पढ़ना बंद कर दें।

अरे वाह। पुलकित हो-हो कर पढ़ते जा रहे हैं जबकि मैं बार-बार मना करता जा रहा हूं। अजीब चिकने घड़े हैं आप, शराफत से कोई बात कहने पर तो आपके कान में जूं तक नहीं रेंगती है। हां हां मैं आपसे ही कह रहा हूं। भगवान के लिए पढ़ना बंद कर दें, वरना अनर्थ हो जायेगा। मैं आखिरी बार चेतावनी देता हूं। भले आदमी की तरह मान जाइये और इसे पढ़ना बंद कर दीजिये, अन्यथा परिणाम अच्छा नहीं होगा।

अरे वाह। आप तो मेरी बात मानते ही नहीं। यह आप का दोष नहीं है, हमारे देश का हर व्यक्ति यही कर रहा है जो उसे नहीं करना चाहिए, तो फिर आप को मैं क्यों दोष दूं। मेरा निवेदन है अब तो परेशान न करें और पढ़ना बंद कर दें।

मेरे इतना कहने पर भी आप मेरी बात नहीं मान रहे हैं।

खैर मैं भी देखता हूं आप कैसे पढ़ते हैं। जब लिखना ही बंद कर दूंगा तो पढ़ोगे क्या खाक।

—स.उ.नि. (एम) अनिल कुमार द्विवेदी
102 बटालियन

सड़क संकेत



आई. आर. सी. 67-1977 के अनुसार



संकेत व चिन्ह सड़क की भाषाएँ हैं इन्हें याद कीजिए व

उनका पालन कीजिए ।



पूर्ति कार्यालय खंड का उद्घाटन करती हुयी श्रीमती त्रिपाठी

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता । चरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड़
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी।
मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ोदा कलां, नई दिल्ली - 110 072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3262279

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-7

30 नवंबर, 1995

9 अग्रहायण, शक 1917



महानिदेशक के.रि.पु.बल श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी केंद्रीय गृह राज्य मंत्री प्रोफेसर एम. कामसन को आर.ए.एफ.
वार्षिक परेड के अवसर पर एक स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

सम्पादकीय

अब से 36 वर्ष पूर्व 21 अक्टूबर, 1959 को हाट स्प्रिंग्स की बर्फ़ीली चट्टानों पर के.रि.पु. बल के 10 वीर जवानों ने अपनी वीरता की एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी थी, जो आज तक देश के सभी पुलिसकर्मियों के हृदय में प्रेरणा की मशाल बन कर धधक रही है।

ये जवान सीमा पर आजादी के सुरक्षा प्रहरी के रूप में तैनात थे। युद्ध क्षेत्र में पीठ दिखाने की अपेक्षा उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर कर देना कहीं बेहतर समझा। और हंसते हंसते अपने प्राण दे दिए, ताकि हम जी सकें। वह स्थान जहां वे शहीद हुए, एक स्मारक बन गया।

ज्यों ज्यों हमारी आंतरिक सुरक्षा पर घात प्रतिघात बढ़ते जा रहे हैं, त्यों त्यों देश के पुलिस कर्मियों का कार्य अधिक तनावपूर्ण, अधिक जोखिमपूर्ण होता जा रहा है। साथ ही अपनी मातृ भूमि पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले बहादुर पुलिस कर्मियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही है।

21 अक्टूबर पुलिस स्मारक दिवस है, अपने इन्हीं शहीद हुए वीर साथियों की याद में श्रद्धा से शीश नवाने का दिवस। आज हमारे पास अपने इन बहादुर साथियों की स्मृति ही शेष है। किंतु यह स्मृति एक अमूल्य धरोहर है। यह हमें बताती है कि हमारा लहू जो हमारी धमनियों में प्राण बन दौड़ रहा है, इस देश की थाती है। इतिहास गवाह है, जब जब जरूरत पड़ी है, लद्दाख में हाट स्प्रिंग्स से ले कर श्रीलंका में जाफना तक, कच्छ में सरदार पोस्ट से ले कर, सात बहनों के आंचल पूर्व नेफा तक में हमारे साथियों ने स्वेच्छा से अपनी अंजुरी भर भर कर रक्त दिया है। ये रक्त चाहे आतंकवाद की तपिश पर सावन के पहले मेघ की फुहार बन कर गिरा हो, या फिर मृत्यु से जूझते किसी मानव के शरीर में प्राण बन कर संचारित हुआ हो, इसका मकसद कभी व्यर्थ नहीं गया। परिणाम सामने है, असम आज शांत है, पंजाब में पहले सी हलचल दिखाई नहीं देती, उत्तर पूर्व में हमारे जवानों के जांबाज कारनामे आज भी विद्रोहियों के दिल में निश्चित दहशत की लहर भर देते होंगे, जम्मू कश्मीर में स्थिति कुछ विकट है, मगर वहां भी शांति शीघ्र ही कायम होगी, हमें ऐसी आशा ही नहीं विश्वास है और इस विश्वास का आधार है हमारी प्रतिबद्धता, हमारी शपथ और हमारी गर्व भरी परंपराएं।

पुलिस स्मारक दिवस पर अपने साथियों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि इसी शपथ और इन्हीं परंपराओं का पुनः स्मरण होगा।

रिज्जेन अंगमो ने अंतर्राष्ट्रीय मैराथन जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सब इंस्पेक्टर रिज्जेन अंगमो ने बैंगकाक अंतर्राष्ट्रीय

मैराथन दौड़ में महिला वर्ग को टाफी जीत ली। बेंकाक में हुई इस 42.19 कि.मी. दौड़ को जीतने पर सुश्री रिग्जेन अंगमो को स्वर्ण पदक के साथ साथ 4000 अमरीकी डॉलर भी प्रदान किए गए। सुश्री अंगमो ने यह दौड़ 2 घंटे 51.14 मिनट में पूरी की।

इस दौड़ में यूरोपीय तथा एशियायी देशों के लगभग 3000 धावकों ने भाग लिया था। अंगमो को स्वीडन की मैटन फ्रानकोरस ने कड़ा मुकाबला दिया। वह कुल 2 घंटे 51.51 मिनट ले कर दूसरे स्थान पर रही। तीसरे स्थान पर रही अमरीकी धावक माइकल पीटरस ने 3 घंटे तथा 1.53 मिनट का समय लिया।

भारत के दो और धावकों-परमवीर तथा सुरेन्द्र ने भी यह दौड़ पूरी की।

इस वर्ष के शुरू में इंडोनेशिया में हुई मलंग अंतर्राष्ट्रीय मैराथन में भी रिग्जेन अंगमो ने तीसरा स्थान प्राप्त किया था। इसके अतिरिक्त अंगमो ने भारतीय ओपन रथ मैराथन में भी स्वर्ण पदक जीता।



अपनी ट्रॉफी के साथ रिज्जेन अंगमो

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह अक्टूबर, 95 में मृत्यु के कुल 83 मामलों में 33,17,000 रुपये देने स्वीकृत किये गए। इनमें केन्द्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

नव नियुक्तियां

श्री एस.एम. कैरे

महानिरीक्षक (परिचालन, पंजाब और चंडीगढ़)



भारतीय पुलिस सेवा के 1967 बैच और बिहार कैडर के अधिकारी श्री एस. म. कैरे 15 सितम्बर, 95 से महानिरीक्षक (परिचालन) पंजाब एवं चंडीगढ़ के पद पर कार्यरत हैं।

के.रि.पु. बल में आने से पूर्व श्री कैरे कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। इनके कुछ महत्वपूर्ण पदभारों में से गया, औरंगाबाद और सीतामढ़ी क्षेत्रों के पुलिस अधीक्षक का पदभार भी शामिल है। श्री कैरे इन क्षेत्रों में तब पुलिस अधीक्षक थे, जब ये जिले पूरी तरह जे.पी. आंदोलन की चपेट में थे। श्री कैरे लगभग छः वर्षों तक सी.बी.आई. दिल्ली में भी पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत रहे। वह पुलिस उप महानिरीक्षक विजीलेंस पटना (बिहार), मगध रेंज (गया मुख्यालय में) तथा

मुजफ्फरपुर रेंज भी रहे। वह मुजफ्फरपुर जोन के महानिरीक्षक भी रहे। के.रि.पु. बल में आने से पूर्व वह बिहार तकनीकी सेवाओं में महानिरीक्षक पद पर कार्यरत थे।

प्राचीन पांडुलिपियों का अध्ययन उनकी प्रिय रुचि है तथा आयुर्वेदिक दवाओं के क्षेत्र में उनकी उपयोगी खोजों से कई मरीज अपनी कष्टसाध्य बिमारियों से निजात पा चुके हैं। श्री कैरे क्रिकेट, टेनिस तथा बैडमिंटन के अच्छे खिलाड़ी हैं।

श्री के. लालझुंगा

महानिरीक्षक उत्तर पूर्वी सेक्टर



भारतीय पुलिस सेवा के 1968 बैच तथा असम व मणिपुर कैडर के अधिकारी श्री के. लालझुंगा 27 जुलाई, 95 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिवार में शामिल हुए तथा 11 अगस्त, 95 को उन्होंने बल के उत्तर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक का पदभार संभाल लिया।

के.रि.पु. बल में शामिल होने से पूर्व वह कई महत्वपूर्ण पदधारों पर रहे। उनके कुछ महत्वपूर्ण पदधारों में असम पुलिस की आठ बटालियन के कमांडेंट, रेलवे पुलिस हाफलोंग के पुलिस अधीक्षक, असम पुलिस डिबरूगढ़ के पुलिस अधीक्षक, असम पुलिस दक्षिण रेंज सिलचर के उप महानिरीक्षक, असम पुलिस के डेरगांव स्थित पुलिस ट्रेनिंग तथा आर्ड पुलिस के उप महानिरीक्षक, मिजोरम पुलिस की स्पेशल ब्रांच तथा सी.आई. डी. में उप महानिरीक्षक, मिजोरम पुलिस के महानिरीक्षक तथा असम राज्य विद्युत बोर्ड में सलाहकार सुरक्षा एवं निगरानी के पदभार शामिल हैं।

श्री लालझुंगा ने पुलिस के कार्य व्यवहार एवं व्यवसायिक दक्षता से संबंधित कई

कोरों तथा सीमेनारों में भाग लिया है।

हिंदी के क्षेत्र में उपलब्धियां

ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी को राजभाषा शील्ड

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालनार्थ जारी वार्षिक कार्यक्रमों में निर्धारित लक्ष्यों का पूर्ण पालन करने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में से ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी को वर्ष 1993-94 में प्रथम स्थान हासिल हुआ है।



असम के राज्यपाल श्री लोकनाथ मिश्र से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री जोगेंद्र बस्नेत गुवाहाटी स्थित रवींद्र भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में 03 नवम्बर, 95 को असम के राज्यपाल श्री लोकनाथ मिश्र ने ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री जोगेंद्र बस्नेत को राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता भारत सरकार के राजभाषा विभाग के सचिव ने की।

बनतलाब में हिंदी दिवस

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र बनतलाब में जम्मू स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए 26 सितम्बर, 95 को हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता तथा कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



बनतलाब में हिंदी दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री ए.वी. लिडल

इस अवसर पर बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिडल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने एक दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया।

श्री लिडल ने इस अवसर पर बोलते हुए भारतीय संस्कृति के संरक्षण में हिंदी के योगदान तथा हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के सभी पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

रेपिड एक्शन फोर्स की तीसरी वर्षगांठ

आर.ए.एफ. संरक्षक की तरह कार्य करे : प्रो. कामसन

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री प्रो. एम कामसन का कहना है कि रेपिड एक्शन फोर्स को साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निपटते समय अपनी स्थिति एक ही परिवार के दो झगड़ने वाले बच्चों के अभिभावक एवं संरक्षक के समान बनाए रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आर.ए.एफ. को सेना की तरह काम नहीं करना है, क्योंकि झगड़ने वाले समुदाय हमारे शत्रु नहीं बल्कि इसी देश के नागरिक हैं। कभी कभी वे छोटी छोटी बातों पर झगड़ जरूर पड़ते हैं मगर उनसे उसी तरह निपटा जाना चाहिए।

प्रो. कामसन इलाहाबाद में 07 अक्टूबर, 95 को रेपिड एक्शन फोर्स की तीसरी वर्षगांठ पर जवानों तथा अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद ब्रिटिश राज की अपेक्षा पुलिस की भूमिका में बहुत बड़ा बदलाव आया है। आज मुकाबला बाहरी ताकतों की अपेक्षा अपने ही घर में छिपी अलगाववादी एवं विघटनकारी ताकतों से है। और कभी कभी पुलिस को अपने ही देशवासियों द्वारा किये जा रहे प्रदर्शनों आदि का भी सामना करना पड़ता है। अतः उन पर काबू पाने के लिए एक बिल्कुल भिन्न रवैया की जरूरत है।



परेड का निरीक्षण करते हुए गृह राज्य मंत्री प्रो. कामसन



दंगों के बाद राहत कार्यों में अपनी कुशलता का प्रदर्शन करते हुए बल के कार्मिक मंत्री महोदय ने के.रि.पु. बल और आर.ए.एफ की इस बात के लिए प्रशंसा की कि वे जहां जहां भी गये हैं, जनता का विश्वास जीता है । इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने कहा कि दंगों को काबू करने में आर. ए.एफ. की प्रभावी भूमिका को देखते हुए हर राज्य द्वारा इसकी मांग की जा रही है ।



आर.ए.एफ. कार्मिक द्वारा परेड के दौरान प्रस्तुत एक नृत्य

इससे पूर्व महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने इलाहाबाद फाफामाउ स्थित आर.ए. एफ. की 101 बटालियन स्थल पर प्रो. कामसन की आगवानी की। बाद में प्रो. कामसन ने एक आकर्षक परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। आर.ए.एफ. की एक महिला टुकड़ी सहित चार टुकड़ियों ने परेड में हिस्सा लिया।

आर.ए.एफ. के जवानों ने दंगों पर काबू पाने के अपने कौशल का प्रदर्शन भी किया। आर.ए.एफ. की दसों बटालियनों ने अपने अपने क्षेत्रों की जीवन शैली को दर्शाती हुई झांकियां तथा लोक नृत्य भी प्रस्तुत किए।

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल छात्रावास इमारत का उद्घाटन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल रोहणी में 08 अक्टूबर, 95 को छात्रावास की एक दूसरी इमारत का उद्घाटन के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने किया। इस इमारत में 76 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस इमारत का निर्माण नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन ने लगभग 55 लाख रुपये की लागत से किया है। ज्ञातव्य है कि सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल में छात्रावास की एक इमारत गत वर्ष ही बन कर तैयार हो गयी थी तथा के.रि.पु. बल कार्मिकों के बच्चे इससे प्राप्त सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं, किन्तु नयी इमारत बन जाने से छात्रावास की सुविधाओं का उपयोग अधिक विद्यार्थी कर पाएंगे।



बच्चों द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनी को देखते हुए महानिदेशक श्री त्रिपाठी

इस अवसर पर विद्यालय के वार्षिक उत्सव का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि के.रि.पु. बल स्कूल ने अपने अल्पकाल में ही राजधानी में अपनी खास पहचान बना ली है। उन्होंने कहा कि छात्रावास भवन की दो अन्य इमारतें भी शीघ्र ही पूरी हो जाएंगी, जिनमें से एक इमारत छात्राओं के लिए होगी।



इमारत का दीप जला कर उद्घाटन करते हुए श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

इस मौके पर विद्यार्थियों ने एक नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की। महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने बाद में अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ रहे विद्यार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किये।

इससे पूर्व बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिडल की धर्मपत्नी श्रीमती मुरियल लिडल ने स्कूल के बच्चों द्वारा लगायी गयी एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

संक्षिप्त समाचार

के.रि.पु. बल ने 122 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने माह अक्टूबर, 95 में देश भर में 122 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 122 मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए।

के.रि.पु. बल ने इन अभियानों में 68 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 13 ए.के. 56 रायफलें, 12 ए.के. 47 रायफलें, दो एस.एल.आर., 10 पिस्तौलें, चार 303 रायफलें तथा अन्य हथियार शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के चार जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 24 अन्य गंभीर रूप से घायल।

माह अक्टूबर, 1995 में बल के मृत कार्मिक

माह अक्टूबर, 95 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कामेंक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सिपाही एस.आर.एन. पिल्लई (127 बटा.) सिपाही बीरेंद्र प्रताप यादव (92 बटा.), सिपाही आर. एलेक्सेंडर (92 बटा.), सिपाही आर. वेंकटा राव (52 बटा.), निरीक्षक (एम) एस.के. लामा (ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर), लांस नायक (एम) विजयलक्ष्मी (105 बटा.), सिपाही सौदागर सिंह (68 बटा.), निरीक्षक चञ्जुराम (9 बटा.), सिपाही हरजोजीत सिंह (49 बटा.), नायक/डाइवर बी.एन. मिश्रा (39 बटा.), सफाई कर्मचारी कमल बाल्मिकी (ग्रुप केन्द्र जालंधर), डिप्टी कमान्डेन्ट छगन सिंह (94 बटा.), हवलदार सुभाष चन्द्र यादव (48 बटा.) कुक नथू बकरम जी (आर.टी.सी. 1), हवलदार अरूण दतेरी (58 बटा.), सिपाही एल.बी. दास (21 बटा.), हवलदार ई. टोपनी (23 बटा.), सिपाही सुरेशंकर (121 बटा.), नायक गुलाब सिंह (77 बटा.), सिपाही भगवंत सिंह (ग्रुप केन्द्र लखनऊ), हवलदार जोगा सिंह (41 बटा.), वाशरमैन भीक चन्द (13 बटा.), सिपाही राम सितारी यादव (105 बटा.)।

दक्षिण सेक्टर ने भारोत्तोलन प्रतियोगिता जीती

89 बटालियन स्थल नई दिल्ली में खेली गयी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की पहली इंटर सेक्टर भारोत्तोलन प्रतियोगिता दक्षिण सेक्टर ने जीत ली। बिहार सेक्टर दूसरे स्थान पर रहा। रेपिड एक्शन फोर्स को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। 19 अक्टूबर, 95 को सम्पन्न हुयी इस पांच दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिडल ने किया, जबकि समापन समारोह में बल के महानिदेशक श्री एस.वी. एम. त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को ट्राफी तथा अन्य पुरस्कार प्रदान किये।

इस मौके पर बोलते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि के.रि.पु. बल में इस समय कुछ राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की महिला भारोत्तोलक शामिल हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बल के पुरूष भारोत्तोलक भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक उठेंगे। उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल में यह भारोत्तोलन की केवल शुरुआत है।

रेपिड एक्शन फोर्स ने कबड्डी प्रतियोगिता जीती

रेपिड एक्शन फोर्स ने बिहार सेक्टर को 20 अंकों से पराजित कर पांचवी के.रि.पु. बल इंटर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता जीत ली। 103 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल पर 30 अक्टूबर, 95 को खेले गए फाइनल मुकाबलों में बिहार, केन्द्रीय तथा उत्तरी सेक्टर क्रमशः दूसरे, तीसरे तथा चौथे स्थान पर रहे।

प्रतियोगिता का उद्घाटन 25 अक्टूबर, 95 को उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने किया। जबकि समापन समारोह में आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री

ए.ए. सिद्धकों मुख्य आतिथे के रूप में उपास्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार तथा ट्राफियां भी प्रदान कीं। आर.ए.एफ. ने लगातार तीसरी बार यह ट्राफी जीती है। आर.ए.एफ. के नायक अंगद सिंह सर्वश्रेष्ठ कबड्डी खिलाड़ी घोषित किये गए।

रेपिड एक्शन फोर्स ने कुश्ती प्रतियोगिता जीती

रेपिड एक्शन फोर्स ने उत्तरी सेक्टर को पराजित कर के.रि.पु. बल की पांचवी इंटर सेक्टर कुश्ती प्रतियोगिता की ट्राफी जीत ली। नई दिल्ली ग्रुप केन्द्र में खेली गयी इस पांच दिवसीय प्रतियोगिता में बिहार सेक्टर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता का उद्घाटन 16 अक्टूबर, 95 को बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिङ्गल ने किया।

प्रतियोगिता के अंतिम दिन बल के उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक श्री एम.बी. कौशल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को ट्राफियां तथा पुरस्कार प्रदान किये।

इस प्रतियोगिता में बल के 10 सेक्टरों के 150 पहलवानों ने भाग लिया।

कविताएं

क्यूं भला

दौर पागलपन का है यहां चल रहा
धर्म की लपटों में देश जल रहा
हम एक ही धरती की गोद में पले
क्यूं भला आपस में फिर छुरियां चले
देश में मन्दिर और मस्जिद हैं अनेक
पर सर्वशक्तिमान ईश्वर तो है एक
क्यूं भला बदनाम फिर इसको करें
कि नाम पर इसके हम आपस में मरें
राम खुश होंगे यदि मन्दिर बनें
खुश होंगे अल्लाह यदि मस्जिद रहे
है बनी लोगों में झूठी धारणा
न्याय की हो रही अतः अवमानना
भूल कर हम भेदभाव सब एक हों,

राष्ट्र की उन्नति में शरीक हों
यही ईश पूजा, यही कर्म है
यही सच्ची देशभक्ति, धर्म है
नहीं कोई भेदभाव ईश के दरबार में
क्यों भला फिर पल रहा है मानवी आचार में
हैं भिन्न-भिन्न धर्म, जाति और रंग
पर प्रवाहित रक्त वही, वही अंग
क्यों भला फैले रंगों में जहर फिर संकीर्णता का
क्यों भला कारण बनें यह इस वतन की धीनता का

- प्रेम सिंह, सहायक कमांडेंट
प्रथम बटालियन

राजभाषा का सम्मान

राजभाषा का सम्मान हम कर रहे,
राजभाषा का वर्चस्व हर पल रहे।
हे प्रभु । मेरी हरदम यही कामना,
हम नमन राजभाषा को हैं कर रहे।
एकता सूत्र का ये ही इतिहास है,
हम न सोचें कि ये कोई उपहास है।
दोस्त, चौदह सितम्बर निराला दिवस
राजभाषा का यह एक आभास है।
भाई-चारे का सद्भाव इसमें भरा,
शान्ति का मंत्र इसमें है अनुपम जड़ा
देख लो खो ना जाए सुहाना समय
प्रीति और प्यार का इसमें एहसास है।
मार्ग अपना है उज्ज्वल स्वयं सोच लो,
इसका प्रतिबिम्ब भी है सबल सोच लो।
एकता मार्ग में मिल चलें हम सभी,
राजभाषा भाषाओं में एक खास है।
शीघ्र अर्पित रहे हर समय राह में,

जब कोई ले के सन्देश इसका चले।
राजभाषा बढ़े और ऊपर उठे,
मर मिटें हम सभी बस इसी चाह में।

- सिपाही हवलदार सिंह
9 बटा. के.रि.पु. बल

सड़क संकेत



आदेशात्मक



आई. आर. सी. 67-1977 के अनुसार



चेतावनी



संकेत व चिन्ह सड़क की भाषाएँ हैं इन्हें याद कीजिए व

उनका पालन कीजिए ।



सी.आर.पी.एफ. स्कूल की छात्रावास इमारत का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी। सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश सन्ना ।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लॉक-1 सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली - 110 003 की ओर से जी. सी. द्विवेदी।

मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, कड़ौदा कलां, नई दिल्ली - 110 072 ।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : न्यू रायल प्रिन्ट प्रोसेस 1728 कूचा दसनीराज, दरियावांज, नई दिल्ली-2

दूरभाष : 3262279

366 वें वार्षिकोत्सव पर विशेष

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-8

अंक-8

31 दिसंबर, 1995

10 पौष, शक 1917



युप केंद्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखने के बाद प्रधान मंत्री को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए
बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी



विश्व स्तर पर भारोत्तोलन प्रतियोगिता जीतने के बाद इंस्पेक्टर कुंजारानी ने अपने पदक प्रधान मंत्री को दिखाए

कामना शुभागमन 1996

अभिलाषाएं आकृति पाएं, यत्न बनें उपलब्धि,
जीवन में अभिनंदनरत हो श्वास श्वास समृद्धि,
सुख सुविधाओं का हर पल हो जाए आयुष्मान,
यही कामना नव संवत्सर लाए स्वर्ण विहान।

देश की सेवा में आंतरिक सुरक्षा, शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात, बल के
हर सदस्य, उनके परिजनों एवं हितैषियों को नववर्ष की पूर्व बेला पर कोटि-कोटि
शुभकामनाएं।

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-8 अंक 8

31 दिसंबर, 1995

10 पौष, शक 1917

मुख्य संपादक

जी.सी. द्विवेदी

संपादक

अनिल गुप्ता

चित्र संकलन

एस.के. खन्ना

प्रकाशक

महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लॉक 1, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक

सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग

न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय सूची

सम्पादकीय

संदेश

1995 एक विहंगम दृष्टि

गौरवपूर्ण इतिहास और चुनौती भरा भविष्य

संचार-उपग्रह टेलीफोन

हैती-समुद्र पार तैनाती

1995 के पदक विजेता

कल्याण कार्यक्रम

खेल-उपलब्धियों से खुली संभावनाएं

पर्यावरण

रेपिड एक्शन फोर्स

दक्षिण सेक्टर

जम्मू कश्मीर

पंजाब

उत्तर पूर्व

उत्तरी सेक्टर

बिहार सेक्टर

संक्षिप्त खबरें

कविताएं



प्रधानमंत्री ने ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखी-पेज 19



सम्प्रति सम्पादकीय

यह मात्र एक संयोग है या विडंबना कि हम अपनी वर्षगांठ प्रति वर्ष जाते साल की दहलीज पर खड़े हो कर मनाते हैं। इससे जहां एक और हमें साल के बिल्कुल अंतिम छोर पर खड़े हो कर अपनी साल भर की कारगुजारियों पर नजर डालने का मौका मिलाता है, वहीं एक नए जोश और संकल्प के साथ अगले वर्ष की चौखट पर पैर रखने का उत्साह भी।

के.रि.पु. बल अपने 55 साल इतिहास में कई कठिन दौरों से गुजरा है, इतिहास के कड़े परीक्षकों के सम्मुख इसने कड़े से कड़े इम्तहान पास किये हैं। असम और पंजाब की शांति, इसकी हाल की उपलब्धियों के तमगे हैं। देश के उत्तर पूर्व और जम्मू कश्मीर क्षेत्र में स्थिति कुछ विकट है, किंतु देश सेवा की शपथ से बंधा हर सिपाही इन इलाकों को भी इनकी वही पुरानी शांति और खुशहाली लौटाने के लिए प्राणोपन्न से जुटा है, उसकी यह प्रतिबद्धता इन क्षेत्रों के नागरिकों के चेहरों पर फिर से खुशी और विश्वास की ज्योति पैदा कर पाएगी, इसके आसार गोधूलि बेला के प्रकाश के समान धीरे-धीरे प्रकट होने लगे हैं।

किंतु इस प्रयास में बहुत से जवानों ने अपनी जीवनज्योति सहर्ष आतंकवाद विरोधी यज्ञ की अग्नि में समाहित कर दी।

आतंकवादियों से लड़ते हुए इतने जवान मारे गए और इतने जवान घायल हो गए। कुछ लोगों के लिए यह महज अखबार की एक खबर हो सकती है, जिसे वह सुबह की चाय के प्याले के समाप्त होते ही भुला बैठते हैं। किंतु इस एक खबर के प्रकाश में आते ही कितने घरों में मातम का अंधेरा छा जाता है, कितने बच्चे यतीम हो जाते हैं, कितनी बहनों की मांग का सिंदूर पुछ जाता है, मांओं की कोख सूनी हो जाती है, इस ओर शायद उनका ध्यान नहीं जाता। वो लोग शायद भूल जाते हैं कि जिस अमन और शांति के साथ रात की निश्चित निद्रा के बाद तो सुबह की चाय पीते हैं, वह अमन और शांति, वह निश्चितता, कर्ज है उन पर, हम सब पर, उन जवानों का, जो निरंतर देश की सुरक्षा की चौकसी में लगे हैं, अमन और सकून कायम करने में लगे हैं, आतंकवाद के जहरीले अजगर का फन कुचलने के लिए उससे जूझ रहे हैं।

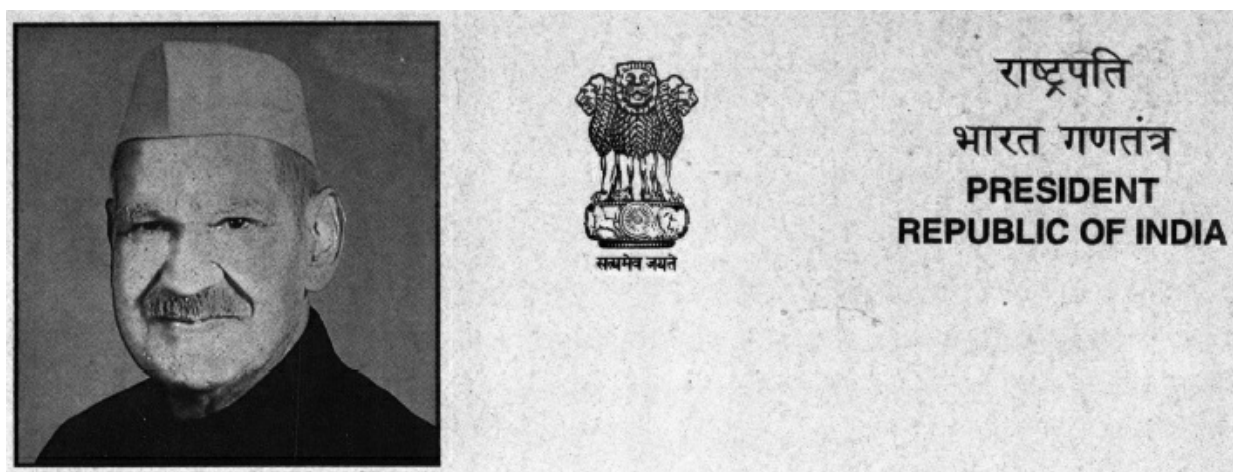
हम जो घरों में बैठ कर बढ़ते आतंकवाद और बिगड़ती कानून व्यवस्था पर टिप्पणियां करते हैं, उनके लिए संदेश है कर्तव्य पर तैनात हर जवान का कि—

चार सू घोर अंधेरा है ये माना लेकिन,
इसके मातम से उजाला नहीं होने वाला।

रात के अंधरे से अगर लड़ना है, तो उठ कर दीपक जलाने का साहस तो हम में से हर एक को भी संजोना ही पड़ेगा।

अपनी उपलब्धियों पर हर्षित होने के साथ साथ यह समय उन जवानों की याद में सिर नवाने का भी है, जिन्हें ये अंधेरा निगल गया। लेकिन आशा के जिस आफताब को हथेली पर ले कर वो आतंकवाद के इस अंधेरे से लड़ने निकले थे, वो आफताब आज भी हजारों जवानों के कर्तव्य पथ को आलोकित कर रहा है। इन जवानों की स्मृति हमारी अमूल्य धरोहर भी है और पूंजी भी।

प्रेरणा



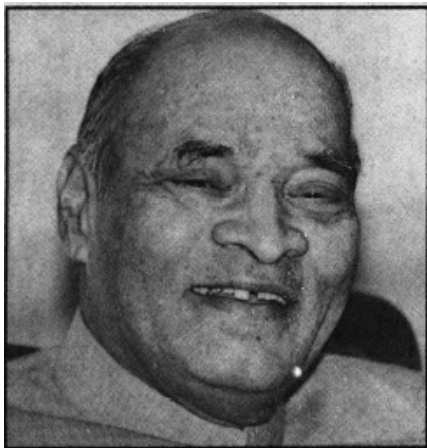
संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल दिसंबर, 1995 को अपना 56 वां वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस अर्द्ध सैनिक संगठन का हमारे देश की सेवा करने का उल्लेखनीय रिकार्ड रहा है। द्रुत कार्य बल के गठन से इस बल की प्रभावशीलता में एक नया आयाम जुड़ा है।

मैं इस बल के सदस्यों एवं उनके परिवारों को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

(शंकर दयाल शर्मा)



प्रधान मंत्री
भारत
PRIME MINISTER
INDIA

संदेश

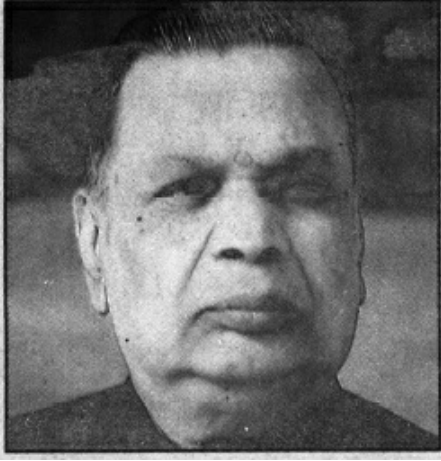
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल अपना 56वां वार्षिकोत्सव दिनांक 28 दिसम्बर, 1995 को मना रहा है यह प्रसन्नता की बात है।

इस बल के सदस्यों ने भारत के लोगों का विश्वास अर्जित किया है तथा उन्होंने चुनौती भरी परिस्थितियों का सामना साहस, कर्तव्यपरायणता और निष्ठा से किया है।

महिला बटालियनों तथा द्रुत कार्य बल के जुड़ने से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को कानून और व्यवस्था संबंधी विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए बहुमुखी प्रतिभा भी मिलेगी।

मैं इस अवसर पर बल के सभी अधिकारियों व कार्मिकों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(पी.वी. नरसिंह राव)



गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER

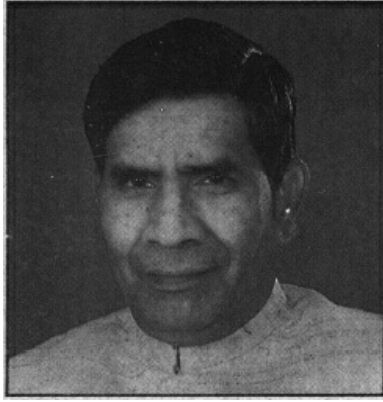
संदेश

मैं, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी अधिकारियों, जवानों तथा परिवारों को बल की दिनांक 28 दिसम्बर, 1995 को 56वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश में फूट डालने वाले, विघटनकारी और साम्प्रदायिक तत्वों से निपटने तथा शांति व सुरक्षा कायम रखने में एवम् दुर्घटनाओं अथवा प्राकृतिक आपदाओं में बचाव एवं राहत कार्य आदि में भी अपनी कार्यकुशलता बनाए रखी है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक अंग के रूप में द्रुत कार्य बल ने अपने अस्तित्व के तीन वर्ष के दौरान साम्प्रदायिक दंगों को नियंत्रित करने में प्रभावशाली ढंग से कार्य किया है तथा ऐसी परिस्थितियों में मानवीय संवेदनशीलता से निपटने से जनता का विश्वास जीता है। महिला बटालियन कार्मिकों ने, जहां भी जरूरत पड़ी, कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने में पूर्ण रूप से योगदान दिया है।

(एस.बी. चव्हाण)



राज्य मंत्री
गृह मंत्रालय
MINISTER OF STATE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

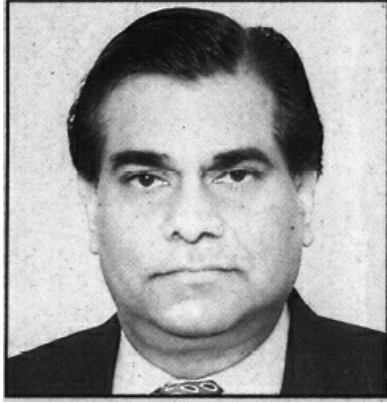
संदेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 56वीं वर्षगांठ के अवसर पर मैं बल के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों, बहादुर जवानों तथा उनके परिवारजनों को हार्दिक शुभ कामनाएं देता हूं। इस बल के अधिकारी/कार्मिक देश में शांति और सुरक्षा बनाये रखने का कठिन कार्य समर्पित भाव से निष्पादित कर रहे हैं, जो सराहनीय है। समय-समय पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारी/कार्मिक दैवी आपदाओं में बचाव और राहत कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि इस बल के ग्रुपों को संयुक्त राष्ट्र के शांति बल के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए हैती भेजा गया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने जहां सुरक्षा के मामलों में अपने दायित्वों को निरन्तर कर्तव्य के रूप में निभाने का निष्ठा से कार्य किया है, जो सराहनीय है, वहीं इन्हीं बहादुर नौजवानों ने सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से खेल प्रतिस्पर्धाओं में देश का नाम ऊंचा किया है तथा इस बल के पर्वतारोहियों ने जोगिन 1 और 3 शिखर पर सफलता-पूर्वक आरोहण किया है।

मुझे विश्वास है कि यह बल अपने कर्तव्यों के निर्वहन में निरन्तर कीर्तिमान स्थापित करेगा तथा मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हुए बल के अधिकारी और कार्मिक अपनी उच्च परम्पराएं बनाये रखेंगे।

(राम लाल राही)



गृह सचिव
HOME SECRETARY
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह जानकर बहुत हर्षोल्लास हो रहा है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल दिनांक 28 दिसम्बर, 1995 को अपना 56वां वार्षिकोत्सव मनाएगा तथा इस अवसर पर “केरिपुबल समाचार” का विशेष संस्करण प्रकाशित करेगा।

के.रि.पु. बल ने देश में शांति व सुरक्षा कायम रखने में विशिष्ट भूमिका निभाई है, एवम् निष्ठा व कर्तव्यपरायणता की एक मिसाल कायम की है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में यह बल अपनी स्वच्छ छवि बनाए रखेगा तथा अपनी स्वर्णिम परम्पराओं के अनुरूप कार्य करता रहेगा।

मैं इस खुशी के अवसर पर सभी जवानों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

के. पद्मनाभय्या

(के. पद्मनाभय्या)



महानिदेशक
के.रि.पु.बल

संदेश

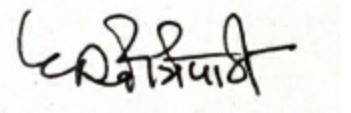
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इस वर्ष अपना 56वां वार्षिकोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर हम देश की एकता एवं अखण्डता की रक्षा करने और आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने की कटिबद्धता पुनः दोहराते हैं। मैं उन सभी बहादुर अधिकारियों व कार्मिकों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने बल की उच्च परम्पराओं के अनुरूप देश के लिए अपने जीवन की आहुति देकर सर्वोच्च बलिदान किया है।

मेरे लिए यह बड़े संतोष व गर्व की बात है कि जहां भी इस बल को तैनात किया गया है, इसने शांति एवं व्यवस्था को कायम किया है। इस बल ने मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए परिस्थितियों का सामना किया है तथा जनता व सरकार का समान रूप से विश्वास अर्जित किया है। यह सफलता अनुकरणीय साहस, समर्पण, निष्ठा और व्यावसायिक दक्षता के प्रदर्शन द्वारा ही प्राप्त की गई है। हमें इन परम्पराओं को बनाए रखना है तथा इसे और भी मजबूत करना है साथ ही अपनी अखिल भारतीय एवं धर्म-निरपेक्ष छवि को और निखारना है।

इस वर्ष के.रि.पु. बल ने पूर्वोत्तर तथा जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की रोकथाम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और राज्यों में शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यश अर्जित किया है तथा हमारे पर्वतारोहियों ने जोगिन-1 और जोगिन-3 पर्वत शिखर पर सफलतापूर्वक पर्वतारोहण लिया है। बल कार्मिकों ने पर्यावरण के संरक्षण एवं सुरक्षा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। हैती में बल की टुकड़ी ने बड़ा नाम कमाया है।

इस अवसर पर मैं, बल के सभी अधिकारियों व कार्मिकों और उनके परिवारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द,



(एस.वी.एम. त्रिपाठी)

श्रद्धा
श्रद्धांजलि



गौरव
रिज्जेन अंगमो ने बैंकाक मैराथन जीती



बैकांक अंतर्राष्ट्रीय मैराथन जीतने के बाद रिग्जेन अंगमो



अपनी ट्राफी ग्रहण करती हुयीं रिग्जेन अंगमो

परिणाम
वर्ष 1995 एक विहंगम दृष्टि

वर्ष 1995 में 01 जनवरी से लेकर 30 नवंबर तक देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों एवं अन्य अभियानों में हमने क्या खोया तथा पाया -

आतंकवादी पकड़े	- 1174
आतंकवादी मारे गए	- 46
आधुनिक हथियार बरामद किए	- 530
गोली बारूद पकड़ा	- 28328
शहीद हुए बल के कार्मिक	- 50
घायल हुए बल के कार्मिक	- 202
शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक	- 4
शौर्यवीरता के पुलिस पदक	- 21
पुलिस पदक बार	- 2
प्रधानमंत्री के जीवन रक्षा पदक	- 7
विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक	- 7
सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक	- 50

गौरवपूर्ण इतिहास, चुनौती भरा भविष्य



बल को ध्वज प्रदान करते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का इतिहास राष्ट्रीय एकता एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिए गए बलिदानों एवं समर्पण की गाथा है। आज के.रि.पु. बल पूरे

देश में एक जाना पहचाना नाम है। के.रि.पु. बल ने पूरे देश में अपनी उपास्थाते को पूरी शिद्दत के साथ महसूस कराया है। भले ही वह सीमा के बाहर से आने वाला खतरा हो, देशद्रोही ताकतें हो, साम्प्रदायिक दंगे हों या फिर कोई प्राकृतिक विभीषिका, हर स्थिति में हर जगह के.रि.पु. बल का जवान पूर्ण तत्परता और समर्पण के साथ नागरिकों की रक्षा के लिए कर्तव्य पर तैनात मिलेगा।

1939 में एक बटालियन से गठित हुए इस बल में आज 136 बटालियनें (130 एक्सक्यूटिव बटालियनें, पांच सिगनल बटालियनें, एक स्पेशल ड्यूटी ग्रुप), 30 ग्रुप केन्द्र, आठ प्रशिक्षण संस्थान, तीन बेस अस्पताल, 13 सेक्टर, जिनमें चार परिचालन सेक्टर (जम्मू कश्मीर, पंजाब, मणिपुर नागालैंड व बम्बई शामिल हैं तथा 28 रेंजे (जिनमें सात परिचालन रेंज-मोकोकचुंग, अगरतल्ला, इम्फाल, दीमापुर, श्रीनगर, जम्मू तथा जालंधर) शामिल हैं-आज इसके विशाल परिवार का एक हिस्सा हैं।

के.रि.पु. बल की स्थापना 1939 में नीमच में क्राउन रिप्रजेंटेटिव पुलिस के रूप में हुई। इसका प्रारंभिक काम देशी रजवाड़ों में कानून व व्यवस्था बनाये रखना था। इस बल का उपयोग जर्मन तथा इटली के युद्धबंदियों की निगरानी, हर उत्पाद के दमन तथा मध्य भारत में डकैत विरोधी अभियानों में भी किया गया। दिसम्बर, 1949 को संसद के एक अधिनियम के तहत इसका नाम सेंट्रल रिजर्व पुलिस कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा इसे देश का एक सशस्त्र बल बना दिया गया। सरदार पटेल भविष्य की जरूरतों को दृष्टि में रखते हुए इसके भावी स्वरूप की कल्पना कर चुके थे। संसद में बोलते हुए उन्होंने इस केन्द्रीय रिजर्व पुलिस को देश के अंदर सुरक्षा के लिए पैदा होने वाले खतरों के समय स्थायित्व लाने वाले तत्व के रूप में परिभाषित किया। 19 मार्च, 1950 को सरकार पटेल ने दिल्ली में हुए एक शानदार समारोह में बल को उसका ध्वज प्रदान किया।

समय के साथ साथ इस बल की मांग बढ़ती गई और उसी के अनुरूप इसका आकार भी बढ़ता गया। के.रि.पु. बल द्वारा भुज, हैदराबाद, पेप्सू आंदोलन तथा चंबल के बीहड़ों में किये गये कार्यों ने पूरे देश का ध्यान इसकी ओर आकृष्ट किया। लद्दाख, हाट स्प्रिंग्स में चीनी हमले का पहला शिकार इसी बल के जवान बने। 21 अक्टूबर, 1959 को एक चीनी टुकड़ी ने के.रि.पु. बल पेटोल पर घात लगाई। अपनी संख्या से बहुत बड़ी चीनी टुकड़ी का सामना करते हुए बल के 10 जवान शहीद हो गये। तभी से 21 अक्टूबर पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

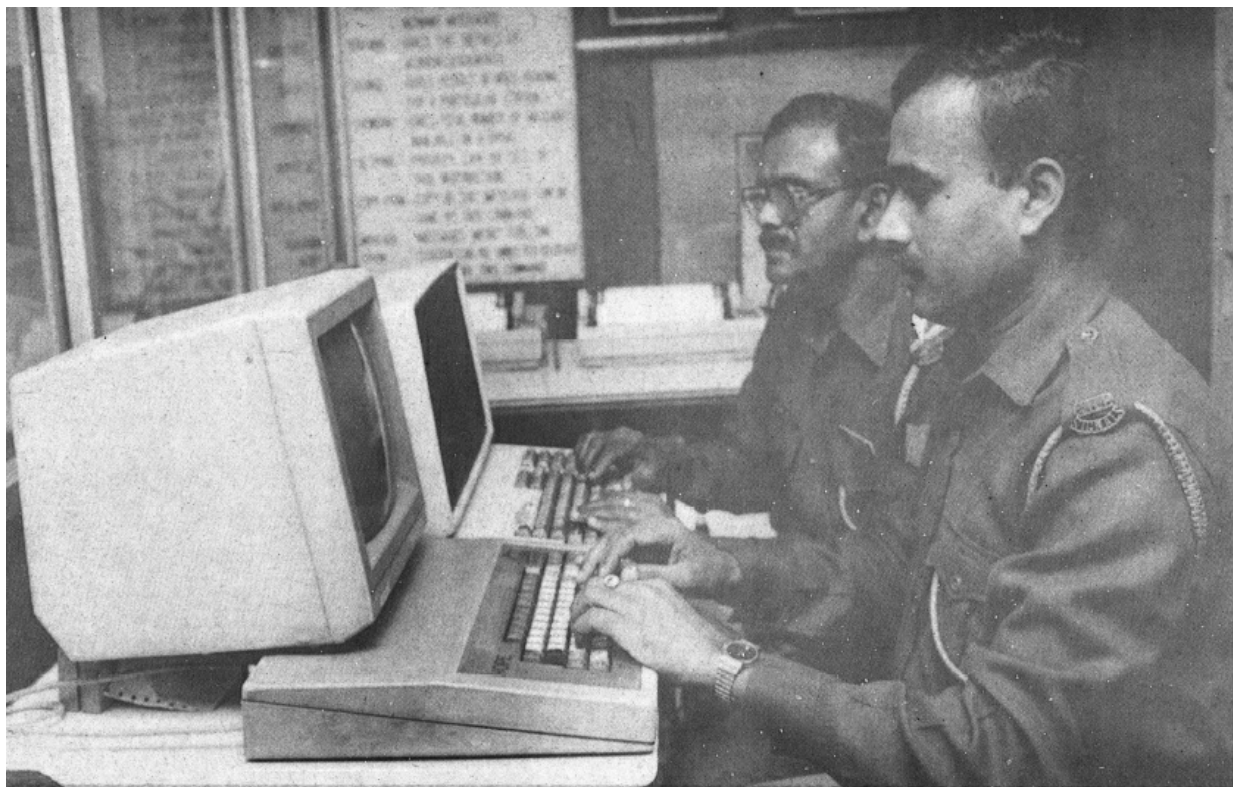
के.रि.पु. बल का स्वरूप अखिल भारतीय है। इसकी छोटी से छोटी युनिट में सब धर्मों तथा देश के सब हिस्सों के नागरिक मिल जाएंगे। यह सही मायनों में एक राष्ट्रीय बल है। इस बल का राष्ट्रीय तथा धर्म निरपेक्ष स्वरूप इसकी बहुत बड़ी शक्ति है। इसी कारण से देश के नागरिकों को इस बल की भूमिका एवं कुशलता पर पूर्ण विश्वास है। इस बल का उपयोग आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष, साम्प्रदायिक दंगों को दबाने, कानून व्यवस्था की स्थितियों, चुनावों, हड़तालों तथा धरनों के दौरान व्यवस्था बनाए रखने में सहायता तथा प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव एवं राहत कार्यों के लिए

किया जाता है। इस बल ने जनता एवं सरकार द्वारा उसमें व्यक्त किए गए विश्वास को हमेशा रक्षा की है।

अपने गठन से लेकर अब तक के.रि.पु. बल को एक जार्ज क्रास, एक वीर चक्र, एक पद्मश्री, तीन शौर्यवीरता के किंग्स पुलिस पदक, 49 को शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस फायर सर्विस मेडल, 85 राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक, 412 शौर्यवीरता के पुलिस पदक, चार विशिष्ट सेवा पदक, एक युद्ध सेवा पदक, पांच सेना पदक तथा 73 प्रधानमंत्री के जीवन रक्षा पदक प्रदान किए जा चुके हैं।

अपने उद्देश्य वाक्य “सेवा एवं भक्ति” के अनुरूप के.रि.पु. बल की यह प्रतिज्ञा है कि इन सभी चुनौतियों का दृढ़ता के साथ सामना करते हुए “देश के अमन के पहरेदार” की गरिमा को बनाए रखेगा।

संचार उपग्रह टेलीफोन प्रणाली



बल के महानिदेशालय में कार्यरत आटोमैक्स कम्प्यूटर पद्धति

तीव्र संचार के लिए इस समय दिल्ली, पटना, कलकत्ता तथा शिलांग स्थित सिगनल केंद्रों को माइक्रो प्रोसेसर पर आधारित मल्टी मीडिया आटोमैटिक स्वीचिंग

प्रणाली से जोड़ दिया गया है। इससे जहां संदेशों के प्रसारण में तीव्रता आयी है, वहीं इस प्रेषण में होने वाली मानवीय त्रुटियों को भी दूर किया जा सका है। पहले ये प्रणाली केवल दिल्ली और कलकत्ता में ही उपलब्ध थी। दुर्गम स्थलों पर किसी भी समय, कहीं भी संपर्क स्थापित करने के लिए चार सचल उपग्रह टेलीफोन शीघ्र ही स्थापित किये जा रहे हैं। ये फोन उन इलाकों में स्थापित किए जा रहे हैं, जहां या तो संचार की सुविधाएं बिल्कुल उपलब्ध नहीं हैं, या फिर उनकी कार्यक्षमता विश्वसनीय नहीं है। वर्तमान में यह सुविधा देश के किसी भी अन्य अर्द्ध सैनिक पुलिस बल के पास उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक सरफेस माउंटेड टेक्नोलोजी पर आधारित नए छोटे नई पीढ़ी के कम्युनिकेशन सेट खरीदने की प्रक्रिया का भी कार्य चल रहा है। इन सेटों के उपलब्ध हो जाने पर संचार के कई चैनल एक साथ उपलब्ध हो जाएंगे।

रांची स्थित बल के केंद्रीय संचार प्रशिक्षण केंद्र में संचार की आधुनिकतम सुविधाओं के प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हैं। तथा यहां बल के कार्मिकों के अतिरिक्त अन्य पुलिस बलों के कार्मिकों को भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 1995 में इस प्रशिक्षण केंद्र में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तथा एन.ई.पी.ए. के 87 कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया।

विकास

**प्रधानमंत्री ने ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद की
आधारशिला रखी**



ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखने के बाद प्रधानमंत्री, आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एवं बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी और अपर महानिदेशक (दक्षिण) श्री डी.आर. कार्तिकेयन के साथ

02 दिसम्बर, 1995 को आंध्र प्रदेश के रंगारेड्डी जिले के जवाहर नगर क्षेत्र में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप केन्द्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रधानमंत्री ने इस 56 साल पुराने बल तथा हाल ही में इसके अंतर्गत निर्मित रेपिड एक्शन फोर्स की उपलब्धियों की भरपूर प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने कहा कि के.रि.पु.बल में महिला बटालियनों का गठन तथा आर.ए.एफ. बटालियनों में महिलाओं को शामिल किया जाना, एक स्वागत योग्य कदम है, किंतु आंतरिक सुरक्षा कार्यों के लिए इसकी भागीदारी को और अधिक बढ़ाए जाने की जरूरत है। देश में साम्प्रदायिक, आतंकवादी तथा विघटनकारी तत्वों द्वारा अपनायी जा रही नित्य नयी तकनीकों को दृष्टि में रखते हुए प्रधानमंत्री ने केंद्रीय पुलिस बलों से अपने प्रशिक्षण और क्षमता को नयी स्थिति के अनुकूल बढ़ाने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि वह इन पुलिस बलों की समस्याओं से पूर्ण रूप से अवगत हैं तथा उनकी सरकार इन समस्याओं पर पर्याप्त ध्यान देगी। उन्होंने कहा कि वह के.रि.पु. बल की और आवासीय खंडों की मांग पर विचार करेंगे।



ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखने के बाद उपस्थित अतिथियों को संबोधित करते हुए प्रधान मंत्री

इससे पूर्व प्रधानमंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने ग्रुप केन्द्र की आधारशिला रखने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया। श्री त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री का ध्यान बल के सदस्यों की आवासीय समस्याओं की ओर भी आकृष्ट किया। उन्होंने बताया कि बल के लिए अधिकृत 14 प्रतिशत आवासों में से अभी केवल 6.14 प्रतिशत आवास ही उपलब्ध हो पाए हैं। अपनी 14 प्रतिशत की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी हमें अगले सात वर्षों में प्रति वर्ष 37 करोड़ रूपयों की आवश्यकता होगी, जबकि अभी हमें इस मद में औसतन प्रति वर्ष 15 करोड़ रूपया मिल रहा है। महानिदेशक महोदय ने प्रधानमंत्री से बल की आवासीय समस्याओं को सुलझाने के लिए और अधिक धन स्वीकृत कराने का अनुरोध किया।

श्री त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री को बताया कि के.रि.पु. बल बिना किसी सरकारी सहायता के बल के सदस्यों द्वारा एकत्रित धन से पब्लिक स्कूल तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान चला रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री से बल में कल्याण गतिविधियों को बढ़ाने के लिए धन मुहैया कराने का अनुरोध किया।

बाद में महानिदेशक महोदय ने प्रधानमंत्री को एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया।



आधारशिला के अनावरण के लिए आते हुए प्रधान मंत्री

इस मौके पर आंध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णकांत, केंद्रीय जल संसाधन मंत्री श्री पी.वी. रंगैया नायडू तथा आंध्र प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री टी.देवेन्द्र गौड़ कई अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों सहित उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद सरकार द्वारा नवंबर, 1993 में स्वीकृत बल के 11 नए ग्रुप केंद्रों में से एक है। दक्षिण भारत में कानून व्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए, तथा इस क्षेत्र में के.रि.पु. बल की उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए आंध्र प्रदेश के रंगारेड्डी जिले में इस ग्रुप केन्द्र को स्थापित करने का निर्णय लिया गया। ग्रुप केंद्र की स्थापना के लिए रंगारेड्डी जिले के जवाहरनगर में 1.65 करोड़ रुपये की लागत से 165 एकड़ भूमि अधिगृहित की गयी। भारत सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए 22.47 करोड़ रुपये स्वीकृत किए। 8.72 करोड़ रुपये की लागत से 293 आवासीय खंडों के निर्माण की भी सरकार ने स्वीकृति प्रदान की।

ग्रुप केंद्र सिकंदराबाद की आधारशिला रखने का यह निर्णय हालांकि अत्यधिक अल्प अवधि में लिया गया था, मगर इस अल्प अवधि में ही बल के कार्मिकों ने लोक निर्माण विभाग की मदद तथा अपर महानिदेशक दक्षिण सेक्टर श्री डी.आर. कार्तिकेयन के निर्देशन में इस उजाड़ इलाके को जिस प्रकार एक खूबसूरत इलाके में बदल दिया, उसकी आमंत्रित अतिथियों सहित बल के सभी अधिकारियों और कार्मिकों ने भरपूर प्रशंसा की।

रोमांच
अभियान जोगिन
बल का एक सफल पर्वतारोहण अभियान



गढ़वाल हिमालय की जोगेन - 3 चोटों की ओर बढ़ते हुए बल के अभियान जोगेन पर्वतारोहण दल के सदस्य

कर्त्तव्य हैती में तैनाती एक और सफल अभियान



हैती में तैनात बल के जवान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की समर्पित सेवाओं और कर्त्तव्यनिष्ठा ने सदैव सम्पूर्ण देश का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। हर संकट की घड़ी में देश ने एक विश्वास और आशा के साथ इस बल की ओर निहारा है। देश ही नहीं बल्कि हमारे जवानों की शूरवीरता के किस्से देश की सीमाओं के बाहर विदेशों तक में गाए जाते हैं।

अपने देश से बाहर कानून व्यवस्था के कार्यों के लिए के.रि.पु. बल को पहला दायित्व 1987 को सौंपा गया, जबकि उसकी 35 वीं और 58 वीं बटालियन तथा 88 महिला बटालियन की एक कम्पनी को भारतीय शांति रक्षक सेना के अंग के रूप में श्री लंका में तैनात किया गया। श्रीलंका के बाद कम्बोडिया और फिर मोजाम्बिक में हमारे जवान संयुक्त राष्ट्र की शांति रक्षक सेनाओं में शामिल हुए, हमारे जवान जहां गए, वहीं उन्होंने न केवल स्थानीय लोगों के हृदय जीते, अपितु उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा एवं कार्यकुशलता की संयुक्त राष्ट्र सेना के अधिकारियों सहित भारतीय सेना के

आधिकारियों ने भी भरपूर प्रशंसा की।

विगत में बल के जवानों द्वारा अर्जित किए गए इस विश्वास का ही परिणाम है कि हैती में कानून व्यवस्था के कार्यों को बनाए रखने के लिए के.रि.पु. बल के एक दस्ते को मार्च से नवंबर, 95 तक हैती में तैनात किया गया। बल के जवानों को हैती में मिले निम्न सम्मान बल के जवानों की उपलब्धियों की कहानी स्वयं कहते हैं -

- दस यू.एस. आर्मी एचीवमेंट मैडल।
- एक यू.एस. आर्मी कमिंडेशन मैडल।
- 120 यू.एस. पीस मेडल।
- कई प्रशंसा पत्रों एवं विशिष्ट प्रमाण पत्रों के अतिरिक्त 42 एप्रीशिएशन सिक्के।

सम्मान वर्ष 1995 के पदक विजेता राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक

नायक रघुबीर सिंह (मरणोपरांत)-96 बटालियन, कांस्टेबल वी.एस. सोलंके (मरणोपरांत)-96 बटालियन, डिप्टी कमान्डेन्ट एम.एल. मीणा-100 बटालियन तथा कांस्टेबल कालू राम खंड (मरणोपरांत)-100 बटालियन।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

कांस्टेबल पुष्कर दत्त जोशी (18 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट उषा शंकर (80 बटा.), लांस नायक मोहम्मद युसुफ (73 बटा.), लांस नायक ए. बरला (43 बटा.), कारटेबल भूप सिंह (75 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी आर.एस.एच.एस. सहोता (7 बटा.), कांस्टेबल त्रिभुवन सिंह (7 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी बी.एस. चौहान (33 बटा.), नायक जय मुनि दत्त (10 बटा.), नायक प्रभावती भाई (79 बटा.), कांस्टेबल आलोपा राव (79 बटा.), कांस्टेबल विनोद कुमार (79 बटा.), कांस्टेबल शंभु हैम्भ राम (79 बटा.), कांस्टेबल शेषमणि मिश्रा (79 बटा.)।

महानिरीक्षक परिचालन पंजाब (अब अपर महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल) श्री आर.के. शर्मा, 7 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी श्री पी.एस. चौधरी, 7 बटालियन के उपाधीक्षक के.एस. नायर, 36 बटालियन के हैड कांस्टेबल ज्ञान सिंह, 14 बटालियन के लांस नायक राम नरेश, 7 बटालियन के कांस्टेबल आर.एल. चौधरी (मरणोपरांत) तथा 126 बटालियन के उप कमान्डेन्ट रंदीप दत्ता।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक बार

इंस्पेक्टर सोम प्रकाश (33 बटा.) तथा लांस नायक रघुनाथ प्रसाद (33 बटा.)

गणतंत्र दिवस '95 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक आर.पी. तिवारी (ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली), अपर उप महानिरीक्षक नंद लाल (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), अपर उप महानिरीक्षक मोहर सिंह (ग्रुप केन्द्र गुड़गांव) तथा कमान्डेन्ट आर. दीक्षित (उप महानिरीक्षक कार्यालय अजमेर)।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

उप महानिरीक्षक बी.एम.सारस्वत (नई दिल्ली), अपर उप महानिरीक्षक एम.एल. शर्मा (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), कमान्डेन्ट ए.एन. श्रीनिवासन (94 बटा.), सहायक निदेशक (परिचालन) जे.एस. बिष्ट (महानिदेशालय), सहायक निदेशक (स्थापना) जार्ज.सी. फ्रांसिस (महानिदेशालय), सहायक निदेशक (संचार) रिजवान रसूल (महानिवेशालय), डिप्टी कमान्डेन्ट ओ.पी. यादव (74 बटा.), डिप्टी कमान्डेन्ट रघुबीर सिंह (31 बटा.), डिप्टी कमान्डेन्ट रेशम सिंह (99 आर.ए.एफ.), डा.आर.के. मोहन्ती (बस अस्पताल-III), महानिदेशक के निजी सचिव एस.सी.निरवाल (महानिदेशालय), सहायक कमान्डेन्ट मोहर सिंह (ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली), सूबेदार मेजर एम.एम. नायर (आर.टी.सी 2), इंस्पेक्टर एन.आर. मेहरा (50 बटा.), इंस्पेक्टर पन्ना लाल (46 बटा.), इंस्पेक्टर वेदपाल सिंह (30 बटा.), इंस्पेक्टर सोहन लाल (119 बटा.), सब इंस्पेक्टर संतराम (75 बटा.), हैड कांस्टेबल एस. गोपीनाथन पिल्लई (99 आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल जी. कृष्णा राव (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), हैड कांस्टेबल रंजीत सिंह (33 बटा.), हैड कांस्टेबल ताराचंद्र त्यागी (10 बटा.) कांस्टेबल विश्वनाथ शुक्ला (महानिदेशालय), कांस्टेबल प्रहलाद सिंह (महानिदेशालय), कुक उदय सिंह (61 बटा.), कांस्टेबल/दफ्तरी दुर्गा प्रसाद (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर)।

स्वतंत्रता दिवस '95 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक एस.एस. सोनी (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), कमान्डेन्ट गुरचरण सिंह (128 बटालियन) तथा सहायक कमान्डेन्ट वी.जी. देशमुख (42 बटालियन)

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक एस.सी. कुकरेजा (ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम), कमान्डेन्ट रवि कुमार (रिपिड एक्शन फोर्स), कमान्डेन्ट सी.वी. मैथ्यू (99 आर.ए.एफ.), कमान्डेन्ट एम.सी. जोसफ (14 बटालियन), कमान्डेन्ट एस.एस. गिल (75 बटालियन), कमान्डेन्ट आर. तरार (2 सिगनल), कमान्डेन्ट (स्टाफ) अब्दुल मजीद (उप महानिरीक्षक कार्यालय गुवाहाटी), डिप्टी कमांडेंट के.एन. राव (ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी), सहायक कमान्डेन्ट आर.एस. पांडेय (ग्रुप केन्द्र 2 अजमेर), सी.एम.ओ.डा.टी.के. राय (बेस अस्पताल-2 हैदराबाद), सूबेदार मेजर (एम) जी.एस. रावत (ग्रुप केन्द्र रामपुर), प्रशासन अधिकारी के.एन. पांडेय (महानिरीक्षक कार्यालय, उत्तर पूर्वी सेक्टर), इंस्पेक्टर पी. बालू स्वामी (100 आर.ए.एफ.), इंस्पेक्टर विद्यानंद (ग्रुप केन्द्र नीमच), इंस्पेक्टर जे.एस. भुल्लर (33 बटा.), सब इंस्पेक्टर गणेश बहादुर (43 बटालियन), सब इंस्पेक्टर श्रवण कुमार (107 आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल राम जनम सिंह (53 बटालियन), हैड कांस्टेबल (ड्राइवर) पवानी मोहंती (महानिदेशालय), हैड कांस्टेबल जी.के. उन्नीथन (16 बटालियन), हैड कांस्टेबल तारा दत्त (उप महानिरीक्षक कार्यालय अजमेर), नायक गुरमैल सिंह (34 बटालियन), कांस्टेबल के.जी. नायर (महानिदेशालय), फर्रोस ब्रिजपाल सिंह (महानिदेशालय)।

भावना

कल्याण कार्यक्रम

कल्याण कार्यक्रम रिजर्व पुलिस बल के रोजमर्रा के कार्य व्यापार में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कर्तव्य पर मारे गए या घायल हुए कार्मिकों के परिवारों एवं कार्मिकों के लिए सरकारी तौर पर दी जाने वाली सभी सुविधाएं, जिनमें आर्थिक अनुदान, पेंशन, पुनर्वास, आश्रितों को रोजगार या आश्रितों की शिक्षा के लिए केंद्रीय कल्याण निधि, जोखिम निधि एवं शिक्षा निधि के तहत बल के कार्मिकों एवं उनके आश्रितों को कई तरह की सहायताएं दी जाती है।

इनके अतिरिक्त के.रि.पु. बल में बल के कार्मिकों एवं उनके परिवारों को कई कल्याण सुविधाएं प्रदान की गयी हैं।

बल के सभी ग्रुप केंद्रों में परिवार कल्याण केंद्र चलाए जा रहे हैं। इन केंद्रों में बल के कार्मिकों की पत्नियों एवं उनकी लड़कियों को वर्दी सिलने तथा अन्य जीविकोपार्जन के अन्य कार्यों के लिए रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। इन केंद्रों में रोजगार के अवसर और बढ़ाने के लिए स्कूल की वर्दियों की सिलाई शुरू करने पर भी विचार किया जा रहा है।

दिल्ली के आर.के. पुरम इलाके में के.रि.पु. बल पारेवार कल्याण केंद्रों में बनी वस्तुओं की बिक्री के लिए पूर्ति नाम से एक शॉपिंग काम्पलेक्स खोला गया है। इसके माध्यम से होने वाली आय को के.रि.पु. बल कार्मिकों के परिवारों के कल्याण कार्यक्रमों पर खर्च किया जाता है।

पूर्ति की एक और पूरक संस्था तृप्ति की भी स्थापना शीघ्र ही की जा रही है। वेत कैंटीन के रूप में कार्यरत यह पूर्ति की ही देखरेख में काम करेगा।

कर्तव्य पर शहीद हुए बल के कार्मिकों की विधवाओं एवं बल के कार्मिकों के शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए विशेष रूप से कार्यक्रम चलाने के उद्देश्य से बल के अधिकारियों की पत्नियों ने के.रि.पु.बल वाइज्व वेलफेयर एसोसिएशन नाम से एक एसोसिएशन बनायी है। वर्तमान में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी की धर्मपत्नी श्रीमती इंदु त्रिपाठी इसकी अध्यक्ष हैं।

इस संस्था के प्रयासों से विधवा आवास, बच्चों के लिए पोषाहार तथा विधवाओं के पुनर्विवाह जैसे कार्यक्रमों को बहुत प्रोत्साहन मिला है। अपने कल्याण कार्यक्रमों के लिए इस संस्था की आय का मुख्य स्रोत पूर्ति, उसकी सहयोगी संस्था तृप्ति तथा कल्याण प्रदर्शनियों से होने वाली आय है।

के.रि.पु. बल के सभी ग्रुप केंद्रों में चल रहे मोंटेसरी स्कूलों में बच्चों को दोपहर का पोषक भोजन उपलब्ध कराने की योजना शुरू की गयी है। के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था ने बल के दिल्ली में चल रहे पब्लिक स्कूल में कुछ गरीब कार्मिकों की पुत्रियों की मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था है। इस मद में खर्चा पूर्ति की आय से किया जा रहा है।

के.रि.पु. बल शिक्षा निधि से स्कूल से ले कर कालिज तक के बल के कार्मिकों के बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है।

बल के नवनिर्मित ग्रुप केन्द्रों के अतिरिक्त बल के सभी पुराने ग्रुप केंद्रों में केंद्रीय स्कूलों की सुविधा उपलब्ध है।

इनके अतिरिक्त खटखटी (असम), रांची और बैंगलौर में भी केंद्रीय स्कूल हैं। दिल्ली में बल का अपना एक पब्लिक स्कूल है। जिसमें छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त दिल्ली, आवड़ी और भुवनेश्वर में बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए तीन औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र भी चलाए जा रहे हैं।

हैदराबाद में एक अन्य के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल व कुछ अन्य औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों पर आरंभिक रूप से स्थापना कार्य शुरू हो चुका है।

♦ कर्तव्य पर शहीद हुए कार्मिकों के आश्रितों तथा विकलांग कार्मिकों के लिए अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था के तत्वाधान में पेट्रोल पम्प तथा गैस एंजेसियां शुरू किए जाने की योजना पर कार्य चल रहा है।

♦ पुनर्वास मंत्रालय के सहयोग से बल के कार्मिकों के विकलांग बच्चों के लिए नागरिक संस्थाओं में रोजगार तथा के.रि.पु. बल औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में

प्रवेश के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

- ◆ कर्त्तव्य पर मारे गए कार्मिकों के आश्रितों को दी जाने वाली अनुदान राशि में बढ़ोत्तरी।
- ◆ नागरिक प्रशासन की मदद से आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ों में मारे गए बल के कार्मिकों के आश्रितों को भूमि का आबंटन।
- ◆ विभिन्न ट्रस्टों एवं संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के स्कूलों में बल के कार्मिकों के ऐसे बच्चों की शिक्षा प्रायोजित करना।
- ◆ बल के विकलांग कार्मिकों को बल की विभिन्न कल्याण याजनाओं के तहत रोजगार दिलवाना।
- ◆ व्यावसायिक महाविद्यालयों में गृह मंत्रालय के कोटे में बल के कार्मिकों के लिए अधिक सीटों की मांग।

प्रतिभा खेल

उपलब्धियों के प्रकाश में उभरती संभावनाएं

के.रि.पु. बल को अपने जी.एस. रंधावा (प्रथम अर्जुन पुरस्कार विजेता) हरी चंद, आर.एस. बल, खजान सिंह (अर्जुन पुरस्कार), एस. राधाकृष्णन एवं प्रेमजीत सिंह जैसे खिलाड़ियों पर गर्व है। देश के खेल जगत में के.रि.पु. बल के खिलाड़ियों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है।

के.रि.पु. बल हाकी टीम ने मार्च, 95 में हुयी अखिल भारतीय इंदिरा गांधी स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता जीत जी। हालांकि दिसंबर '95 में दिल्ली में हुयी ध्यानचंद हाकी प्रतियोगिता में बल की टीम को दूसरे स्थान से ही संतोष करना पड़ा।

अक्टूबर, 95 में जालंधर में हुयी 44 वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़ कूद प्रतियोगिता में बल की टीम पुरूष वर्ग में आठ स्वर्ण, छः रजत तथा चार कांस्य पदक और महिला वर्ग में एक स्वर्ण, एक रजत तथा एक कांस्य पदक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही।

इस वर्ष नवंबर, 95 में बैंकाक में हुयी बैंकाक अंतर्राष्ट्रीय मैराथन दौड़ की महिला वर्ग में बल की सब इंस्पेक्टर रिग्जेन अंगमो ने प्रथम स्थान हासिल किया। इस से पूर्व रिग्जेन अंगमो अप्रैल, 95 में इंडोनेशिया में हुयी मलंग मैराथन में भी तीसरा स्थान प्राप्त कर चुकी है।

बल की इंस्पेक्टर एन. कुंजारानी देवी विश्व की नंबर वन घोषित दो महिला भारोत्तोलकों में से एक हैं। कुंजारानी ने नवंबर, 95 में चीन में हुये विश्व भारोत्तोलन मुकाबलों में तीन रजत पदक जीते। इससे पहले वह जुलाई, 95 में पुसान (दक्षिण कोरिया) में हुयी एशियायी भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में भारोत्तोलन में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला घोषित हो चुकी हैं।



प्रधान मंत्री को अपने पदक दिखाती हुयी कुंजारानी

दिसंबर, 94 में सफलतापूर्वक संपन्न हुए नौकायन अभियान गंगा सागर से बल में रोमांचक खेलों की शुरूआत हुयी । मई, 95 में प्रथम के.रि.पु. बल पर्वतारोहण अभियान का आयोजन किया गया । उप निदेशक (लेखा) श्री एस.एस. संधू के नेतृत्व में इस अभियान दल में दस सदस्य शामिल थे । इस अभियान ने सफलतापूर्वक गढ़वाल हिमालय की जोगिन-एक और जोगिन-तीन पर्वत चोटियों पर चढ़ने में सफलता पायी ।

सरोकार

दोस्ती

जनता से ही नहीं, पर्यावरण से भी



केन्द्रिय रिजर्व पुलिस बल न केवल देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है, अपितु अपने आस पास के पर्यावरण के प्रति भी पूर्ण रूप से सजग है। पर्यावरण के साथ के.रि.पु. बल के प्रेम का प्रमाण है:-

- के.रि.पु. बल की विभिन्न युनिटों द्वारा केवल वर्ष 1995 में अपने क्षेत्रों में 3.82 लाख वृक्षों का रोपण।
- 1993 में उड़ीसा सरकार द्वारा लगभग 24,000 हैक्टेयर क्षेत्र में फैले बरबरा वन के संवर्धन एवं संरक्षण का जो दायित्व के.रि.पु. बल को सौंपा गया था, के.रि.पु. बल उस दायित्व पर न केवल खरा उतरा है, अपितु उसने यहां महत्वपूर्ण उपलब्धियां भी हासिल की हैं।
- पिछले डेढ़ वर्ष में बरबरा वन क्षेत्र में न केवल अवैध शिकार एवं कटाई रूकी है, बल्कि बल के कार्मिकों ने 55 लाख से अधिक की अवैध वन सम्पदा को स्मगलरों से बरामद किया है।
- के.रि.पु. बल के कार्मिक बरबरा वन क्षेत्र में व्यापक वृक्षारोपण का कार्यक्रम चला

रहे हैं।

- बल के कार्मिकों ने इस क्षेत्र में रहने वाले जनजातीय लोगों के साथ भी दोस्ताना संबंध कायम किये हैं, तथा उनके कल्याण के लिए कई कार्यक्रम चलाए हैं।
- देश के विभिन्न भागों में स्थित के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र व्यापक वृक्षारोपण के कारण एक तरह के ग्रीन हाऊस में तब्दील हो गए हैं।
- के.रि.पु. बल की युनिट स्थानीय वन विभाग की मदद से प्रति वर्ष व्यापक स्तर पर वन महोत्सव मनाती हैं, जिनके कारण, एक समय उजाड़ भूमि पर बसाए गए बल के आवड़ी केंद्र में अब सर्वत्र हरियाली ही हरियाली दिखायी देती है।

आयाम

रेपिड एक्शन फोर्स

मजहबी जुनून के बीच, मानवता का पैगाम

साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की दस बटालियनों को रेपिड एक्शन फोर्स में तब्दील किया गया। मजहबी जुनून से भरे लोगों से निबटने के लिए इस बल के सदस्यों को अलग तरह का प्रशिक्षण, अलग तरह के वाहन, अलग तरह के हथियार और अलग तरह की वर्दी प्रदान की गयी। इतने विशिष्ट अंदाज से गठित इस बल के सदस्यों ने मात्र तीन वर्ष के अल्प कार्यकाल में ही साबित कर दिया कि वाकई विपरीत स्थितियों से निबटने के लिए उन्हें एक विशेषता हासिल है, और ये कि वो चोट पहुंचाने में नहीं चोटों पर मरहम लगाने के लिए दीक्षित किए गए हैं, आर.ए.एफ. वास्तव में एक बचाव और राहत दल है, जो मजहबी जुनून से पागल लोगों को बखूबी बिना कोई नुकसान पहुंचाएं शांत करना जानता है। हमेशा कार्रवाई के लिए तैयार इस बल की कारगुजारियों से पूरा देश वाकिफ है, मगर फिर भी इस साल की इसकी प्रमुख गतिविधियों की एक झलक –

- देश के कुछ भागों में भड़के साम्प्रदायिक दंगों पर बिना किसी खून खराबे के काबू। विशेष कर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात तथा केरल में।
- जिस प्रकार पिछले साल सूरत में फैले प्लेग के दौरान आर.ए.एफ. द्वारा दी गयी बचाव एवं राहत सेवाओं की देश व्यापी रूप से प्रशंसा हुयी थी, उसी प्रकार इस वर्ष फिरोजाबाद उत्तर प्रदेश में हुयी रेल दुर्घटना के शिकार लोगों को बचाने और

- उन्हें राहत पहुंचाने के लिए इस बल के जवानों ने रात दिन एक कर दिया ।
- सहारनपुर में हुए बम विस्फोट के बाद स्थिति को सामान्य बनाने तथा घायलों को सहायता प्रदान करने में आर.ए.एफ. द्वारा दी गयी सेवाओं की चर्चा स्थानीय नागरिक अभी तक कृतज्ञता के साथ करते हैं ।
 - मेरठ में एक होटल की इमारत ढह जाने पर उसमें फंसे नागरिकों को निकालने में आर.ए.एफ. के जवानों ने बहुत बड़ा योगदान दिया ।
 - दिल्ली और हरियाणा में आयी बाढ़ के दौरान आर.ए.एफ. के कार्मिकों द्वारा दी गयी सेवाओं को बाढ़ प्रभावित नागरिक लंबे समय तक याद रखेंगे ।



आर.ए.एफ. के जवान : किसी भी स्थिति से निबटने के लिए हर पल हर क्षण तैयार

लेखा जोखा
दक्षिण सेक्टर



आई.टी.आई. आवड़ी में इलेक्ट्रीशियन ट्रेड का शुभारंभ करते हुए महानिदेशक श्री त्रिपाठी परिचालनिक नियंत्रण की दृष्टि से दक्षिण सेक्टर बल का सबसे बड़ा सेक्टर है। सम्पूर्ण दक्षिण भारत के अतिरिक्त अंडमान निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह इसके परिचालनिक नियंत्रण में है। जबकि इस सेक्टर की युनिटें देश के लगभग हर हिस्से में तैनात हैं। इस क्षेत्र की युनिटों तथा कार्मिकों ने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। ग्रुप केन्द्र हैदराबाद को गत वर्ष लगातार तीसरी बार सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र की टाफी प्रदान की गई। इस वर्ष इस सेक्टर के कार्मिकों ने दो विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक, 4 सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक तथा 23 महानिदेशक के प्रशंसा डिस्क अर्जित किये।

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से सजग इस बल की युनिटों ने व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया तथा लगभग 1,25,000 पौधे लगाए।

ग्रुप केन्द्र आवड़ी में बल के शहीद कार्मिक की स्मृति में एक स्मारक स्थापित किया गया।

ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी के लिए जवाहर नगर गांव में 165 एकड़ भूमि खरीदने की प्रक्रिया सम्पूर्ण हो चुकी है तथा इस भूमि पर विभिन्न निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो चुके हैं। जवाहर नगर में ही 99 आर.ए.एफ. बटालियन तथा सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के लिए भूमि का अधिग्रहण कर लिया गया है।

ग्रुप केन्द्र येलहंका में भी इस वर्ष कई निर्माण कार्य शुरू किए गए। बैंगलौर में ही फायरिंग रेंज के लिए भूमि का अधिग्रहण किया गया।

कोयम्बतूर जिले के कुरुदाम पालयाम गांव में केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज-II को

स्थापित करने के लिए भूमि का अधिग्रहण कर लिया गया है तथा आवासीय खंडों सहित निर्माण कार्य प्रगति पर है।

ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम में 166 आवासीय खंडों का निर्माण प्रगति पर है।

आर.टी.सी. III के लिए भूमि के अधिग्रहण की प्रक्रिया अंतिम दौर पर है तथा फायरिंग रेंज के लिए भूमि के अधिग्रहण का कार्य भी चल रहा है।

पूरे दक्षिण भारत पर पारिचालनिक नियंत्रण के अतिरिक्त इस सेक्टर की अधिकतर कम्पनियां जम्मू कश्मीर तथा देश के उत्तर पूर्वी भागों में आतंकवाद विरोधी मुहिम में शामिल हैं। इन सभी युनिटों ने अपने अपने क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं।

भारी पारिचालनिक व्यस्तताओं के बावजूद इस सेक्टर ने इस वर्ष अपनी 20 कम्पनियों को रोटेशनल ट्रेनिंग प्रदान की।

इस वर्ष भारोत्तोलन तथा जिमनास्टिक प्रतियोगिताओं के इंटर सेक्टर मुकाबलों की ट्राफी इस सेक्टर ने जीती।

कल्याण के क्षेत्र में भी इस सेक्टर ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान आवड़ी में इलैक्ट्रीशियन ट्रेड प्रारंभ किया गया। ग्रुप केन्द्र बैंगलौर में केन्द्रीय विद्यालय ने अपना काम करना शुरू कर दिया। ग्रुप केन्द्र बैंगलौर में ही एक कल्याण केंद्र क्रेच सुविधा के साथ शुरू किया गया है।

कर्तव्य पर मारे गए जवानों की विधवाओं के लिए भूमि के आवंटन तथा रोजगार के लिए प्रबंध के कार्य स्थानीय प्रशासन के साथ बातचीत के बाद अंतिम दौर में है।

जम्मू कश्मीर

आशा भरे सवेरे की ओर

जम्मू कश्मीर आतंक की काली लम्बी रात के बाद अब क्षितिज पर आशा का प्रकाश बिखेरती गोधूली बेला से गुजर रहा है। वह पल, जब जम्मू कश्मीर में गोलियों की गूंज नहीं पर्यटकों के कहकहे सुनायी देंगे, जम्मू कश्मीर के ही नहीं, अपितु पूरे देश के नागरिकों की आंखों में एक पवित्र सपना बन कर पल रहे हैं। जम्मू कश्मीर को आतंक की इस काली घनी लम्बी रात से खींच कर गोधूली बेला तक सकुशल ले आने में के. रि.पु. बल सहित देश के कई अन्य सुरक्षा बलों के जवानों ने अपनी जान दांव पर लगा दी है। इन जवानों की शहादत और साहस भरे कारनामों का ही परिणाम है कि जम्मू कश्मीर अब तेजी से सामान्य स्थिति की ओर लौट रहा है। वह दिन दूर नहीं, जब जम्मू कश्मीर के नागरिक भी पंजाब की ही भांति एक बार फिर अमन और शांति के साथ धरती के इस स्वर्ग पर स्वच्छंद विचरण कर पाएंगे। ऐसा

होगा, इस स्थिति को बहाल करने के लिए कई सुरक्षा बलों के जवान रात दिन एक कर के स्थिति को बहाल करने में जुटे हैं।

अकेले के.रि.पु. बल के ही जवानों ने इस वर्ष 30 नवंबर, 95 तक घाटी में 267 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। बल के जवानों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों में 16 आतंकवादी मारे गए। तथा बल के जवानों ने 121 घातक हथियार बरामद किए। मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के 10 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 123 गंभीर रूप से घायल हुए।



कश्मीर घाटी में तैनात बल के जवान

अगस्त, 94 में के.रि.पु. बल ने अमरनाथ यात्रा को शांतिपूर्वक सम्पन्न करवा कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। के.रि.पु. बल ने तीर्थयात्रियों को न केवल मार्ग में सुरक्षा प्रदान की, अपितु चंदनबाड़ी में लगभग 50 हजार तीर्थयात्रियों के लिए भोजन, पानी, आवास चिकित्सा तथा अन्य सुविधाओं का प्रबंध भी किया। इस वर्ष भी अमरनाथ यात्रा के दौरान व्यवस्था में के.रि.पु. बल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जिसके चलते अमरनाथ यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुयी।

पंजाब

हालात सामान्य हैं



पंजाब में तैनात बल का एक कार्मिक

हाल ही में पंजाब आतंकवाद के एक खूनी दौर से हो कर गुजरा है। आतंकवादी गतिविधियों ने इस सीमा प्रांत के सामान्य जीवन को तहस नहस कर के रख दिया था। यहां इस तरह के हालात पैदा हो गए थे, जिनसे पूरे देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न हो गया था। लेकिन के.रि.पु. बल सहित देश के अन्य सुरक्षा बलों के जवानों के निरंतर प्रयासों और भारी बलिदानों की कीमत पर स्थिति आज सामान्य है। किंतु इस सामान्य स्थिति को बनाए रखना और यह देखना कि आतंकवादी तत्व फिर अपना सिर न उठाने लगे तथा राज्य के विकास कार्य में गतिरोध उत्पन्न न हो, एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। और इस जिम्मेदारी का निर्वाह के.रि.पु. बल के पंजाब तथा चंडीगढ़ परिचालन सेक्टर का जिम्मा है।

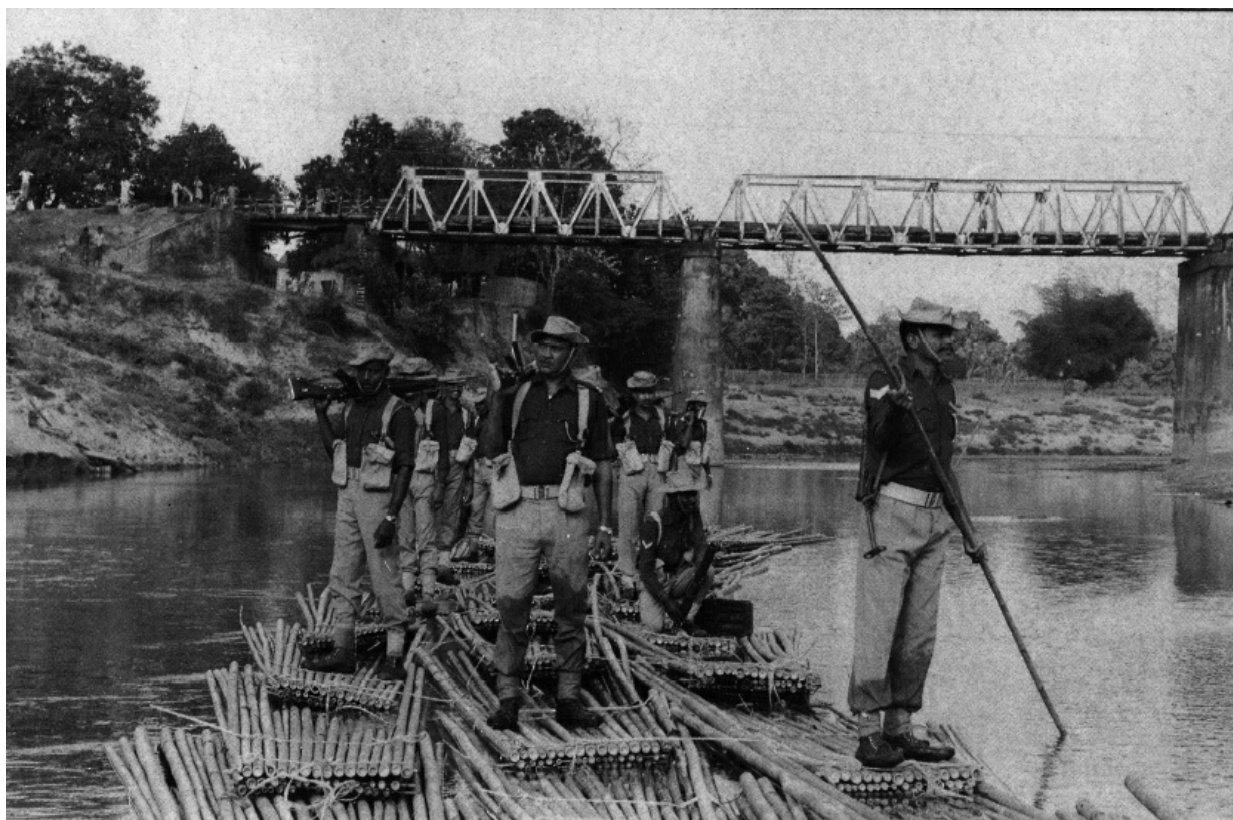
इस सेक्टर के जवानों की सतत कड़ी एवं सजग चौकसी के कारण इस पूरे वर्ष पंजाब पर आतंकवादी गतिविधियों पर लगभग पूरी तरह अंकुश लगा रहा। बचे खुचे आतंकवादियों को पकड़ने तथा कानून व व्यवस्था की स्थिति को बनाए रखने के लिए इस सेक्टर के जवानों ने स्थानीय प्रशासन के सहयोग से कई तलाशी अभियान, कार्डन, छापे तथा नाके लगाए। आंतरिक सुरक्षा प्रबंध के लिए पंजाब से जम्मू कश्मीर, मणिपुर तथा नागालैंड, उड़ीसा और मथुरा के लिए जाने वाली बल की कम्पनियों के लिए इस सेक्टर ने समयबद्ध सुचारू प्रबंध किए। स्पेशल आपरेशन के लिए जरूरी 116 वाहनों की युद्धस्तर पर मरम्मत की गयी।

इस पूरे वर्ष इस सेक्टर के जवान पूरी तरह अनुशासनबद्ध तरीके से अपने कार्य

पर तैनात रहे। कहीं से कोई भी शिकायत पुलिस ज्यादातों या दुर्व्यवहार की प्रकाश में नहीं आयी।

भारी पारिचालनिक व्यस्तताओं के बावजूद इस सेक्टर की युनिटों ने कई खेल मुकाबलों का भी आयोजन किया। कार्मिकों के कल्याण कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी।

उत्तर पूर्व बल की नयी परीक्षा स्थली



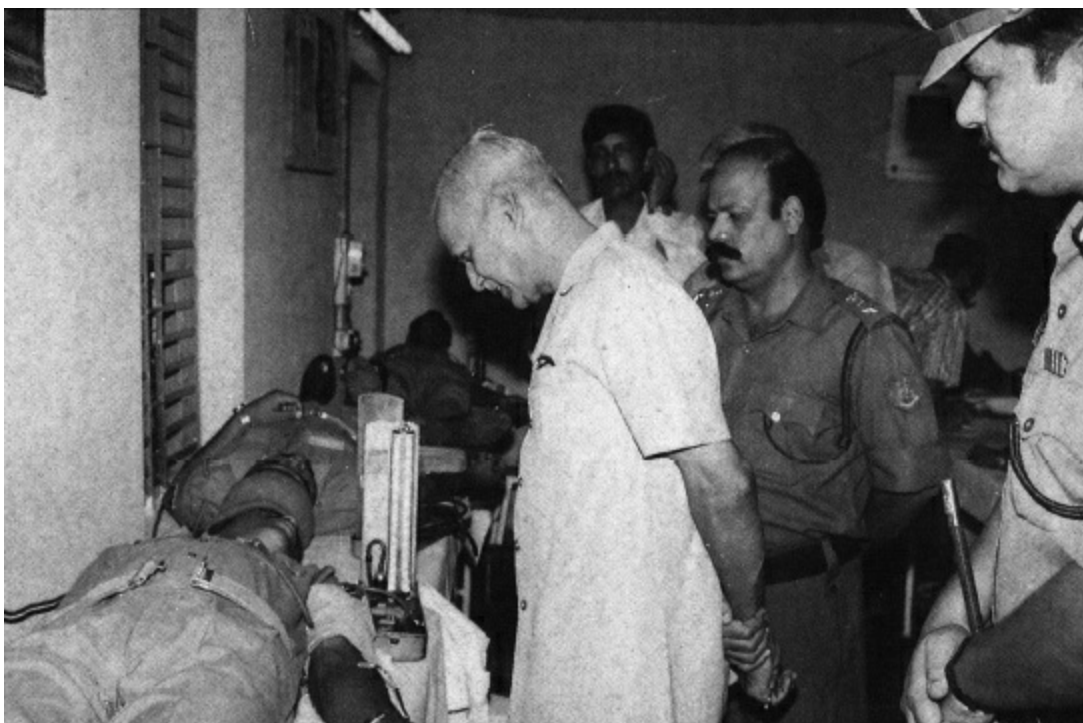
अरुणाचल में बल के सदस्यों की गश्त

एक समय विद्रोह की आग में सुलगते असम एवं उत्तर पूर्वी राज्यों में पूर्ण शांति स्थापित करने का काफी श्रेय के.रि.पु. बल को जाता है। किंतु कुछ सालों के अंतराल के बाद देश के इस भाग में विद्रोहात्मक स्थितियों के एक बार फिर से उभर आने के कारण इन राज्यों में के.रि.पु. बल की व्यस्तता एक बार फिर बढ़ गयी है। वर्तमान में देश के उत्तर पूर्वी भाग में बल की कंपनियां भारी तादात में तैनात हैं।

इस वर्ष के.रि.पु. बल ने उत्तर पूर्व में आतंकवादी गतिविधियों पर काबू बनाए

रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आतंकवाद तथा विद्रोहात्मक स्थितियों के विरुद्ध लड़ते हुए बल के जवानों ने 841 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, जबकि बल के जवानों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों में 29 आतंकवादी मारे गए। यहां बल के जवानों ने 379 घातक हथियार तथा 10253 गोली बारूद भी बरामद किया। लेकिन इन सब गतिविधियों में बल के 39 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 68 गंभीर रूप से घायल।

उत्तरी सेक्टर



रक्तदान में भाग लेते कार्मिकों से बात करते हुए बल के महानिदेशक

उत्तरी सेक्टर की अधिकांश युनिटें उत्तर पूर्व, पंजाब, दिल्ली तथा जम्मू कश्मीर में तैनात हैं। अपने अपने कार्य क्षेत्रों में इन बटालियनों में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं।

इस सेक्टर की अजमेर रेंज ने अपनी युनिटों तथा ग्रुप केंद्रों में इस वर्ष एक व्यापक वृक्षारोपण अभियान के तहत साढ़े नौ हजार से अधिक वृक्ष लगाए।

अपनी युनिटों के कार्मिकों को मानवाधिकारों के विषय में विस्तार से जानकारी देने के लिए कई कोर्स चलाए गए।

1995 में इस रेंज के सात कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक, चार कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक तथा एक कार्मिकों को महानिदेशक की

प्रशंसा डिस्क प्रदान की गयी।

इस रेंज के लगभग 33 खिलाड़ी विभिन्न खेलों की सेक्टर टीम में शामिल हैं। इसी रेंज के 30 खिलाड़ी केंद्रीय खेल टीम में भी शामिल हैं। इस रेंज के तीन खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर के कबड्डी, हाकी तथा ऊंची कूद मुकाबलों में भी हिस्सा लिया।

इस रेंज द्वारा उत्तरी सेक्टर के लिए लगाए गए स्टाल को परिवार कल्याण प्रदर्शनी का सर्वश्रेष्ठ स्टाल घोषित किया गया था। अजमेर के दोनों ग्रुप केंद्रों में विधवाओं के लिए दो दो आवास आरक्षित कर दिए गए हैं। कर्तव्य पर मारे गए कार्मिकों के आश्रितों तथा सेवानिवृत्त कार्मिकों की समस्याओं को हल करने में भी इस रेंज ने उल्लेखनीय प्रयास किए।

इस सेक्टर की नयी दिल्ली रेंज ने दिल्ली में कई इंटर बटालियन खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करने के अतिरिक्त इंटर सेक्टर स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया।

इस सेक्टर को 88 बटालियन की इंस्पेक्टर कुंजारानी विश्व स्तर की भारोत्तोलक है, उसने पुसान (दक्षिण कोरिया) में भारोत्तोलन मुकाबलों में दो स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक, और बीजिंग में हुयी प्रतियोगिता में रजत पदक जीते।

इस सेक्टर के निशाने बाजों ने राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में एक स्वर्ण तथा दो कांस्य पदक जीते।

दिल्ली राज्य जूडो चैंपियनशिप में इसकी दो महिला जुडोकाओं ने एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक प्राप्त किया।

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भी इस सेक्टर की महिलाओं ने एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता।

वर्तमान तथा भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों तथा उनके परिवारों की सुरक्षा में लगा बल का स्पेशल ड्यूटी ग्रुप भी इसी सेक्टर के अंतर्गत कार्य कर रहा है। अपनी इस साल की कार्य अवधि के दौरान इस ड्यूटी ग्रुप ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की।

इस सेक्टर के अंतर्गत कार्य कर रहे नई दिल्ली बेस अस्पताल में इस वर्ष मानसिक रोग विभाग सहित कई आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करायी गयीं। इसी अस्पताल के तत्वाधान में नयी दिल्ली में एक विशाल रक्तदान शिविर भी लगाया गया।

बिहार सेक्टर

इस वर्ष बिहार में शांतिपूर्वक ढंग से सम्पन्न हुए विधान सभा चुनाव के दौरान बिहार सेक्टर की प्रभावी भूमिका उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। कानून व व्यवस्था की दृष्टि से 815 कंपनियों (लगभग एक लाख कार्मिक) की एक राज्य में तैनाती व उनका

संचालन एक दुष्कर कार्य था।

बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद राज्य में इन पुलिस कंपनियों की तैनाती तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने के कार्यों के मुख्य समन्वयक थे। उनके कार्य क्षेत्र में 324 विधान सभा क्षेत्र 82,458 मतदान केंद्र तथा लगभग पौने छः करोड़ मतदाताओं की देखभाल का जिम्मा था। अपनी इस जिम्मेदारी को समझते हुए उन्होंने चुनाव से पूर्व समाज विरोधी तत्वों, नक्सलवादियों तथा मतदान केंद्रों पर कब्जा करने वालों की व्यापक स्तर पर धरपकड़ की। इससे मतदान के लिए न केवल भय रहित माहौल बना, अपितु जनता में सुरक्षा तंत्र के प्रति विश्वास भी उत्पन्न हुआ। जिस कारण इस बार के बिहार चुनावों को सर्वाधिक सफल व निष्पक्ष चुनाव कहा जा रहा है। चुनावों को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न कराने के लिए बल के अभूतपूर्व योगदान पर श्री के.आर.के. प्रसाद को सरकार, नागरिक प्रशासन, बिहार पुलिस महानिदेशक तथा बल के महानिदेशक श्री त्रिपाठी से भरपूर सराहना मिली। अन्य गतिविधियों में इस सेक्टर की पूरे देश में तैनात बटालियनों ने 154 आतंकवादियों तथा 45 चोर डाकुओं को गिरफ्तार किया तथा भारी मात्रा में घातक हथियारों सहित गोली बारूद बरामद किया। इस सेक्टर की युनिटों के कार्मिकों की आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 17 आतंकवादी मारे गए।



विधान सभा चुनाव में एक वृद्ध मतदाता की मदद करता हुआ एक बल का एक जवान खेल के क्षेत्र में निशाने बाजी में इस बटालियन के निशानेबाजों ने पहला स्थान हासिल किया। ज्ञातव्य है कि इस सेक्टर के छःशूटर केंद्रीय टीम में शामिल हैं।

अंतर सेक्टर स्तर के मुकाबलों में इस सेक्टर की टीमों ने जूडो, कबड्डी, तैराकी तथा भारोत्तोलन में दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि कुश्ती में इस सेक्टर को तीसरा और क्रास कंट्री में चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

संक्षिप्त खबरें

आर.ए.एफ. सेक्टर ने दौड़कूद ट्राफी जीती



आर.ए.एफ. को दौड़कूद ट्राफी प्रदान करती हुयीं श्रीमति इंदु त्रिपाठी

03 दिसम्बर, 1995 को नीमच में सम्पन्न हुयी पांचवी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इंटर सेक्टर दौड़कूद प्रतियोगिता में पुरूष वर्ग की ट्राफी रेपिड एक्शन फोर्स (आर.ए.एफ.) ने जीत ली। उत्तर तथा दक्षिण सेक्टर क्रमशः दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे।

महिला वर्ग में 88 महिला बटालियन प्रथम, आर.ए.एफ. (महिला) द्वितीय तथा 135 महिला बटालियन तीसरे स्थान पर रहीं।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी इस समारोह में उपस्थित थे। श्रीमति त्रिपाठी ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

प्रतियोगिता के अंतिम दिन हुए मुकाबलों में आर.ए.एफ. सेक्टर के के. शियोधनन ने 100 मीटर बाधा दौड़ में 14.7 सेकंड का समय ले कर एक नया रिकार्ड स्थापित किया।

आर.ए.एफ. सेक्टर की हैड कांस्टेबल बिमला चक्रवर्ती ने भी 1500 मीटर दौड़ में 5.25.24 मिनट का समय ले कर एक नया मीट रिकार्ड बनाया।

आर.ए.एफ. सेक्टर की ही कांस्टेबल सत्री जोसेफ 400 मीटर दौड़ में 59.3 सेकंड का समय ले कर प्रथम रहीं।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिड्ल ने 30 नवंबर, 95 को किया था।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल केंद्रीय जोखिम निधि से माह नवंबर, 95 में मृत्यु के 58 मामलों में कुल 23,30,000 रुपये देने स्वीकृत किए। इनमें केंद्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के छः मामलों में कुल 90,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके 14 सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुल 4,90,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

62 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह नवंबर, 95 में देश भर में 62 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 6 मुठभेड़ों में एक आतंकवादी मारा गया।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 18 घातक हथियार तथा गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में दो ए.के. 47 रायफलें, दो ए.के. 56 रायफलें, चार पिस्तौलें और अन्य हथियार शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के दो जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा पांच गंभीर रूप से घायल।

उद्गार

अनुभव किया है

मैंने तुम्हें कभी देखा नहीं है,
तेरी छवि को निहारा नहीं है
मेरी आंखों में बस नहीं पाई है
तेरे अनन्त रूप की छाया ।।
तेरी सुगन्ध को मन्दिर में पाया,
तेरे स्वरों को कल कल जन में जाना
तेरी ज्योति को सूर्य में देखा
तेरे शीत को चन्द्र में पाया ।।
अनेक घटनाओं में, अनेक सन्दर्भों में
अनेक स्थितियों में, कठिन परिस्थितियों में

मैंने तेरी कृपा को देखा है
स्पष्ट रूप में तेरा अनुभव किया है ।

डा. कृष्णमोहन माथुर
पुलिस उप महानिरीक्षक
कोहिमा

जीवन यात्रा

कितनी ही दूरियां कितनी बार,
विभिन्न वाहनों में बैठ बैठ कर
इस जीवन यात्रा में पार की हैं
विभिन्न नगरों में, ग्रामों में देशों में ।।
जागा हूं सोया हूं खेला हूं
या अपने कर्तव्यों में व्यस्त रहा हूं ।
कितनी बार विकल संतप्त मन को, हुआ है तेरा अपार अहसास ।।
अनुभव कभी सीलघाट में, कभी नौगांव में,
कभी माउन्ट आबू में, कभी कोहिमा में
कभी इटानगर, कौसा, सिवसागर,
कभी गोहाटी, कभी शिलांग
कभी अजमेर, कभी हैदराबाद,
कभी कश्मीर तो कभी इम्फाल,
ऐजल, लुंगलेह, सिलचर,
रामपुर, फिरोजपुर या अगरताल,
कितने ही जलकूपों का,
जगह जगह पानी पिया,
कितने ही स्थानों पर अकेला
रात में जागता रहा ।।
मेरा घर कहां है किस ओर
मैं बार बार भूल जाता हूं ।
याद भी कभी कभी करता हूं घर की,
अपने प्रियतम की, अपने इष्टदेव की

अपने कुलदेव कौ, अपने आत्मइष्ट कौ ।
मैं क्या अपनी अस्मिता को पहचानता हूं
क्या मैं अपने जीवन के वास्तविक तत्व को गहचानता हूं ।
क्या मुझे आभास हुआ है, दिव्य ज्योति का पुण्य प्रकाश
क्या मैंने देखा है अपने अन्तर का निर्मम प्रकाश । ।

डा. कृष्ण मोहन माथुर
पुलिस उप महानिरीक्षक कोहिमा

रात्रि प्रहरी

चारों ओर अन्धकार, दूर दूर तक,
नगर की बिजली चली गई ।
रात्रि के धुप अंधेरे में
मैं अकेला जागता हूं
सुनता हूं बहते पानी की
कल कल ध्वनि बहुत दूर
कभी याद आती हैं
घर गांव की बातें
कभी टीस देती हैं
प्यार की स्मृतियां । ।
मेरे भीतर से सैकड़ों घुसपैठिये
आग लगाते हुए गुजर जाते हैं ।
पर उसी में, मैं अन्धकार में
अकेले एक जिन्दगी जीता हूं । ।
मैं आज नाम हीनों की
जिन्दगी जीता हूं दूर अकेला
संकल्प से बंधे, सामर्थ्य से भरे
कर्तव्य से घिरे, हम केन्द्रीय प्रहरी । ।

डा. कृष्णमोहन माथुर
पुलिस उप महानिरीक्षक, कोहिमा

के.रि.पु. बल का नीला झंडा

के.रि.पु. बल का नीला झंडा, अम्बर में नित फहराता है,
फहर फहर कर नीलाम्बर से, प्रेम सुधा नित बरसाता है ।
के.रि.पु. बल का नीला ध्वज हमें अनुशासन सिखलाता है,
स्वर्णिम परम्परा से जग में, अमन-शान्ति यह लाता है ।
इस ध्वज के बल निर्भय होकर प्रहरी दुर्गम पथ जाते हैं,
ध्वज-शक्ति से वीर बांकूरे, गीत स्वतंत्रता के गाते हैं ।
संकट-विकट घड़ी में प्रतिपल, साहस यही दिलाता है,
शान्ति-सुरक्षा, सेवा-भक्ति का, अनुपम पाठ पढ़ाता है ।
के.रि.पु.बल का नीला झंडा, बसुधा के मन भीतर है,
जन-मानस की सेवा करके, मन ही मन इठलाता है ।
शान्ति दुर्ग की बलिवेदी पर, चढ़ना यही बताता है,
मातृभूमि-हित तन-मन-धन, अर्पण करना सिखलाता है ।
के.रि.पु.बल का नीला झंडा, प्रहरी को शपथ दिलाता है,
देश की आजादी के हित में, मरना हमें बताता है ।
अतुल शक्ति का यह प्रतीक, आदर्श पाठ पढ़ाता है,
ममता माया के बंधन से, प्रहरी को दूर ले जाता है ।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, इसाई, सब को गले लगाता है,
जाति-धर्म का भेद मिटा कर सबको सखा बनाता है ।
के.रि.पु.बल का नीला झंडा, कर्म ज्योति बिखराता है,
प्रहरी “प्रभात” की अभिलाषा को, मंजिल तक ले जाता है ।

हंसराज ओझा “प्रभात”
उप निरीक्षक (लि.)
63 बटालियन, केरिपुबल

जननी जन्म भूमि

हे जननी जन्मभूमि भारत मां को के.रि.पु. बल का नमस्कार हो ।
आप पर छाये उग्रवाद, कुकर्म पाप का, अंधकार के बादलों का नाश हो । ।

रहे हमेशा आपकी रक्षा के लिए तट पर, के.रि.पु. बल का साहस हो ।

दे वरदान माता हर के.रि.पु. बल के जवान में देश भाक्ते का भंडार हो
अटल हिमालय की क्या गिनती है, आंधी और तूफानों से बल का हर जवान अपने
कर्तव्य पर हर पहलु पर रहे स्तम्भ से ।।

हे मातृभूमि न ही असर है आंधी पानी और तूफानों का इस बल पर ।
हर दम निरन्तर रहता है अपने, धर्म निष्ठ कर्तव्य पालन पर ।।

हे मातृभूमि तेरी हरी मखमल चादर पर टिका बल का बेड़ा महान है ।
नीले अम्बर के नीचे इस बल पताका फहरा, उसमें देश तिरंगा चक्र महान है ।।

जननी जन्मभूमि तेरी रक्षा के लिए बल के कितने वीरों ने अपने प्राण दिये ।
के.रि.पु.बल के नौजवानों ने हंसते हंसते घर, परिवार, माता पिता, बच्चे छोड़ दिये
हे मातृभूमि दे वरदान आगे भी के.रि.पु.बल के नौजवानों को ।
जो निकले तेरी सेवा भक्ति करने को, पाये हमेशा यश गौरव को ।।

हे के.रि.पु.बल यश गौरव गाथा वायुमंडल में गूंजती महान है ।
आपको इस प्रार्थी का कोटी, कोटी, कोटी प्रणाम है ।।

उ.नि. रामस्वरूप
डी/33 बटा.



ग्रुप केंद्र आवड़ी में बल के शहीद कार्मिकों की स्मृति में इस वर्ष एक स्मारक स्थापित किया गया

रजि नं. 4767/87



रेपिड एक्शन फोर्स की तीसरी वर्षगांठ परेड का निरीक्षण करते हुए मुख्य अतिथि गृह राज्य मंत्री प्रो.एम. कामसन